ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित

www.rastriyanaveenmail.com • डालटनगंज • आषाढ़ शुक्ल पक्ष 07 • विक्रम संवत 2080 • रविवार, 25 जून 2023 • वर्ष-29 • अंक-249 • पृष्ठ-12 • मूल्य ₹ 2.00

कंगना रनौत की फिल्म 'इमरजेंसी' की... पेज 10 पर

NEWS इन ब्रीफ

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सीए नीरज मित्तल को भेजा गया जेल

रांची। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने टेंडर मैनेज करने के लिए कमीशन लेने और करोड़ों रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में नीरज मित्तल को गिरफ्तार किया है। ईडी ने गिरफ्तार करने के बाद शनिवार को मित्तल को रांची के ईडी के विशेष न्यायालय में पेश किया, जहां से अदालत ने नीरज को 14 दिनों के न्यायिक हिरासत में बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार (जेल) भेज दिया। नीरज की पेशी ईडी के इंचार्ज कोर्ट में विशेष न्यायाधीश प्रकाश झा की अदालत में हुई। उल्लेखनीय है कि नीरज मित्तल चार्टर्ड एकाउंटेंट है। उसपर जेल में बंद निलंबित अभियंता वीरेंद्र राम के पैसों के निवेश में सहायता करने का आरोप है। साथ ही कमीशन एजेंट के रूप में काम करने का भी आरोप है। बताया गया कि ईडी ने उसे दिल्ली से शुक्रवार को गिरफ्तार किया था।

राज्य की सभी कोर्ट में 26 से डे कोर्ट में होगी सुनवाई

रांची। राज्य के सभी जिले के कोर्ट का समय 26 जून से बदल जायेगा। झारखंड हाई कोर्ट ने शनिवार को पत्र जारी कर डे कोर्ट में सुनवाई शुरू करने की सूचना जारी कर दी है। डे कोर्ट में अदालत के कामकाज का समय सुबह 10:30 से लेकर शाम के पांच बजे तक निर्धारित किया गया है। फिलहाल झारखंड की निचली अदालतों में मॉर्निंग कोर्ट में सुनवाई हो रही थी। रांची सिविल कोर्ट सहित झारखंड के सभी जिला न्यायालयों में पांच अप्रैल से मॉर्निंग कोर्ट में मुकदमों की सुनवाई हो रही थी, जो अब डे कोर्ट में होगी।

पश्चिमी सिंहभूम में आईईडी बम बरामद

पश्चिमी सिंहभूम। जिले के तुम्बाहाका एवं सरजोमबुरु में नक्सलियों ने पुलिस को नुकसान पहुंचाने के लिए रास्ते में आईईडी बम और स्पाइक होल लगाया था, जिसे सर्च अभियान के दौरान सुरक्षाबलों ने बरामद कर जंगल में नष्ट कर दिया। इसके बाद सुरक्षा बल के जवानों ने सरजोमबुरु गांव में एक कैंप लगाकर ग्रामीणों का साथ भोजन किया।ग्रामीणों ने पुलिस को बताया कि गांव में कुछ लोग बीमार हैं। इसके बाद सुरक्षा बल के जवानों ने एक कैंप लगाकर बीमार लोगों का जांच उपरांत दवा मुहैया कराया गया। जांच के उपरांत गांव में दो बच्चे मलेरिया से पीड़ित मिलने पर उनका इलाज किया गया। इस अभियान में चाईबासा पुलिस, सीआरपीएफ ,झारखंड जगुआर, एवं कोबरा बटालियन के जवान शामिल थे।

मानवाधिकार आयोग में अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति की अधिसूचना जारी

रांची। झारखंड के मानवाधिकार आयोग में एक अध्यक्ष और दो सदस्यों की नियुक्ति होगी।इसको लेकर गृह कारा आपदा प्रबंधन विभाग ने अधिसूचना जारी की है। जारी अधिसूचना में कहा गया है कि झारखंड मानवाधिकार आयोग में अध्यक्ष के एक रिक्त पद और सदस्य के दो रिक्त पदों पर नियुक्ति के लिए हाई कोर्ट के रिटायर चीफ जस्टिस, हाई कोर्ट के रिटायर या कार्यरत जज के अलावा कार्यरत रिटायर जिला जज (जिनके पास सात साल का जिला न्यायाधीश के रूप में प्राप्त योग्यता है) आवेदन कर सकते हैं। उल्लेखनीय है कि झारखंड के लोगों के मानवाधिकारों की रक्षा और न्याय दिलाने के लिए राज्य मानवाधिकार आयोग का गठन 17 जनवरी, 2011 को किया गया था।

हाई कोर्ट ने फॉरेस्ट लैंड की गैरमजरूआ जमीन की

खरीद-बिक्री के मामले में मांगी स्टेटस रिपोर्ट

नवीन मेल संवाददाता

रांची। झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में शनिवार को बोकारो में फॉरेस्ट लैंड की गैरमजरूआ जमीन की फर्जी दस्तावेज के आधार पर खरीद-बिक्री की जांच का आग्रह करने वाली पंकज यादव की जनहित याचिका की सुनवाई हुई। मामले में कोर्ट ने इससे संबंधित दर्ज एफआईआर की स्टेटस रिपोर्ट राज्य सरकार से मांगी है। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता राजीव कुमार ने बताया कि बोकारो में फॉरेस्ट लैंड जो गैरमजरूआ जमीन थी, उसे कुछ लोगों ने फर्जी दस्तावेज के आधार पर खरीद बिक्री की। इस मामले को लेकर वर्ष 2016 में प्राथमिकी हुई थी लेकिन अब तक इस पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। इस पर कोर्ट ने राज्य सरकार से मामले के दोषियों के खिलाफ की गई कार्रवाई के संबंध में अद्यतन जानकारी मांगी है।

लाइफ लाइन कोयल नदी में आया बरसात का पहला पानी

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। जिले की लाइफ लाइन कोयल नदी में बरसात का पहला पानी शनिवार की शाम आया। करीब दो महीने से सूखी नदी के कुछ हिस्से पानी से भर गए हैं। इससे खासकर नदी किनारे के इलाके का जलस्तर ऊपर आएगा। कोयल नदी के सूख जाने के कारण नदी से सटे इलाकों का जलस्तर काफी नीचे चला गया है और पेयजल संकट बना हुआ है। जिले के ऊपरी हिस्से में बारिश होने के कारण कोयल नदी में बरसात का पहला पानी आया। जैसे ही इसकी जानकारी कोयल नदी के आसपास रहने वाले लोगों को हुई वे उत्सुकतावस कोयल नदी की ओर चल पड़े। उन्होंने नदी में पानी देखकर काफी प्रसन्नता व्यक्त की। हालांकि सुखी कोयल नदी के लिए आया पानी ऊंट के मुंह में जीरा के समान है। इधर, मौसम विभाग ने जानकारी दी है कि 25 जून से पलामू इलाके में भी अच्छी बारिश की संभावना है। अगर अच्छी बारिश होती है तो कोयल नदी का जलस्तर बढ़ जाएगा और पेयजल संकट से काफी हद तक निदान हो जाएगा। कोयल नदी के पानी पर ही नगर निगम क्षेत्र की जलापूर्ति व्यवस्था निर्भर करती है।

रांची-पटना के बीच 27 जून से चलेगी वंदे भारत ट्रेन

रांची। पटना और रांची के बीच अत्याधुनिक एवं विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त हाई स्पीड 'वंदे भारत ट्रेन' का परिचालन प्रारंभ किया जा रहा है। पूर्व मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी वीरेंद्र कुमार ने बताया कि 27 जून को रांची से पटना के लिए 'वंदे भारत ट्रेन' का परिचालन उद्घाटन स्पेशल ट्रेन 02439 के रूप में किया जायेगा। 28 जून से ट्रेन सं. 22349 और 22350 पटना-रांची-पटना 'वंदे भारत ट्रेन' का नियमित परिचालन किया जाएगा। ट्रेन पटना और रांची से मंगलवार को छोड़कर सप्ताह में 6 दिन चलेगी। उन्होंने बताया कि 27 जून को ट्रेन संख्या 02439 रांची-पटना 'वंदे भारत उद्घाटन स्पेशल' रांची से सुबह 10.30 बजे खुलकर मेसरा, बरकाकाना, चरही, गया, जहानाबाद होते हुए शाम को 5.25 बजे पटना जंक्शन पहुंचेगी। 28 जून से 22349 'पटना-रांची वंदे भारत ट्रेन' पटना से सुबह 7 बजे खुलकर, 8.25 बजे गया, 9.35 बजे कोडरमा, 10.33 बजे हजारीबाग, 11.35 बजे बरकाकाना, 12.20 बजे मेसरा रूकते हुए 13.00 बजे रांची पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन सं. 22350 'रांची-पटना वंदे भारत' रांची से अपराह्न 4.15 बजे खुलकर 4.35 बजे मेसरा, 5.30 बजे बरकाकाना, 6.30 बजे हजारीबाग, 7.30 बजे कोडरमा, 8.45 बजे गया रूकते हुए रात 10.05 बजे पटना जंक्शन पहुंचेगी।

सरकार का लक्ष्य हर बेघर का हो अपना घर

राज्यपाल ने किया लोक संवाद

गोड्डा। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन आज गोड्डा जिले के सुन्दरपहाड़ी प्रखंड पहुंचे तथा यहां फुटबॉल मैदान में 'लोक संवाद कार्यक्रम' में हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि उन्हें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 50 हजार से अधिक घरों का निर्माण किया जा चुका है। एक महिला ने बताया कि पक्का मकान मिल जाने से बहुत खुशी हो रही है और अब मौसम की मार नहीं झेलनी पड़ती है, इस पर राज्यपाल ने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि प्रत्येक बेघर का अपना घर हो। सिर्फ घर ही नहीं, घर के साथ उन्हें पेयजल भी उपलब्ध हो। ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

राज्यपाल ने देवघर जिले के ठाढ़ियारा पंचायत भवन में किया लोक संवाद

देवघर। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने शनिवार को जिले के मोहनपुर प्रखण्ड अंतर्गत ठाढ़ियारा पंचायत भवन में लोक संवाद किया। उन्होंने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक जिला में लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) को बढ़ावा दिए जाने से लोगों को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे, उनका जीवन स्तर आगे बढ़ेगा। साथ ही कहा कि सरकार ने उज्ज्वला योजना के तहत फ्री कुकिंग गैस कनेक्शन दिया गया है।

चपरासी का बेटा बना 2 एण्ड टॉपर, सीएम ने सौंपा नियुक्ति पत्र

पलामू के बेटे पीयूष ने सफलता का श्रेय माता व पिता को दिया

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। राजधानी रांची के मोराबादी मैदान में आयोजित नियुक्ति पत्र वितरण समारोह में मुख्यमंत्री ने झारखंड कर्मचारी चयन आयोग द्वारा इंटरमीडिएट स्तर पर संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा 2017 के 2550 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किया। जिसमे पंचायत सचिव के कुल 1633 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र दिया। वहीं पलामू जिला से 97 अभ्यर्थी को नियुक्ति पत्र मिला। जिसमें पलामू के पीयूष कुमार तिवारी जिले में पहला स्थान और राज्य में दूसरा स्थान लाने वाले बने का नाम दूसरे स्थान लाने वाले अभ्यर्थी हुए। पलामू जिले के उंटारी प्रखंड के कुटमू ग्राम निवासी प्रमोद तिवारी के पुत्र पीयूष कुमार तिवारी ने बताया कि उनके सफलता का श्रेय माता पिता को जाता है। उन्होंने बताया की उनकी प्रारंभिक पढ़ाई जिला मुख्यालय से शुरू हुई। इसके बाद उन्होंने सीबीएससी से मैट्रिक पास किया था और इंटर जैक बोर्ड से पास 70 प्रतिशत के साथ सफल हुआ। इसके बाद से राजधानी पर जनरल कंपटीशन की तैयारी शुरू किया।4 साल तक रांची में तैयारी के दौरान पंचायत सचिव की बहाली 2017 में आई थी और इसकी परीक्षा 2018 में शामिल हुए। रेलवे टेक्नीशियन की परीक्षा 2019 में शामिल हुए। दोनो परीक्षा में सफल हुए। आज रेलवे में टेक्नीशियन के पद पर 2020 से कार्यरत हैं। पंचायत सचिव के पद पर नियुक्त पत्र प्राप्त कर बेहद खुश है। प्रकाशित रिजल्ट में राज्य ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

हाई कोर्ट ने अंकिता के परिजनों से मिली, आर्थिक मदद की मांगी जानकारी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में शनिवार को दुमका में बीते साल 23 अगस्त को हुए पेट्रोल कांड में नाबालिग छात्रा अंकिता की हत्या कर दिए जाने के मामले में सुनवाई हुई। मामले में एमिकस क्यूरी रमित सत्येंद्र की ओर से कोर्ट को जानकारी दी गई कि राज्य सरकार ने विक्टिम फैमिली को अब तक की सहायता के रूप में 10 लाख रुपये की आर्थिक मदद की है। इस पर कोर्ट ने अगली सुनवाई में एमिकस क्यूरी को यह बताने को कहा है कि मृतक लड़की के परिजनों को और क्या-क्या बेनिफिट दी गई है, इसकी जानकारी दी जाए। मामले में केंद्र सरकार की ओर से स्टेटस रिपोर्ट दाखिल नहीं किया जा सका जबकि पिछली सुनवाई में कोर्ट ने केंद्र सरकार से पूछा था कि देवघर, एम्स में बर्न वार्ड कब तक स्थापित हो जायेगा। पिछली सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से शपथ पत्र दाखिल कर बताया गया था कि मामले में दो आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल हो चुका है, ट्रायल जारी है। यह भी बताया कि राज्य सरकार ने विक्टिम फैमिली को 10 लाख रुपये दिया है। केंद्र सरकार एवं एम्स, देवघर के अधिवक्ता प्रशांत पल्लव ने कोर्ट को बताया था कि लोकल एमपी ने भी अपने स्तर पर पीड़ित फैमिली के लिए 28 लाख का फंड जमा किया है।

कांस्टेबल पंकज की हत्या मामले में तीन गिरफ्तार

प्रेस प्रसंग बना हत्या का कारण • प्रेस वार्ता में एसपी ने दी जानकारी

नवीन मेल संवाददाता

रामगढ़। मृतक कांस्टेबल की हत्या मामले में पुलिस ने मृतक की पत्नी, उसके प्रेमी और एक अन्य सहयोगी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है । मामला भुरकुंडा ओपी क्षेत्र के सयाल 10 नंबर खदान के निकट उरीमारी ओपी में पदस्थापित कॉन्स्टेबल पंकज कुमार दास की हत्या का है। शुक्रवर की रात ड्यूटी से बाइक पर घर लौटने दौरान कांस्टेबल पंकज कुमार दास पिता धीरज राम, सांकुल निवासी की हत्या गोली मारकर कर दी गई। शनिवार को प्रेस वार्ता में इसकी जानकारी देते हुए एसपी पीयूष पांडेय ने बताया कि कांस्टेबल पंकज कुमार दास पिता धीरज राम की शुक्रवार की राम बीती रात हुई हत्या मामले में एसडीपीओ के नेतृत्व में टीम का गठन कर जांच आरंभ की गई। इस जांच के दौरान पुलिस मृतक के घर पहुंची। एसपी ने बताया की उस समय नैना देवी घर से भागने की तैयारी में थी। पुलिस ने मृतक की पत्नी नैना देवी को गिरफ्तार कर लिया और उससे पूछताछ की। ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

आयोजन

मेले की सुरक्षा में मुस्तैद रहेंगे 8640 जवान

देवघर श्रावणी मेला की तैयारियां जोरों पर

50 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के पहुंचने का अनुमान

देवघर। देवघर श्रावणी मेला की तैयारियां जोरों पर हैं। करीब दो माह तक चलने वाले इस मेले में हाईटेक तकनीक के साथ 8640 हजार जवानों को सुरक्षा के लिए तैनात किया जायेगा। चार जुलाई से शुरू हो रहे मेले में 50 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के देवघर पहुंचने का अनुमान है।

मेले में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के लिए प्रतिनियुक्त पुलिस पदाधिकारी और जवानों को दो महीने तक के लिए तैनात किया गया है। इनमें इंस्पेक्टर 120, एसआई और एएसआई 726, सशस्त्र हवलदार और आरक्षी 1080, लाठी हवलदार आरक्षी 6200, महिला लाठी बल 514, एसाल्ट ग्रुप दो, बम निरोधक दस्ता दो, आंशु गैस दस्ता दो एटीएस हिट टीम दो और श्वान दस्ता दो टीम रहेगी। साथ ही सीआईडी और विशेष शाखा के जवान भी तैनात रहेंगे।

पुलिस मुख्यालय श्रावणी मेले को लेकर तैयारियां युद्ध स्तर कर रहा है। मेले में इस बार 8640 हजार सुरक्षाबलों की तैनाती होगी। राज्य के विभिन्न जिलों में तैनात जवानों के अलावा जैप और प्रशिक्षण केंद्र में तैनात जवानों को प्रतिनियुक्त किया जायेगा। यह प्रतिनियुक्ति 30 जून से एक सितंबर तक के लिए होगी। शहर के विभिन्न स्थानों में अस्थाई कंट्रोल रूम भी बनाए जा रहे हैं, जहां से पूरे शहर में लगे सीसीटीवी की मॉनिटरिंग की जाएगी। अधिक भीड़ वाली जगहों पर ड्रोन कैमरे से निगरानी की जाएगी। पुलिस के जवानों के अलावा रैफ, एनडीआरएफ के साथ साथ झारखंड जगुआर के बीडीएस टीम को भी तैनात किया जाएगा।

2030 तक भारत में 26 अरब डॉलर का निवेश करेगा अमेजन

वाशिंगटन। ई-कॉमर्स दिग्गज अमेजन के सीईओ एंडी जेसी ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात के बाद कहा कि कंपनी 2030 तक भारत में 26 अरब डॉलर का निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध है। अमेजन ने अब तक भारत में लगभग 11 बिलियन डॉलर का निवेश किया है और 2030 तक लगभग 15 बिलियन डॉलर और निवेश करने की योजना है।

जेसी ने शुक्रवार को अमेरिका में पीएम मोदी से मुलाकात के बाद ट्वीट किया, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ बैठक अच्छी रही। इस दौरान 2030 तक भारत में 26 अरब डॉलर का निवेश करने की अमेजन की प्रतिबद्धता पर चर्चा हुई।

अमेजन के सीईओ ने कहा, एक साथ काम करते हुए, हम स्टार्टअप का समर्थन करेंगे, नौकरियां देंगे, निर्यात को सक्षम करेंगे और व्यक्तियों और छोटे व्यवसायों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए सशक्त बनाएंगे।

भारत अमेजन के लिए एक प्रमुख बाजार है, जहां उसने पिछले दशक में ई-कॉमर्स में 6.5 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया है।

इस साल मई में, ई-कॉमर्स दिग्गज अमेजन की क्लाउड आर्म अमेजन वेब सर्विसेज (एडब्ल्यूएस) ने देश में क्लाउड सर्विस के लिए बढ़ती कस्टमर की मांग को पूरा करने के लिए 2030 तक भारत में क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर में 1,05,600 करोड़ रुपये (12.7 बिलियन डॉलर) का निवेश करने की योजना की घोषणा की।

इस निवेश से 2030 तक भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 1,94,700 करोड़ रुपये (23.3 बिलियन डॉलर) का योगदान होने का अनुमान है।

बिल जमा होने के बाद भी काटा बिजली कनेक्शन, केस भी कराया दर्ज

नवीन मेल संवाददाता

हरिहरगंज। शहरी क्षेत्र के बेलौदर निवासी मनोज कुमार सिंह तथा थाना के समीप स्थित विजय सिन्हा का घर का कनेक्शन विद्युत विभाग के कथित विद्युत कार्यपालक अभियंता बताकर बिजली कनेक्शन काट दिया गया है। साथ ही मीटर बायपास कर विद्युत चोरी करने का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी भी दर्ज करायी है। उधर मनोज कुमार सिंह तथा विजय सिन्हा का कहना है कि वर्षों से विभाग द्वारा कनेक्शन लेकर बिजली का उपयोग करते आ रहा हूँ। जिसका नियमित बिल भुगतान भी करता हूँ। इसके बावजूद कथित विद्युत कार्यपालक अभियंता बताकर कनेक्शन काटते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई गयी है। जबकि कार्यपालक अभियंता रामगोपाल राम उपस्थित नही थें।

जबकि एक विद्युत कर्मी अपने आप को कार्यपालक अभियंता बताते हुए वगैर नोटिश दिए हुए घर का बिजली कनेक्शन काट दिया। यह सारा घटना क्रम सीसीटीवी कैमरे में कैद है। बिजली चोरी का आरोप लगाते हुए केस दर्ज किया गया है। जिससे वे और उनके परिवार काफी आहत है। वहीं बिजली पानी के अभाव में अंधेरे में रहने को विवश है। वहीं भुक्तभोगीयों ने थाना में जाकर झूठे मुकदमे की जांच कराने की मांग की है। साथ ही जालसाजी करने वाले विद्युत कर्मियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है। वही इस संबंध में भुक्तभोगीयों ने बताया कि बगैर जांच पड़ताल किये हुए कनेक्शन काटकर केस दर्ज करने के कई मामले सामने आए हैं। उन्होंने विभाग से कथित विद्युत कर्मियों पर कार्रवाई की मांग की है।

NEWS इन ब्रीफ

पाटन बीजेपी मंडल अध्यक्ष ने की प्रेस विज्ञप्ति जारी

पाटन। भाजपा मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष गोपाल राम के झूठे बयानबाजी का खंडन करते हुए पाटन मंडल अध्यक्ष संजय सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि गोपाल राम पार्टी मंडल अध्यक्ष कभी नहीं रहे हैं।वे पूर्व में मंडल उपाध्यक्ष रहे हैं।लेकिन वर्तमान में पार्टी से अनुशासन हीनता के आरोप में निष्कासित हैं।पूर्व में भी गोपाल राम को पार्टी की नीति और सिद्धांत से हटकर काम करने पर नोटिस जारी किया था,लेकिन गोपाल द्वारा कोई जवाब नहीं दिया गया था। मंडल अध्यक्ष ने गोपाल राम द्वारा विधायक मद की राशि से क्रियान्वित योजना में जेई द्वारा पीसी मांगने के आरोप का खंडन करते हुए कहा कि गोपाल राम विधायक के जनाधार से विचलित होकर अनाप-शनाप बयानबाजी दे रहें हैं,जो बिल्कुल निराधार है। मंडल अध्यक्ष ने कहा कि बिना कोई ठोस सबूत के विधायक व पूर्व सांसद पर आरोप लगाना विवेकहीनता को दशार्ता है। मंडल अध्यक्ष ने कहा कि विधायक की बढ़ती लोकप्रियता को देखकर विरोधी हताश हैं। इसलिए विधायक के प्रति क्षेत्र में गलत अफवाह फैलायी जा रही है।

विद्युत तार की चपेट में आने से व्यक्ति की हुई मौत

पाटन। प्रखंड के नावाजयपुर थाना अंतर्गत महुलिया पंचायत के महुलिया निवासी तेजामुल खलीफा उम्र 40 वर्ष पिता बिगन खलीफा को 11 हजार विद्युत तार के चपेट में आने से मौत हो गई । बताया जाता है कि घर के पीछे 11 हजार विद्युत तार की क्षतिग्रस्त पोल है उसी पोल के बगल से अपने घर की गाय लेकर आने के क्रम में पोल से संपर्क होते ही अचानक गिर पड़े , उनकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

लू लगने से किसान का निधन

हुसैनाबाद। पलामू जिले के हैदरनगर प्रखंड के परता गांव निवासी प्रतिष्ठित किसान सह ग्रामीण चिकित्सक लालू पांडेय का निधन लू लगने से हो गया। लालू पांडेय अपने पंचायत सहित हैदरनगर व मोहम्मदगंज प्रखंड के प्रतिष्ठित किसान के रूप में जाने जाते थे। शुक्रवार को उनकी अचानक लू लगने से तबियत बिगड़ गई। परिजनों ने आनन फानन में हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल पहुंचाया। जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए मेदिनीनगर मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। किंतु उनकी मौत रास्ते में ही हो गई। लालू पांडेय अपने दो पुत्र पंचानंद पांडेय व रामानंद पांडेय उर्फ गुड्डू सहित भरा पुरा परिवार छोड़ गये हैं। वे काफी सालीन व मृदुभाषी थे। वे अपने जीवनकाल में बराबर गरीबों की सेवा के साथ साथ मुफ्त में चिकित्सा प्रमर्श देते रहते थे।

घासीदाग की विमल को सीएम ने दिया नियुक्ति पत्र

नवीन मेल संवाददाता

विश्रामपुर। प्रखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत घासीदाग के रहने वाली विमल कुमारी पिता - रामपती पाल माता- उर्मिला देवी ने पंचायत सचिवालय परीक्षा सफल होने के बाद 22 जून को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के हाथो नियुक्ति पत्र प्राप्त किया। विमल कुमारी ने बताया कि लंबे समय से संघर्ष और माता - पिता की आशिर्वाद और भाई की मदद से सफलता प्राप्त हुआ। उन्होंने बताया कि इससे पहले वो बोकारो में कार्यरत थी। मालूम हो कि विमल कुमारी साधारण परिवार से ताल्लुक रखती है। उनके दो भाई और एक बहन है, छोटा भाई

दिल्ली में इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं और साथ में सिविल सर्विस की तैयारी करते हैं । विमल कुमारी सफलता का श्रेय माता पिता और भाई को देती है। उन्होंने कहा कि मान लिया तो जीत है नही तो हार है।

बसपा विधायक की माता का अंतिम संस्कार

विश्रामपुर। उत्तर प्रदेश के बसपा विधायक उमाशंकर सिंह की मां का पिछले दिनों निधन हो गया था। जिनका अंतिम संस्कार विधायक उमाशंकर सिंह के यूपी स्थित पैतृक गांव रसड़ा से हुआ। जिसमे वरीय बसपा नेता सह समाजसेवी अभिमन्यु सिंह उर्फ बबलू सिंह भी शामिल हुए। उन्होंने शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया। अभिमन्यु सिंह ने विधायक के मां के चित्र पर श्रद्धा सुमन भी अर्पित किया। मौके पर युवा बसपा नेता राहुल दुबे सहित कई लोग मौजूद थे।

ज्ञान दिवस के रूप में मनी मातेश्वरी जगदंबा की 58वीं पुण्यतिथि

ज्ञान योग की श्रेष्ठ धारणा करने के कारण उनको 'मम्मा' और 'यज्ञ माता' के नाम से संबोधित किया गया

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सद्भावना भवन, जपला सेवा केंद्र पर 'ज्ञान और शक्तियों की चैतन्य अवतार मातेश्वरी जगदंबा सरस्वती' जी का 58 वां पुण्य स्मृति दिवस 'आध्यात्मिक ज्ञान दिवस' के रूप में मनाया गया। इस दौरान मातेश्वरी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बी.के नीलम दीदी ने बताया कि उनका जन्म सन 1919 को अमृतसर में एक सामान्य परिवार में हुआ था। आध्यात्मिक पुरुषार्थ और साधना के लिए त्याग, तपस्या और आत्म अनुभूति के द्वारा समस्त मानव

के जीवन को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने का मार्ग चुना और पुरुष प्रधान समाज में सन 1936 में अपना जीवन ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित किया। ज्ञान योग की श्रेष्ठ धारणा करने के कारण उनको 'मम्मा' और 'यज्ञ माता' के नाम से संबोधित किया गया, जिससे उनके व्यक्तित्व में दिव्य महा परिवर्तन हुआ। बीके नीरज ने बताया कि मातेश्वरी जगदम्बा ने सदा निराकार ज्योति बिंदु स्वरुप परमात्मा शिव द्वारा अपने साकार मानवीय माध्यम पिताश्री के माध्यम से दिये गये 'श्रीमत' का तत्क्षण पालन किया। मातेश्वरी द्वारा सिखाये गये कर्म-साधना के पथ पर चलते हुए राजयोग की साधना द्वारा रुद्र यज्ञ रक्षक, आज्ञाकारी और निरहंकारी बन मानवता की सेवा करते रहे, यही सच्ची श्रद्धांजलि है। बीके कुसुम ने मातेश्वरी के शक्ति स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा कि मात्र 14 वर्ष की आयु में मम्मा ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित किया, उनकी निर्भयता, वात्सल्य, मातृत्व, त्याग, तपस्या और समर्पण के कारण उनका दिव्य स्वरूप को जो भी देखता देवी स्वरूप ही दिखाई देता और माँ कहकर ही पुकारता। उन्होंने कहा कि मम्मा के जीवन की दिव्यता से प्रेरणा लेकर हम सभी अपनी जीवन को श्रेष्ठ बनाये। इस अवसर पर बीके. राम नरेश यादव, बीके. कृष्णा, बीके धीरज, राजेंद्र दास, कुसुम माता, शोभा माता सहित सभी भाई बहनों ने शामिल होकर मातेश्वरी जगदम्बा जी को पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

भाजपा ने सिगसिगी में जनसंपर्क अभियान चलाया

विश्रामपुर। भाजपा ग्रामीण मंडल द्वारा प्रखंड के सिगसिगी पंचायत में शनिवार को महाजनसंपर्क अभियान चलाया गया। जनसंपर्क के दौरान भाजपा नेताओं कार्यकताओं ने ग्रामीणों को मोदी सरकार के नौ वर्ष की उपलब्धियों के बारे में विस्तृत रूप से बताया। अभियान का नेतृत्व मंडल अध्यक्ष अमरेश तिवारी कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार का नौ वर्ष का कार्यकाल सेवा,समर्पण,विकास और गरीब कल्याण के नाम समर्पित रहा है। वरीय भाजपा नेता शिवबंश मिश्रा ने कहा कि केंद्र सरकार ने गरीबों के कल्याण हेतु दर्जनों योजनाएं चलाई। जिसका सीधा फायदा आम लोगों तक पहुंचा। भाजपा युवा मोर्चा के अध्यक्ष अनुज चौधरी ने मोदी सरकार के महत्वकांक्षी योजनाओं के बारे में लोगों को बताया। अभियान में कयास चौधरी सहित कई भाजपा नेता और कार्यकर्ता शामिल थे।

साली की शादी में ससुराल आए युवक की मौत

नवीन मेल संवाददाता

सतबरवा। साली की बारात में आए रामगढ़ के युवक की लाश सतबरवा थाना क्षेत्र से पुलिस ने बरामद किया है। युवक जहां बारात में आया था, वहां से चार किलोमीटर दूर शव पड़ा हुआ था। बगल में उसकी बाइक भी खड़ी थी। बारात के दौरान द्वारपूजा तक युवक देखा गया था। इसके बाद वह गायब हुआ और फिर उसका शव बरामद हुआ । संदेहास्पद मौत मानकर पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। युवक की पहचान रामगढ़ थाना क्षेत्र के बेड़मा बभंडी पंचायत के चौपरिया गांव के राजेंद्र प्रसाद के बड़े पुत्र विजय प्रसाद (24 वर्ष) के रूप में हुई है। शुरूआती छानबीन में युवक की मौत हादसे में होने की संभावना लगती है लेकिन परिजनों ने हत्या का आरोप लगाया है।मृतक की पत्नी

प्रियंका देवी ने बताया कि मैं अपने पति के साथ मौसा बाबूलाल प्रसाद के यहां शादी समारोह में 2 दिन पहले आई थी। शुक्रवार की रात्रि बहन की शादी का कार्यक्रम जारी था, मेरे पति द्वार पूजन होने तक साथ में थे इसके बाद वे दिखाई नहीं दिए। प्रियंका ने अपने पति की हत्या का आरोप लगा निष्पक्ष जांच की मांग की है। इधर घटनास्थल पर युवक के शव पर पत्थर से वार कर कुचलने का प्रयास किया गया। गर्दन और छाती की हड्डी टूटी हुई प्रतीत हुई है। पुलिस रोड एक्सीडेंट तथा प्रेम त्रिकोण के आधार पर हुई मौत के मामले की जांच करने में जुट गई है। थाना प्रभारी, एसआई कुणाल किशोर मौर्या पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर भी पहुंचे थे। छानबीन की और शव को कब्जे में लिया। पुलिस ने एमआरएमसीएच से पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। घटना के बाद से पत्नी तथा उसके परिजनों का रो-रोकर हाल बेहाल बना हुआ है।

सर्वोदय प्लस टू उच्च विद्यालय में मासिक जांच परीक्षा का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

सतबरवा। सर्वोदय प्लस टू उच्च विद्यालय में शनिवार को विज्ञान संकाय के वर्ग 11 का परीक्षा दे चुके तथा 12वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों का मासिक जांच परीक्षा का आयोजन विज्ञान शिक्षक अभिषेक कुमार तिवारी द्वारा करवाया गया। परीक्षा पूर्ण रूप से बहुविकल्पी, ओएमआर शीट पर आधारित था । परीक्षा के साथ-साथ परिणाम भी आज ही प्रकाशित किया गया । जिसमें प्रथम स्थान अभिषेक कुमार मेहता, द्वितीय किरण कुमारी व तृतीय स्थान मनदीप चौधरी को प्राप्त हुआ । शिक्षक अभिषेक कुमार तिवारी ने बताया कि नवाचार के उद्देश्य से अब इन तीनों विद्यार्थियों को 27 जून को कौन बनेगा हजार पति कार्यक्रम में शामिल किया जाएगा और किसी एक को नकद 1000 इनाम के रूप मेरे तरफ से दिया जाएगा, एवं यह कार्यक्रम प्रत्येक माह आयोजित होगा ।

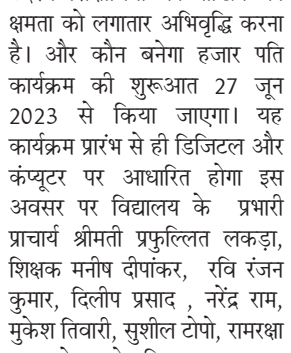

सतत एवं व्यापक आकलन का उद्देश्य शिक्षार्थियों की सीखने की क्षमता को लगातार अभिवृद्धि करना है। और कौन बनेगा हजार पति कार्यक्रम की शुरूआत 27 जून 2023 से किया जाएगा। यह कार्यक्रम प्रारंभ से ही डिजिटल और कंप्यूटर पर आधारित होगा इस अवसर पर विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य श्रीमती प्रफुल्लित लकड़ा, शिक्षक मनीष दीपांकर, रवि रंजन कुमार, दिलीप प्रसाद , नरेंद्र राम, मुकेश तिवारी, सुशील टोपो, रामरक्षा प्रसाद ने सहयोग किया।

विपक्षी एकता से भाजपा नेताओं में बढ़ी बेचैनी : राजद

सगालीम। झारखंड प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के महासचिव सह प्रवक्ता डॉ मनोज कुमार ने कहा कि बिहार में विपक्ष की एकजुटता देख भाजपा नेता बेचैन है। विशेष रूप से झारखंड के भाजपा नेता काफी असहज और बेचैन हो रहे है। चूंकि झारखंड से भाजपा के जनाधार खिसकते देख भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष काफी बेचैन है। उन्होंने भाजपा नेता दीपक प्रकाश के उस बयान की कड़ी निंदा किया है , जिसमें बिहार में विपक्षी एकता की बैठक को कहा कि एक्का के नाम पर भ्रष्टाचार के संरक्षक जुटे थे। डॉ. कुमार ने कहा कि भाजपा के सभी नेता दूध के धुले है और वे भी धुले होते है जो भाजपा के साथ होते है। सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज को के कहावत को भाजपा नेता चरितार्थ कर रहे है। भाजपा नेताओं को बोलने से पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए कि जिस झारखंड की धरती से बोल रहे है। जीरो टॉलरेंस वाली रघुवर दास के सरकार के समय सबसे ज्यादा 31 घोटाले हुए। जिसमे मोमेंटम झारखंड में 100 करोड़ ,400 करोड़ के लौह अयस्क ,18 करोड़ के कंबल घोटाले, 61 करोड़ अल्पसख्यक छात्रवृति घोटाले , टॉफी टी शर्ट घोटाले सहित अनेक घोटाले उजागर हुए, किंतु इनमें इतनी निर्लजता कूट कूट कर भरी है की शर्म भी शर्मा जाए।

पहल प्रशासनिक पहल पर पतरिया गांव में दोनों समुदायों ने की बैठक

ताजिया के रास्ते को लेकर विवाद खत्म

समाज को बांधकर रखने और जोड़ने की जिम्मेदारी सभी वर्ग की है

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। पलामू जिले के हैदरनगर थाना क्षेत्र के पतरिया और बंशीपुर मुख्य मार्ग से ताजिया निकलने को लेकर लंबे समय से दोनों समुदाय बीच जारी विवाद प्रशासनिक पहल पर शनिवार को सुलझा लिया गया है। इसे लेकर पतरिया गांव में दोनों समुदायों ने बैठक में आपसी भाईचारे का संदेश देते हुए विवाद को समाप्त करने का निर्णय लिया। अब पतरिया व बंशीपुर मुख्य मार्ग से ताजिया ले जाने को लेकर दोनों समुदायों ने समझौता कर लिया है। मालूम हो कि पूर्व में वाया संडेया व चंद्रपुर होकर ताजिया को नौडीहा स्कूल से खेत के रास्ते पतरिया, गोल्हना से

बंशीपुर ताजिया को लाया जाता था। इसी मार्ग से ताजिया लाने के लिए मुस्लिम समुदाय को लाइसेंस निर्गत था। बीते तीन साल से नौडीहा स्कूल से खेत के रास्ते न जाकर नये रास्ते पतरिया बंशीपुर मुख्य मार्ग से ताजिया लाया जाने लगा। जिस पर हिन्दू समाज के लोगों ने ताजिया ले जाने के क्रम में कुछ विवाद होने की वजह दूसरे समुदाय को ताजिया ले जाने से मना कर दिया था। मुहर्रम का पर्व नजदीक देख इस विवाद के निपटारे के लिए प्रशासन ने पतरिया गांव में सामूहिक बैठक आहूत की। जिसकी अध्यक्षता अंचला पदाधिकारी राजीव नीरज ने की। बैठक में उनके अलावा प्रखंड विकास पदाधिकारी धीरज कुमार ठाकुर, थाना प्रभारी अजाद अंसारी और कई पंचायत के मुखिया व पंचायत समिति सदस्य शामिल होकर समाधान की दिशा में अहम भूमिका निभाया। बीडीओ ने कहा कि समाज को बांधकर रखने और जोड़ने की जिम्मेदारी सभी वर्ग की है। सभी एक साथ रहकर ही आपसी भाईचारे और शांति, अमन चैन का संदेश दिया जा सकता है। इसमें ताजिया को पतरिया और बंशीपुर के रास्ते दोनों समुदाय के लोगों ने शांतिपूर्ण ले जाने पर सहमति दे दी है। दोनों समुदाय के लोगों ने एक दूसरे को गले लगाकर गंगा जमुनी तहजीब से रहने की बात कही। बैठक का समापन समाजसेवी सुधीर सिंह और सुरज पासवान ने किया। बैठक में मुखिया जितेंद्र सिंह, अशोक यादव, उपप्रमुख पप्पू पासवान, समाजसेवी सज्जू खान, पूर्व मुखिया शंकर राम सहित दोनो समुदाय के सैकड़ों लोग शामिल थे।

श्रम,नियोजन,प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग
जिला नियोजन –सह–जिला कौशल कार्यालय,गढ़वा।

शुद्धि पत्र

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि जिला नियोजन–सह–जिला कौशल कार्यालय, गढ़वा द्वारा निकाली गई निविदा संख्या-PR299640 Labour, Employment and Training,(23-24)#D कण्डिका–4–EOI- खोलने की तिथि को अपरिहार्य कारणों से परिवर्तित करते हुए दिनांक–05.07.2023 को 11.30 बजे पूर्वा0 निर्धारित की जाती है।
शेष यथावत रहेंगें।

जिला कौशल–सह–
जिला नियोजन पदाधिकारी गढ़वा।
PR 300839 Labour Employment and Traning(23-24)D

न्यायालय, उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी, लातेहार।
राजसात वाद संख्या–62/2023
नोटिस बनाम्

विकास कुमार सिंह, पिता–लालदेव कुमार सिंह,
सा0–बड़कागांव, जिला–हजारीबाग। :– विपक्षी

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि पुलिस अधीक्षक, लातेहार द्वारा उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी, लातेहार के न्यायालय में हाईवा रजि0 नं0–JH02AV-2216 को राजसात हेतु वाद दायर किया गया है, जिसकी सुनवाई की तिथि 23.06.2023 को की गयी है। इस न्यायालय से नोटिस निर्गत होने के बावजूद भी आप अनुपस्थित है।

अतएव अंतिम रूप से आपको सूचित किया जाता है कि दिनांक 18.07.2023 को निश्चित रूप से स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपायुक्त –सह– जिला दण्डाधिकारी, लातेहार के न्यायालय में उपस्थित होकर अपना पक्ष रखना सुनिश्चित करेंगे। निर्धारित तिथि को अनुपस्थित रहने पर यह माना जायेगा कि इस संबंध में आपको कुछ नहीं कहना है तथा अभिलेख में उपलब्ध दस्तावेज के आधार पर एक पक्षीय आदेश पारित किया जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से नोटिस निर्गत किया गया।

प्रभारी पदाधिकारी,
जिला विधि शाखा, लातेहार।
PR 300783 District(23-24)D

**OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
BUILDING CONSTRUCTION DEPARTMENT
BUILDING DIVSION, DALTONGANJ.**

CORRIGENDUM

Tenders Postponed vide PR No.-298374 Building (23-24).D has been reinvited. Date of Receipt of the tenders will be 03.07.2023 Time 1:00 PM and the Opening of the tenders will be 04.07.2023 Time 3:30 PM
Rest will be as usual.

Executive Engineer,
Building Division, Daltonganj.
PR 300837 (Building)23-24*D

**समाहरणालय, गढ़वा (जिला पंचायत शाखा)
(नगरपालिका निर्वाचन 2023)**
Email - dprogarhwa84@gmail.com

आम सूचना

इस कार्यालय के ज्ञापांक 489/पं0, दिनांक 19.06.2023 द्वारा नगर पालिका (आम) निर्वाचन 2023 के तहत गढ़वा नगर परिषद् वर्ग (ख), मझिऑवनगर पंचायत एवं श्री बंशीधर नगर पंचायत के विभिन्नपदों के निर्वाचन हेतु प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रवार (वार्डवार) मतदान केन्द्रवार मतदात सूची के प्रारूप प्रकाशन दिनांक– 19.06.2023 को कर दिये जाने संबंधी आम सूचना जिसका Advt. PR No–300451है, मैंदावा/आपत्ति प्राप्त करने की अंतिम तिथि दिनांक– 01.07.2023 के स्थान पर दिनांक– 06.07.2023 अंकित हो गया है। दिनांक 19.06.20263 को प्रकाशित प्रारूप मतदाता सूची के आधार पर प्राप्त दावा/आपत्ति विहित प्रपत्र में दिनांक–01.07.2023 तक कार्यालय अवधि में प्राधिकृत पदाधिकारी के कार्यालय में प्राप्त की जाएगी।

निदेशानुसार पूर्व निर्गत आम सूचना में दावा/आपत्ति प्राप्त करने की तिथि दिनांक 06.07.2023 तक के स्थान पर दिनांक 01.07.2023 तक संशोधित समझा जाय। शेश कंडिका यथावत रहेगी।

ह0/–
उप निर्वाचन पदाधिकारी, (न0)
गढ़वा
PR 300827 Panchayati Raj(23-24)D

झारखण्ड सरकार
वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्त्तन विभाग
न्यायालय :- प्राधिकृत पदाधिकारी-सह-वन प्रमण्डल पदाधिकारी, गढ़वा उत्तरी वन प्रमण्डल, गढ़वा

सूचना

सर्व साधारण को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि गढ़वा उत्तरी वन प्रमण्डल के प्रशासनिक क्षेत्राधीन बिहार केन्दू पत्ती (व्यापार नियंत्रण) अधिनियम, 1973 के सुसंगत प्रावधानों के उल्लंघन करने के विरूद्ध जप्त वन पदार्थ पर प्राधिकृत पदाधिकारी–सह–वन प्रमण्डल पदाधिकारी, गढ़वा उत्तरी वन प्रमण्डल के न्यायालय में भारतीय वन अधिनियम, 1927 (संपठित बिहार संशोधन, 1989) के अंतर्गत निहित प्रावधानों के तहत् राज्यसात की कार्रवाई चल रही है, जिसमें संबंधित पक्षों को अपना पक्ष प्रस्तुत करने हेतु निर्धारित सुनवाई की तिथि 08.07.2023 को 11:00 बजे पूर्वाह्न में ससमय प्राधिकृत पदाधिकारी–सह–वन प्रमण्डल पदाधिकारी, गढ़वा उत्तरी वन प्रमण्डल के न्यायालय में उपस्थित होकर अपना पक्ष रखें, अन्यथा न्यायालय द्वारा उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर एकतरफा निर्णय ले लिया जायेगा। जप्त वन पदार्थ तथा वन वाद से संबंधित अधिहरण वाद की विवरणी निम्नवत् है :–

क्र0 सं0	अधिहरण वाद संख्या	जप्त वन पदार्थ एवं अन्य सामग्री	अभियुक्त का नाम एवं पता	अभ्युक्ति
1.	14/2023	केन्दू पत्ती–10 बोरा (प्रति बोरा करीब 900 पोला)	अज्ञात	

प्राधिकृत पदाधिकारी –सह–
वन प्रमण्डल पदाधिकारी,
गढ़वा उत्तरी वन प्रमण्डल
PR 300815 Forest, Environment and Climate Changes (23-24)_D

पलामू में शराब पीने वालों ने बनाया शराब उपभोक्ता संघ

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू में शराब उपभोक्ता संघ का गठन किया गया है। इस संघ में कई जनप्रतिनिधि, पूर्व जनप्रतिनिधि और बड़े चेहरे शामिल हैं। शराब उपभोक्ता संघ के कार्यकारी सचिव गुड्डू पांडेय ने बताया कि मेदिनीनगर के निजी होटल में रविवार को संघ की बड़ी बैठक होगी, जिसमें कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा। ये संघ प्रिंट रेट से अधिक कीमत पर बिकने वाली शराब का विरोध करेगा, साथ ही साथ मामले में पीआईएल की भी योजना तैयार करेगा। इसके अलावा प्रिंट रेट से अधिक कीमत पर बिकने वाली शराब का एक ब्यौरा तैयार कर-

के, प्रवर्तन निदेशालय को इससे होने वाली अवैध कमाई की जानकारी संघ की ओर से दी जाएगी। दरअसल पलामू में प्रिंट रेट से अधिक कीमत पर शराब बिक रही है। कई मौकों पर उत्पाद विभाग की कार्रवाई में इसका खुलासा हुआ है। एमआरपी से अधिक कीमत पर शराब बेचे जाने के मामले में पलामू में अब तक दो एफआईआर हो चुके हैं जबकि दो लोगों को गोली मारी गई है। पलामू में शराब की बोतल पर प्रिंट रेट से 20 से 50 अधिक कीमत पर बेची जा रही है। प्रिंट रेट से अधिक कीमत पर बिक रहे शराब के कारण नाराज लोगों ने शराब उपभोक्ता संघ का गठन किया है।

कर्मचारी संघ के अध्यक्ष बने वसीम अकरम

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर के पुलिस लाइन में शुक्रवार को झारखंड पुलिस चतुर्थवर्गीय कर्मचारी संघ, शाखा पलामू जिला बल की तृतीय शाखा चुनाव संपन्न हुआ जिसमें झारखंड पुलिस चतुर्थवर्गीय कर्मचारी संघ के सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर वसीम अकरम को चुना। इसके बाद सभी सदस्यों के द्वारा अध्यक्ष वसीम अकरम को फूल का माला पहना कर उनका भव्य स्वागत किया गया और संघ के लिए बेहतर कार्य करने की कामना की। वहीं मौके पर उपस्थित वसीम अकरम ने कहा कि जिस निष्ठा भाव से लोगों ने हमें अध्यक्ष पद पर चुना है हम उस पर खरा उतरेंगे। हम अपने संघ के लोगों के लिए हमेशा सुख दुख में खड़ा रहेंगे। वही उपाध्यक्ष पद पर दिलीप कुमार,मंत्री पद पर मनोज राम, कोषाध्यक्ष पद पर रामप्यारी देवी, संयुक्त मंत्री पद पर पिंकी देवी, संगठन मंत्री पद पर मनोज कुमार पासवान, मुख्यालय प्रतिनिधि पद पर अशोक महतो चुना गया। चुनाव के समय मौके पर पुलिस मेंस ऐसोशिएसन के शाखा अध्यक्ष अक्षय पासवान मुख्य रूप से उपस्थित थे। इनके अलावा पलामू जिला बल के अन्य पुलिस चतुर्थवगीय कर्मचारी भी उपस्थित थे।

NEWS इन ब्रीफ

बाइक की चोरी, शहर थाना में दिया गया आवेदन

मेदिनीनगर। शहर थाना क्षेत्र के कचहरी व्यवहार न्यायालय के सामने से जेएच 03 जेड 9978 बाइक की चोरी हो गई। बाइक मालिक अरविंद सिंह ने शहर थाना में आवेदन दिया है। दिए गए आवेदन के अनुसार शुक्रवार के दिन में व्यवहार न्यायालय के गेट के पास अपनी स्प्लेंडर प्लस बाइक लगाकर अंदर गए थे काम होने के बाद बाहर आए तो बाइक गायब थी। उन्होंने अपने स्तर से खोजने का हर संभव प्रयास किया पर कुछ पता नहीं चला। बाद में शहर थाना में बाइक चोरी का आवेदन देते हुए मामला दर्ज कराया।

बाइक का भव्य लाँच समारोह आज

मेदिनीनगर। रविवार को साइन मोटरसाइकिल को लाँच करने का कार्यक्रम सुबह 11 बजे से हॉरिजन होन्डा के शो रूम में आयोजित है। जिसकी टेस्ट राइड की सुविधा भी मौके पर उपलब्ध रहेगी। ये शो रूम मेदिनीनगर,रेडमा,राँची रोड में राष्ट्रीय नवीन मेल, समाचार पत्र के कार्यालय के पास अवस्थित है। नई मोटरसाइकिल के चाहने वाले के लिए ये एक सुनहरा मौका है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा व्यापार प्रकोष्ट पलामू जिला के अध्यक्ष का स्वागत

मेदिनीनगर। आज बाजार क्षेत्र में व्यवसाई भाइयो के द्वारा झारखंड मुक्ति मोर्चा के व्यपार प्रकोष्ट पलामू जिला के अध्यक्ष बनाये जाने पर मधुबनी खादी भंडार मिश्रा कोम्प्लेस मे दीपू चौरसिया और उनकी टीम सचिव श्री मनोज गुप्ता ,उपाध्यक्ष दीप्तेश भगत जिमी उपाध्यक्ष शाकिब सिद्धिकी और कोषा अध्यक्ष श्री राहुल कुमार सभी को माला पहना कर और बुके देकर सम्मानित किया गया । अध्यक्ष दीपू चौरसिया ने कहा की मै और हमारी टीम सभी व्यवसाय से जुड़े हुए है । हर व्यवसाई भाइयों के हर सुख दुःख मे मै और मेरी पूरी टीम दूकानदार भाइयो के सेवा मे हमेशा तत्पर रहेंगे।सम्मानित करने वाले व्यवसाय भाइयो मे सरजू प्रसाद् अग्रवाल जी, विष्णुदत मिश्रा ,अरुण गुप्ता ,पंकज शर्मा, डब्लू खान , कमल जयसवाल ,राजेश भगत, लड्डू खान,गौतम गुप्ता ,कमल मुरारका सभी व्यवसायी शामिल थे।

141 मामलों का निस्तारण

व्यवहार न्यायालय में लगी मासिक लोक अदालत

दो पीड़ित परिवारों को पीडीजे ने दिये तेरह लाख रुपए के चेक

पीठ संख्या तीन में आपराधिक मामले का निस्तारण सीजे एम निरुपम कुमार व अधिवक्ता शशि भूषण ने किया

प्रि लिटिगेशन के 30 व कोर्ट में लंबित 141 मामले का निस्तारण किया गया

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वाधान में शनिवार को व्यवहार न्यायालय परिसर में मासिक लोक अदालत का आयोजन किया गया। लोक अदालत में सुलह समझौते के आधार पर 141 मामलों का निस्तारण किया गया ।इस दौरान एमएसीटी के दो मामले में पलामू के प्रधान जिला और सत्र न्यायाधीश प्रदीप कुमार चौबे ने 13 लाख रुपये का चेक पीड़ित परिवारो के बीच वितरण किया। लोक अदालत में मामलों का निस्तारण के लिए 9 पीठों का गठन किया गया था। पारिवारिक विवाद निपटारे के लिए बनाया गये प्रथम पीठ में कुटुंब न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश मार्तण्ड प्रताप मिश्रा व अधिवक्ता अशोक कुमार मिश्रा मामलों का निस्तारण कर रहे थे। इस पीठ में एक भी मामले का निस्तारण नही हो सका। पीठ संख्या दो में सभी सत्र न्यायाधीश के न्यायालय के मामले क्रिमिनल अपील, सिविल अपील,

रिवीजन,बिधुत विभाग इत्यादि का निपटारा जिला और सत्र न्यायाधीश प्रथम संतोष कुमार व अधिवक्ता प्रदीप कुमार कर रहे थे। इस पीठ में विधुत विभाग के 31 मामले का निस्तारण किया गया। पीठ संख्या तीन में आपराधिक मामले का निस्तारण सीजे एम निरुपम कुमार व अधिवक्ता शशि भूषण ने किया। इस पीठ में 71 मामललों का निस्तारण किया गया। पीठ संख्या चार में सिविल जज सीनियर डिविजन कोर्ट के मामले का निस्तारण संदीप निशित बारा, सिविल जज सीनियर डिवीजन पंचम व अधिवक्ता हुसैन वारिस ने किया।इस पीठ में चार मामले का निस्तारण किया गया। पीठ संख्या पांच में सिविल जज जूनियर डिवीजन कोर्ट के मामले का निस्तारण मिस रूबी जेएम प्रथम श्रेणी व अधिवक्ता संतोष कुमार पांडेय ने किया। इस पीठ में एक भी मामले का निस्तारण नही हो सका। पीठ संख्या छह में जेजे बोर्ड के मामले का निस्तारण रीतू कुजूर जेएम प्रथम श्रेणी व अधिवक्ता सतीश कुमार दुबे ने किया। इस पीठ में एक भी मामले का निस्तारण नही हो सका। पीठ संख्या सात में रेलवे कोर्ट से सम्बंधित मामले का निस्तारण रेलवे जेएम मनोज कुमार व अधिवक्ता संजय कुमार सिन्हा कर रहे थे।इस पीठ में एक भी मामले का निस्तारण नहीं किया गया। पीठ संख्या आठ में प्रि लिटिगेशन मामले का निस्तारण स्थाई लोक अदालत के अध्यक्ष कमलनयन पांडेय व सदस्य महिमा श्रीवास्तव ने किया।इस पीठ में 11 मामले का निस्तारण किया गया। पीठ संख्या नौ में एक्सक्यूटिव व रेवेन्यू मामले का निस्तारण कार्यपालक दंडाधिकारी विक्रम आनंद व अधिवक्ता विणा मिश्रा ने किया। इस पीठ में एक भी मामले का निस्तारण नही हो सका। विदित हो कि प्रि लिटिगेशन के 30 व कोर्ट में लंबित 141 मामले का निस्तारण किया गया।वहीं 22 लाख 15 हजार 144 रुपये का मामला सेटल हुआ। इस दौरान एक हेल्प डेस्क बनाया गया था,जिसमें अधिवक्ता सतीश कुमार व पीएलभी मुनेश्वर राम सहयोग कर रहे थे। चेक वितरण के मौके पर डीजे पंचम अभिमन्यु कुमार, जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव अर्पित श्रीवास्तव, रजिस्ट्रार अमित गुप्ता, पीड़ित परिवार व उनके विद्वान अधिवक्ता उपस्थित थे।

जिले की जन समस्याओं को ले भाकपा करेगी डीसी का घेराव

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की जिला कमेटी की बैठक पार्टी के नेता समसुद्दीन अंसारी की अध्यक्षता में हुई। संचालन जिला सचिव रुचिर कुमार तिवारी ने किया। बैठक में सर्वप्रथम ग्राम हरैया के कामरेड मरछी देवी एवं पिछले दिनों भीषण ट्रेन दुर्घटना के मृतकों के प्रति 2 मिनट का मौन रखकर गहरा शोक व्यक्त किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए जिला सचिव रुचिर तिवारी ने कहा कि इस भीषण गर्मी के महीने में नगर निगम में नियमित रूप से पानी की सप्लाई भी नहीं हो रही है। निगम क्षेत्र में खराब पड़े चापाकलों की मरम्मती अभिलंब होना चाहिए। निगम में सभी बड़े तालाबों को अतिक्रमण मुक्त कर गहरीकरण करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जिले में भूमि हदबंदी कानून को ताक पर रखकर फर्जी रूप से आदिवासी खाता के जमीन का भी गैर आदिवासियों के नाम ट्रांसफर हो रहा है। परंतु पदाधिकारी मौन व्रत धारण किए हुए हैं। यही हाल बालू घाट के नीलामी करने में पलामू उपायुक्त ने किया जिसका खामियाजा व्यवसाई एवं मजदूर वर्ग के लोग भुगत रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में जन आंदोलन करने की आवश्यकता है। भीषण गर्मी के इस महीना के बाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी उपायुक्त पलामू का घेराव करेगी । बैठक को सदर अंचल के अध्यक्ष उमेश सिंह चेरो, जनेश्वर भूइंया, अभय कुमार भूइंया ने सम्बोधित करते हुए जिले में व्याप्त समस्याओं पर चर्चा की।बैठक में रंजीत कुमार सिंह, उपेंद्र सिंह चेरो एवं मुनिया देवी सहित कई ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की और शपथ लिया। बैठक में नसीम राइन, ललन कुमार सिन्हा, रामराज तिवारी, प्रभु साव, लखन राम, पूरन चंद साव, अवधेश सिंह चेरो, फेकन उरांव, नीलम देवी, बुधन मिस्त्री, उमेश चौधरी, रामधनी सिंह सहित कई लोग उपस्थित थे।

सहियाओं ने अस्पताल अधीक्षक से मिलकर बतायी समस्या

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। सदर प्रखंड के सभी स्वास्थ्य सहिया शुक्रवार को अपने शिकायत को लेकर अस्पताल अधीक्षक से मिलने पहुंची। स्वास्थ्य सहीयाओ का अस्पताल अधीक्षक से शिकायत था कि अस्पताल में कुछ सहिया दलाली के धंधा में संलिप्त थी।परंतु जिला प्रशासन के द्वारा करवाई होने के बाद अब सभी दलाली के धंधे से कोसों दूर हैं। वही मौके पर उपस्थित सहिया रजनी सिन्हा ने कहा की अस्पताल में बालाजी के सफाई कर्मी ट्राली मैन दलाली का धंधा करते हैं और इसमें नाम सहिया का आता है। रजनी सिन्हा ने कहा की सहिया अपने क्षेत्र के मरीजों को इलाज कराने के लिए सदर अस्पताल लेकर आती है ना की

दलाली करने के लिए अस्पताल में पर्याप्त मात्रा में दवा नहीं रहने के कारण मजबूरी में सहिया अपने मरीजों को बाहर के मेडिकल से दवा लेने के लिए कहते हैं ,जिसे लोग दलाली समझ रहे हैं। अस्पताल अधिक्षक डीके सिंह ने कहा कि सभी साहिया मेडिकल कॉलेज अस्पताल) पलामू में अपने ड्रेस कोड एवं आई०डी० कार्ड के साथ मरिजो को अस्पताल में पहुचा कर अस्पताल से बाहर निकल जाएगें मरीज का कोई भी पूर्जा या जॉच लेकर अस्पताल के बाहर नही जाएगें। यदि मरीज का पूर्जा या जाँच बाहर भेजते हुवे पकडे जाते है तो उन सहियाओ पर कानुनी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि यदि किसी मरीज को कोई दिक्कत होगा तो मरीज के परिजन स्वयं सहिया को फोन करेगा तब सहिया जाकर मरीज के समस्या का समाधान करेंगे।

सदर अस्पताल से मोबाइल की चोरी

मेदिनीनगर। सदर अस्पताल के हेल्थ मैप सेंटर से शनिवार की दोपहर स्वेता भारती नामक एक लड़की का मोबाइल चोरी हो गया। बताया जाता है कि श्वेता भारती बिहार राज्य के गया जिले की रहने वाली है, वह शहर थाना क्षेत्र के जेल हाता अपने मौसी के घर आई थी। शुक्रवार की सुबह वह अपने इलाज कराने के लिए सदर अस्पताल पहुंची थी। इसी बीच इलाज कराने के दौरान किसी ने उसके बैग से मोबाइल चोरी कर लिया। इसके बाद भुक्तभोगी के द्वारा मोबाइल चोरी होने की सूचना टिओपी वन के टाइगर मोबाइल जवान हवलदार विनोद यादव को दी गई। जानकारी मिलते ही विनोद कुमार यादव सदर अस्पताल पहुंचकर हेल्थ मैप सेंटर के मैनेजर शैलेंद्र कुमार के साथ हेल्थ मैप में लगे सीसीटीवी कैमरे की जांच की। लेकिन सीसीटीवी कैमरे में कुछ भी पता नहीं चल पाया। इसके बाद भुक्तभोगी श्वेता भारती को मोबाइल चोरी होने से संबंधित मामला शहर थाना में दर्ज कराने को कहा गया।

किसानों के लिए खरीफ कर्मशाला आयोजित

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। जिले के चियांकी स्थित क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के सभागार में सरकार के कृषि-पशुपालन एवं सहकारिता विभाग के तत्वावधान में जिला स्तरीय खरीफ कर्मशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत बतौर मुख्य अतिथि पलामू जिला परिषद उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह उर्फ टुटू सिंह, जिला कृषि पदाधिकारी एवं कृषि निदेशक आदि ने दीप-प्रज्ज्वलित कर की। मौके पर जिला परिषद उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह उर्फ टुटू सिंह ने कहा कि हर वर्ष किसानों को विलंब से बीज मुहैया कराया जाता था, किंतु हमारी टीम इस वर्ष किसानों के लिए मानसून आने के पूर्व ही खरीफ फसलों के लिए बीज मुहैया करा रही है। उन्होंने कहा कि अब एटीएम एवं बीटीएम का कार्य बनता है कि वे अतिशीघ्र प्रखंड स्तर पर किसानों को बीज उपलब्ध कराये। ताकि किसान ससमय खेती कर उसका लाभ ले सकें। उन्होंने ये भी कहा कि हम किसानों की सभी अन्य समस्याओं के निदान की दिशा में लगे हुए हैं। कर्मशाला कृषि वैज्ञानिकों ने जिले में मडुआ, बाजरा आदि मोटे अनाजों की खेती करने पर विशेष जोर दिया। कहा कि किसान कम पानी की खपत में भी इन अनाजों की खेती कर अपने जीवन स्तर को सुधार सकते हैं। इस मौके पर जिला कृषि पदाधिकारी, निदेशक, जिला परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी, एटीएम, बीटीएम समेत जिला परिषद सदस्य प्रमोद सिंह, रामलव चौरसिया, विजय रविदास आदि उपस्थित रहे।

अभियान

सांसद ने शहर में किया घर-घर जनसम्पर्क

देश के विकास के लिए प्रधानमंत्री का करें समर्थन : वीडी राम

सांसद बीडी राम ने लोगों को मो० नंबर 90909024 पर मिस्ड कॉल कर मोदी सरकार को समर्थन देने का भी आग्रह किया

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। भाजपा को आगामी लोक सभा चुनाव 2024 में आशीर्वाद एवं जनसमर्थन के लिए पलामू में पार्टी द्वारा घर -घर जनसम्पर्क अभियान चलाया जा रहा है। इस दौरान पार्टी के नेता व कार्यकर्ताओ के साथ सांसद बूथवार घर घर जाकर लोगों से समर्थन कि अपील कर रहे हैं। इसी क्रम में आज शहरी क्षेत्र के पलामू क्लब बूथ संख्या 205, 206, 207 के शिवाजी मैदान रोड में महाजनसंपर्क अभियान कार्यक्रम को लेकर भाजपाइयों की टोली दीपू सिंघानिया, संजय सिंघानिया, सुरेश जैन, पवन जैन, प्रो० अमल कुमार पांडे, रणविजय कुमार, डा०रघुवंश नारायण सिंह, अरुणजय नारायण सिन्हा समेत अन्य मतदाताओं के घर पहुंची और 2024 चुनाव के लिए

आशीर्वाद एवं समर्थन मांगा।इस दौरान भाजपा के पलामू सांसद विष्णु दयाल राम ने केंद्र की मोदी सरकार के 9 साल की उपलब्धि एवं अपने कार्यकाल में क्षेत्र में किये गये विकास कार्यों के ब्योरा का पंपलेट लोगों को दिया। इतना ही नहीं सांसद ने मतदाताओं के आवास पर मोदी सरकार के बेमिसाल 9 साल का स्टीकर लगाते हुए एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना समर्थन देने की अपील की। उन्होंने कहा कि तभी देश के हर क्षेत्र में हो रहे विकास एवं जनकल्याणकारी योजनाओं को समय पर तेज गति से पूरा किया जा सकेगा। सांसद बीडी राम ने लोगों को मो० नंबर 90909024 पर मिस्ड कॉल कर मोदी सरकार को समर्थन देने का भी आग्रह किया। जनसंपर्क भ्रमण टोली में जिलाध्यक्ष विजयानंद पाठक, वरिष्ठ नेता श्याम नारायण दुबे, परशुराम ओझा, महा जनसंपर्क अभियान संयोजक विभाकर नारायण पांडे सहसंयोजक अविनाश वर्मा, विजय ओझा,जय दुबे, शिवकुमार मिश्रा, जिला सोशल मीडिया प्रभारी सोमेश सिंह, नगरमंडल अध्यक्ष अविनाश उर्फ छोटू सिन्हा, संजय कुमार, नंदलाल गुप्ता उर्फ ठनठन, संजय गुप्ता अलख दुबे, मनोरंजन दुबे व अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे। यह जानकारी पलामू भाजपा के शिव कुमार मिश्रा ने दी है।

कांग्रेस कमेटी के विंग एवं डिपार्टमेन्ट के अध्यक्षों का विचार मंथन

मेदिनीनगर। आज दिनांक 24 जून 2023 को पलामू जिला कार्यालय के सभागार में पलामू जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वधान में जिला अध्यक्ष जैश रंजन पाठक उर्फ बिट्टू पाठक के अध्यक्षता में कांग्रेस कमेटी के सभी विंग एवं डिपार्टमेन्ट के अध्यक्षों के साथ लक्ष्य 2024 को लेकर विचार मंथन किया गया। बैठक में सभी विंग के उपस्थित अध्यक्षों ने अपने संगठन को लेकर बात रखें ।बैठक को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष श्री बिट्टू पाठक ने कहा कि लक्ष्य 2024 को प्राप्ति के लिए सभी विंग के प्रखंड अध्यक्ष एवं पंचायत को सशक्त और मजबूत होने की जरूरत है। आगामी 3 जुलाई से सभी प्रखंडों में बैठक और कार्यक्रम तय किया गया है जिसमें सभी विंग के पदाधिकारियों को उपस्थिति जरूरी है ।ग जनता के बीच जाकर मोदी सरकार की नाकामी को बताए जाएगा। आज हम सभी लोगों को संकल्प लेकर लक्ष्य 2024 का प्राप्ति के लिए कार्य करेंगे बैठक में पलामू जिला कांग्रेस कमेटी के कार्यालय प्रभारी जितेंद्र कमलापुरी कोषाध्यक्ष अजय साहू जिला उपाध्यक्ष विद्या सिंह चेरो सदर 20 सूत्री उपाध्यक्ष रामानंद पाठक रविंद्र कुमार महिला कमेटी के जिलाध्यक्ष इंदु भगत युवा के जिला अध्यक्ष मुन्ना खान एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष अमरनाथ तिवारी दलित प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष अशोक पासवान आदिवासी मोर्चा के जिला अध्यक्ष जरूरु उरांवइंटक के जिलाध्यक्ष मुकेश सिंह युवा इंटक जिला अध्यक्ष शशांक सुमन राजीव गांधी पंचायती राज संगठन के जिला अध्यक्ष अमूक प्रियदर्शी कामगार कांग्रेस के जिला अध्यक्ष अनिल कुमार सिंह मत्स्य विभाग के अध्यक्ष छोटू चौधरी जवाहर बाल मंच के जिला अध्यक्ष राज किशोर सिंह स्वास्थ्य विभाग के जिला अध्यक्ष रंजन कुमार दुबे चंपा देवी सोशल मीडिया के अजय पांडे आदि लोग उपस्थित थे।

किसानों को 50 प्रतिशत अनुदानित मूल्य पर धान के उन्नत बीज उपलब्ध

नवीन मेल संवाददाता

श्री बंशीधर नगर (गढ़वा)। कृषि, पशुपालन व सहकारिता विभाग झारखण्ड सरकार एवं बिरसा बीज उत्पादन विनियम, वितरण व फसल विस्तार योजना के तहत भोजपुर पैक्स में उपलब्ध कराया गया धान का बीज किसानों के बीच 50 प्रतिशत अनुदानित मूल्य पर वितरण किया गया। इस अवसर पर पंचायत के मुखिया ओमप्रकाश उरांव ने कहा कि सरकार द्वारा किसानों को 50 प्रतिशत अनुदानित मूल्य पर धान का उन्नत बीज उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसान सरकार की इस योजना का लाभ उठाकर खेती करें। उन्होंने कहा कि समय पर धान का बीज उपलब्ध कराया जा रहा है। पैक्स अध्यक्ष सुदेश्वर विश्वकर्मा ने कहा कि किसानों को हाइब्रिड धान 50 प्रतिशत अनुदान पर आवश्यकतानुसार दिया जा रहा है। पैक्स से धान बीज लेने के लिये आधार कार्ड और जमीन के रसीद का छाया प्रति लाना जरूरी है। मौके पर एसी मोर्चा प्रखंड अध्यक्ष अनिल पासवान, उप मुखिया मनीष यादव, पैक्स सचिव शिव प्रसाद यादव, समाजसेवी नागेन्द्र पासवान, जय कुमार यादव, रामकेश यादव, बालेश्वर यादव, राज कुमार यादव, मनोहर यादव, हरि राम, सूरज सिंह सहित अन्य किसान उपस्थित थे।

पुलिस सेवा लक्ष्य के तहत हैंडबॉल का वितरण

डंडा (गढ़वा)। झारखंड पुलिस सेवा ही लक्ष्य के तहत शनिवार को एएसआई शैलेंद्र सिंह के द्वारा डंडा प्रखंड के कोरटा उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के बीच हैंडबॉल बॉल स्किपिंग रोप, टॉफी इत्यादि का वितरण किया गया। एसआई शैलेंद्र सिंह ने बताया कि कुछ दिन पहले मेरा डंडा थाना में पोस्टिंग हुआ है। इससे पहले मैं मेराल थाना में मुंशी के पद पर कार्यरत था। विभागीय कार्य के बाद जो मेरे पास टाइम मिल पाता है हमने झारखंड पुलिस सेवा ही लक्ष्य के तहत जहां भी जाता हूं बच्चों के बीच पठन-पाठन का सामग्री सहयोग के रूप में वितरण करता हूं। साथ ही बच्चों को व्यायाम योगा कराता हूं। क्लास के माध्यम से बच्चों को ध्यान से पढ़ाई करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करता हूं। यह एक छोटा सा प्रयास लगातार जारी रहेगा।

मुखिया ने उपविकास आयुक्त को ज्ञापन सौंपा

नवीन मेल संवाददाता

केतार (गढ़वा)। जिले के केतार पंचायत के मुखिया प्रमोद कुमार ने उपविकास आयुक्त राजेश कुमार राय को ज्ञापन सौंपकर पंचायत के विभिन्न समस्याओं को लेकर अवगत कराया। आवेदन में उल्लेख किया है कि केतार बाजार में जलजमाव होने से लोगों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। वहीं आवागमन बाधित हो रहा है। राहगीरों को पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। इसको लेकर कपूरी गेट से राजकीय मध्य विद्यालय एवं रामबिलास विश्वकर्मा के घर से पण्डा नदी तक नाला निर्माण कराने की मांग की है। साथ ही पंचायत में पेयजल के लिए चापाकल का

अधिष्ठापन, नावाडीह में पण्डा नदी किनारे गार्डवाल का निर्माण, केतार बाजार एवं कपूरी गेट के समीप हाई मास्क लाइट की अधिष्ठापन, पण्डा नदी में जल स्तर को बनाये रखने के लिए बियर स्किम का निर्माण, पंचायत सचिवालय के समीप निर्मित गोदाम का जीर्णोद्धार,सामुदायिक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में डॉक्टर की पदस्थापना, पंचायत सचिव की पदस्थापना, किसानों के द्वारा 2018 -19-20 का फसल बीमा का भुगतान, पशुपालकों को पशु निर्माण हेतु पशु शेड स्वीकृति दिलाने की मांग की है।

झामुमो के अनुमंडल अध्यक्ष बने हरेंद्र

मेराल (गढ़वा)। झारखंड मुक्ति मोर्चा के गढ़वा जिला अध्यक्ष तनवीर आलम खान के द्वारा मेराल प्रखंड के हासनदाग निवासी मुखिया पति हरेंद्र चौधरी को गढ़वा जिला अनुमंडल अध्यक्ष के पद पर जिम्मेदारी सौंपी गयी है। हरेंद्र चौधरी को पार्टी के अनुमंडल अध्यक्ष बनाए जाने पर झामुमो के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ उनके पंचायत के लोगों ने बधाई दिया है। बधाई देने वालों में मुबारक अंसारी, अनिल चौधरी, रंजीत कुमार चौबे, द्वारिका चौधरी, राजेंद्र चौधरी, कोमल चौधरी, प्रणय चौबे, गुलबास अंसारी, कमल किशोर चौबे, रमेश चंद्रवंशी, शिवदत्त चौधरी, मानिकचंद चौधरी, संजय विश्वकर्मा, गुपू चौधरी, मुकेश कुमार ठाकुर, अर्जुन रजक, लालमनी साव, कौशर अंसारी, मानदेव बैठा, उषा कुमारी, डोली देवी, तेतरी देवी इत्यादि का नाम शामिल है। इधर हरेंद्र चौधरी ने कहा कि पार्टी के द्वारा हम जैसे छोटे कार्यकर्ता पर विश्वास करते हुए बड़ी जिम्मेवारी सौंपी गई है। उस पर खरा उतरते हुए निष्ठा के साथ पार्टी संगठन को मजबूत करने का काम करूंगा। साथ ही सभी तबके के लोगों को पार्टी में जोड़ा जाएगा। उन्होंने मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर, जिला अध्यक्ष तनवीर आलम खान, सचिव मनोज ठाकुर, बीस सूत्री उपाध्यक्ष नितेश सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया है।

मंत्री पहुंचे जनता के द्वार, गांव गांव पहुंचकर सुनी जन समस्या

क्षेत्र में कोई भी कार्य नहीं रहेगा अधूरा : मंत्री मिथिलेश

नवीन मेल संवाददाता

गढ़वा। विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर जनता के द्वार पर पहुंचे। मंत्री ने शनिवार को मेराल प्रखंड के चेचरिया पंचायत के विभिन्न गांवों में पहुंचकर ग्रामीणों की समस्याएं सुनी। साथ ही जन समस्याओं का ऑन द स्पॉट निष्पादन भी कराया। ग्रामीणों ने राजस्व कर्मचारी रमेश पांडेय के विरुद्ध जमकर शिकायत की। मंत्री ने अविलंब कर्मचारी को हटाने का निर्देश दिया।

मंत्री श्री ठाकुर मेराल प्रखंड के अंतर्गत चेचरिया पंचायत के प्राथमिक विद्यालय बाजूडीह, ग्राम बोकेया में लगन ठाकुर के घर के समीप, उमवि खोलरा, शिव मंदिर परिसर, अटौला, पंचायत भवन चेचरिया तथा ग्राम छपरवार खुर्द में दुर्गा मंडप के समीप कार्यक्रम आयोजित कर जनता से रूबरू हुए। मंत्री ने जनसमस्याओं को सुना एवं ऑन द स्पॉट निष्पादन भी कराया। इस दौरान लोगों ने सड़क, पेयजल की समस्या सुनाई। मंत्री श्री ठाकुर ने तत्काल खराब पड़े चापाकल व जल मीनार दुरुस्त कराते हुए चार दिनों के अंदर जलापूर्ति प्रारंभ कराने का निर्देश दिया। इस दौरान ग्रामीणों ने कई स्थानों पर छठ घाट, चबूतरा, नाली, अनाथ पेंशन, प्रजापति टोला पर मिट्टी-मोरम पथ निर्माण, राप्रावि बाजुडीह में शौचालय, मंदिर के समीप नाली निर्माण, प्रावि बोकेया में पेयजल की समस्या आदि से ग्रामीणों ने मंत्री को रु-ब-रू कराया। चेचरिया में अर्चना देवी ने अपने पति के हत्यारों के खिलाफ ढाई साल बीत जाने के बाद भी कार्रवाई नहीं होने की शिकायत की। मंत्री श्री ठाकुर ने सभी समस्याओं को सूचीबद्ध कराते हुए संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को तत्काल इन सभी समस्याओं के निदान का निर्देश दिया।

मौके पर मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि अब क्षेत्र में कोई भी कार्य अधूरा नहीं रहेगा। मैंने जो वादा किया था उसे एक-एक कर पूरा कर रहा हूं। क्षेत्र में बड़ी से लेकर छोटी सभी विकास कार्यों को किया जा रहा है। कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति राशन, पेंशन से वंचित नहीं रहेगा। मंत्री ने कहा कि हर घर में नल के माध्यम से स्वच्छ पेयजल पहुंचाने की योजना पर तेजी से कार्य हो रहा है। बहुत जल्द सभी घरों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध होगा। फिलहाल पेयजल की जो समस्या है उसे अविलंब दूर किया जाएगा। मंत्री ने कहा कि यदि दृढ़ संकल्प और मजबूत इच्छाशक्ति हो तो कोई भी समस्या बड़ी नहीं है। सभी गांव की हर समस्या का निदान होगा। आज तक गढ़वा के लोग अपनी मूलभूत समस्याओं के निदान के लिए तरस रहे थे। मैंने गढ़वा की एक-एक समस्या को करीब से देखा है। मैं जनता के घर तक जाकर उनकी समस्याओं का निदान कर रहा हूं। आने वाले समय में किसी भी गांव में कोई समस्या न रहे, इसके लिए वे पूरी ईमानदारी के साथ प्रयास कर रहे हैं। मंत्री ने कहा कि अब तक पूर्व के जनप्रतिनिधियों ने जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर उन्हें उछलने का काम किया है। परंतु अब जनप्रतिनिधि एवं विकास कार्य का मीनिंग बदल चुका है। हर कार्य सही मायने में शत प्रतिशत धरातल पर उतारा जा रहा है। मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि वे जन भावनाओं के साथ खेलने का नहीं बल्कि जन समस्याओं को दूर करने का कार्य करते हैं। मौके पर मुख्य रूप से पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता प्रदीप सिंह, जेई सिकंदर कुमार, बीडीओ रामप्रवेश साव, सीओ निकिता बाला, झामुमो के केंद्रीय प्रवक्ता धीरज दुबे, जिला अध्यक्ष तनवीर आलम, सचिव मनोज ठाकुर, हरीलाल चौधरी, संतोष चौधरी, शंभू चौधरी, रविंद्र चौधरी, देव कलिया देवी, मंजू देवी, प्रभा देवी, गीता देवी, मीना देवी, गंगा राम, राजेश्वर चौधरी, अमित कुमार ठाकुर, मुनेश्वर ठाकुर, अशोक विश्वकर्मा, धर्मेंद्र पाल, ऋषि पाल, अयोध्या पाल धनवंत पाल, सत्यदेव सिंह, लाल बिहारी प्रजापति, अशोक प्रजापति, मोहन राम, मंगर राम, दिलीप सिंह, गुना प्रजापति सहित काफी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

संक्षिप्त

भालू ने वृद्ध को किया घायल

भंडरिया (गढ़वा)। भंडरिया थाना क्षेत्र के हेसातु गांव में शनिवार को लगभग 11 बजे दिन में एक जंगली भालू ने हेसातु गांव के ही चमरु कोरवा पिता स्व. लहरु कोरवा उम्र 59वर्ष को हमला कर गंभीर रुप से घायल कर दिया। घायल चमरु कोरवा को तत्काल उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भंडरिया लाया गया। जहां चिकित्सा कर्मियों के द्वारा प्राथमिक उपचार के घायल की गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल गढ़वा रेफर कर दिया गया है। घायल चमरु कोरवा के सिर का पिछले हिस्से का आधा भाग को भालू ने नोच कर जख्मी कर दिया है। जिससे घायल की स्थिति गंभीर बनी हुई है। केतार पैक्स अध्यक्ष चुनाव में दो प्रत्याशियों ने नाम वापस

केतार (गढ़वा)। श्री बंशीधर नगर प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी सह केतार निर्वाचन पदाधिकारी मनोज कुमार गुप्ता के शनिवार को बताया कि केतार पैक्स प्रबन्धन समिति गठन हेतु अध्यक्ष पद के लिए दो उम्मीदवार मिथलेश कुमार गुप्ता और रवि कुमार रवि चुनाव मैदान में रह गए है। जबकि अमर नाथ जयसवाल और नीतीश कुमार ने अपना नामांकन वापस ले लिया है। केतार पैक्स के अध्यक्ष पद के लिए दोनों उम्मीदवार का चुनाव चिन्ह आवंटन कर दिया गया है। जिसमे मिथलेश कुमार गुप्ता को छतरी छाप तथा रवि कुमार रवि को उगता हुआ सूर्य छाप मिला है। चुनाव चिन्ह मिलते ही दोनों उम्मीदवार चुनाव प्रचार में लग गए है। आगामी चार जुलाई को केतार पैक्स चुनाव का मतदान कराया जाएगा और उसी दिन मतगणना कर प्रत्याशी की घोषणा की जाएगी। केतार पैक्स अध्यक्ष के चुनाव चिन्ह मिलते ही चुनावी सरगर्मी तेज हो गई है।

गाली गलौज, धमकी व जाति सूचक शब्द का लगाया आरोप

चिनिया (गढ़वा)। थाना क्षेत्र के सिगसिगा कला गांव निवासी रामकीसुन कोरवा ने चिनीयां थाने में आवेदन देकर गांव के बाल देव यादव वगैरह पर आरोप लगाया है कि हमे धमकी जाति सूचक शब्द तथा गाली गलौज किया गया है। बताते चलें कि शुक्रवार को गांव के कुछ लोगों द्वारा बालू लदा ट्रैक्टर पकड़ कर चिनिया पुलिस को सूचित किया था। जिसे चिनिया पुलिस द्वारा ट्रैक्टर को जब्त कर चिनिया थाना लाया गया। जिला खनन पदाधिकारी गढ़वा के द्वारा ट्रैक्टर मालिक अजय प्रसाद यादव एवं चालक पर प्राथमिकी दर्ज कि गयी। वहीं इसी मामले में दूसरे पक्ष के रामकिशुन कोरवा द्वारा चिनीयां थाने में आवेदन देकर कहा गया है कि पीएम आवास बनाने के बाद बचे हुए बालु को ट्रैक्टर से सरना स्थल पर लेकर जा रहा था। जिसे रास्ते में बलदेव यादव वगैरह रोककर गाली गलौज एवं धमकी दिया तथा जातिसूचक शब्दों का प्रयोग किया गया। इस संबंध में पूछे जाने पर चिनिया थाना प्रभारी राजबल्लभ कुमार ने बताया कि आवेदन के आलोक में मामले की प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। दोनों मामले प्रकाश में आया है। प्राथमिकी दर्ज की गई है। तथा विधि संगत कार्रवाई की जा रही है।

ग्रामीणों की शिकायत के आलोक में सीओ ने निर्माण कार्य को रोका

नवीन मेल संवाददाता

मझिआंव (गढ़वा)। मझिआंव नगर पंचायत के वार्ड नंबर 3 के ब्लॉक रोड स्थित बींद टोला में बनाए जा रहे घर निर्माण कार्य को सीओ के निर्देश पर पुलिस ने रोक दिया। इस संबंध में जानकारी देते हुए सीओ रामजी प्रसाद गुप्ता ने बताया कि उक्त स्थल पर ललित राम के द्वारा खाता संख्या 220 प्लॉट नंबर 91, 92, 93, एवं 94 में रकबा 8डीसमिल में घर बनाया जा रहा था। जिसे बिंद टोला के लोगों की शिकायत पर रोका गया। सीओ ने बताया कि उक्त घर के पीछे बसे हुए बींद समुदाय के लोगों के द्वारा कहा गया कि लगभग 60 साल के पहले से ही लगभग 3 फीट रास्ता से होकर हम सभी मुख्य पथ पर आते जाते रहे हैं। जिसे ललित राम के द्वारा बंद करते हुए घर बनाया जा रहा है। हमलोगों का बाहर निकलने के लिए वहीं एक मात्र रास्ता है। उसे भी ललित राम के द्वारा घर बनाकर उसे बंद किया जा रहा है। इसकी लिखित शिकायत देकर न्याय की गुहार लगाई गई थी। बताया कि शनिवार को भी घर बनाते समय इसकी सूचना मिली।

बताया जाता है कि शिकायत के आलोक में सीओ श्री गुप्ता के द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए दोनों पक्षों को नोटिस देकर तत्काल घर निर्माण पर रोक लगाने का निर्देश दिया गया। सीओ ने कहा कि 3 जुलाई को उक्त भूमि का सीमांकन किया जायेगा। ललित राम को सख्त हिदायत देते हुए कहा गया कि घर निर्माण कार्य सीमांकन होने तक पूर्ण रुप से बंद रहेगा। इधर इस संबंध में घर बना रहे ललीत राम का कहना है कि वे अपने रैयती जमीन में घर बना रहे हैं। जबकि बगल में स्थित राम बिलाश प्रसाद का कहना है कि वे पूर्व से ही डेढ़ फीट जमीन रास्ता के लिए छोड़ें थे। लगभग तीन फीट रास्ता पूर्व से ही चला आ रहा है। सब मिलाकर लगभग साढ़े चार फीट रास्ता था। जिसे बंद किया जा रहा है।

बिजली की समस्याओं को लेकर कनीय अभियंता को मांग पत्र सौंपा

मझिआंव (गढ़वा)। नगर पंचायत क्षेत्र के सभी वार्डों में बिजली विभाग के पदाधिकारियों के मनमाना रवैया के कारण उपभोक्ताओं को हो रही परेशानी के संबंध में कांग्रेस ओबीसी प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष मारुति नंदन सोनी के नेतृत्व में उपभोक्ताओं ने विद्युत सबस्टेशन में जाकर कनीय अभियंता कमल कुमार को मांग पत्र सौंपा। इस दौरान श्री सोनी ने कनीय अभियंता को बिजली की अनियमित आपूर्ति एवं पोल तार के अभाव में बांस बल्ली पर बिजली जला रहे उपभोक्ताओं की परेशानियों से अवगत कराया। साथ ही कहा कि नगर पंचायत क्षेत्र के ज्यादातर वार्डो में बिजली का तार, पोल, ट्रांसफार्मर, जर्जर तार की बहुत बड़ी समस्या है। इतना ही नहीं पूर्व से बने घरों के ऊपर से गुजर रहे 11,000 बिजली के तार से लोगों को हमेशा जान का खतरा बना रहता है। इसको अविलंब हटा दिया जाये। साथ ही उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि उपरोक्त समस्याओं को तत्काल निष्पादन नहीं किया गया तो बिजली विभाग के खिलाफ मझिआंव विद्युत सबस्टेशन के साथ ही जिला ऑफिस में भी ताला बंद किया जाएगा।

मिलेनियम का छात्र शशि कुमार आईआईटी में सफल

श्री बंशीधर नगर (गढ़वा)। सीबीएससी से मान्यता प्राप्त टेन प्लस टू सीनियर सेकेंडरी मिलेनियम पब्लिक स्कूल का छात्र शशी कुमार ने आईआईटी जेईई एडीभी एआईआर 8384 कैटेगरी 1800 लाकर विद्यालय सहित जिले का नाम गौरवान्वित किया। शनिवार को विद्यालय परिसर में शशि कुमार को भव्य रूप से सम्मानित किया गया। शशि कुमार बचपन से ही मेधावी की छात्र रहा है। शशि कुमार ने कहा कि चयनित होने का श्रेय अपने विद्यालय के शिक्षक एवं माता-पिता को देता हूं। जो मुझे हमेशा मार्गदर्शक रहे हैं। ज्ञात हो कि इस विद्यालय के छात्र-छात्राएं मेडिकल, इंजीनियरिंग, ज्यूडिशियल, डिफेंस, फैशन, रेलवे, बैंकिंग जैसे क्षेत्रों में सर्वोच्च पदों पर सुशोभित एवं अनेकों छात्र-छात्राएं अध्ययन कर रहे हैं। जिसका कारण विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण आधुनिक शिक्षा है। इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक मुमताज राही ने कहा कि विद्यालय के छात्र-छात्राएं शिक्षा के क्षेत्र में नया इतिहास रखेंगे। सम्मान समारोह में शिक्षक नागेंद्र प्रसाद सिंह, अनेश कुमार यादव, अखिलेश पांडेय, रविशंकर चौबे, जय प्रकाश ठाकुर, सूरज तमंग, अजित पांडेय, शाहिद अंसारी, मनोज कुमार, ऋषिकांत श्रीवास्तव, सहित छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

ट्रांसफार्मर 6 महीने से खराब उपभोक्ताओं में आक्रोश

डंडई (गढ़वा)। प्रखंड क्षेत्र स्थित तसरार गांव के भौराह टोला पर लगा ट्रांसफार्मर पिछले 6 माह से खराब होकर पड़ा है। वहां के ग्रामीणों को बिजली नहीं मिल पा रहा है। उमस भरी गर्मी में वे सभी रात गुजारने को विवश हैं। मामले को लेकर खासकर बिजली उपभोक्ताओं में आक्रोश व्याप्त है। बिजली उपभोक्ता रामचंद्र राम, गौतम कुमार, जुनैद अंसारी, राजेश तिवारी, संतोष विश्वकर्मा, जमीर उद्दीन अंसारी इत्यादि लोगों ने बताया कि हम लोगों के टोले पर लगा ट्रांसफार्मर सिर्फ शोभा बनकर रह गया है। उक्त ट्रांसफार्मर को खराब हुए 6 महीनों से भी अधिक दिन का समय बीत गया लेकिन अभी तक उसकी मरम्मती नहीं हो पाई है। उपभोक्ताओं ने बिजली कर्मियों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कहा कि प्रखंड के पावर हाउस में जितने भी लाइनमैन हैं उनके द्वारा जानबूझकर हम लोगों के टोले का ट्रांसफार्मर को ठीक नहीं किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मामले को लेकर हम सभी कई बार विभाग के सहायक अभियंता के पास लिखित शिकायत कर मामले की जानकारी दिये। लेकिन आज तक उनके द्वारा भी कोई पहल नहीं किया गया। यहां तक की खराब पड़े ट्रांसफार्मर की मरम्मत कराने की बात तो दूर उनके द्वारा उल्टे में हम लोगों के ऊपर केस दर्ज कराने की धमकी भी दी जाती है। उपभोक्ताओं ने जानकारी देते हुए बताया कि हम लोगों के घर में कई तरह के तकनीक उपकरण पड़े हैं लेकिन बिजली के अभाव में उसका उपयोग हम सभी नहीं कर पा रहे हैं। पूरा गर्मी के मौसम में हम सभी अपने-अपने घर के बाहर चारपाई निकालकर रात गुजारने का काम किये। मोबाइल को चार्ज कराने में भी हम लोगों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी इस घर तो कभी उस घर में हम सभी 6 महीने से अपना-अपना मोबाइल चार्ज कराने का काम कर रहे हैं। इस बीच हम सभी में कई लोगों की मोबाइल भी चोरी हो गई है। उपभोक्ताओं ने कहा कि सप्ताह दिन के अंदर अगर विभाग की ओर से ट्रांसफार्मर को ठीक नहीं कराया जाता है तो बेहतर होता कि उक्त ट्रांसफार्मर को विभाग अपने पास ले जाता। इस दौरान विभागीय पदाधिकारी व कर्मियों पर संदेह जताते हुए उपभोक्ताओं ने कहा कि प्रखंड के सुदूरवर्ती पंचायत का टोला होने के कारण काश उक्त लोगों के द्वारा हम लोगों के ट्रांसफार्मर को ठीक नहीं किया जा रहा है।

आस्था

चिंता से विनाश होता है, जबकि चिंतन से विकास होता है

मानव को तीनों ऋण से मुक्त होना चाहिए : जीयर स्वामी

नवीन मेल संवाददाता

श्री बंशीधर नगर। मनुष्य को चिंता नहीं चिंतन करनी चाहिए। चिंता से विनाश होता है, जबकि चिंतन से विकास होता है। चिंता ह्रास का कारण बनता है और कोई परिणाम नहीं दे पाता है। जीयर स्वामी ने सुखदेव जी की जन्मोपरांत तप के लिए वन गमन प्रसंग की चर्चा करते हुए कहा कि संन्यासी चार प्रकार के होते हैं, कुटीचक, बहुदक, हंस और परमहंस । कुटीचक संयासी गृहस्थ जीवन के अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन के बाद घर में रहते हुए निर्लिप्त रहते हैं। बहुदक भी कुटीचक के समान होते हैं। हंस संन्यासी दुनिया को नश्वर मान दुनिया में रहते हैं। जैसे-कमल, पानी में रहते हुए भी जल के प्रभाव से मुक्त रहता है। परमहंस सन्यासी दुनिया के किसी विषय वस्तु से सरोकार नहीं रखता। बल्कि स्थित प्रज्ञ की स्थिति में रहता है। उन्होंने कहा कि हर काल में समाज संचालन के नियम-कायदे विभिन्न ऋषियों एवं शासकों द्वारा निर्धारित किए जाते रहे हैं। जैसे मुगलकाल, अंग्रेजी शासन और स्वतंत्रोत्तर भारत के कानून आदि। इसी तरह ऋषियों द्वारा भी त्रेता, सत्युग, द्वापर और कलयुग में नीति निर्धारण किये गये हैं जिन्हें स्मृति कहते हैं।

कलियुग में पराशर स्मृति मान्य है।

पराशर स्मृति के अनुसार सभी वर्ण के लोग अपने अनुकूलता के अनुसार जीविकोपार्जन करने के लिए स्वतंत्र हैं। स्वामीजी ने कहा कि मनुष्य जन्म के साथ ही तीन ऋणों मातृ-पितृ ऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण से युक्त होता है। मातृ-पितृ ऋण से उऋण (ऋणमुक्त) होने के लिए माता-पिता की जीवनपर्यन्त सम्यक प्रकार से सेवा और मृत्योपरांत श्राद्ध एवं पिंडदान से मुक्ति मिलती है। यज्ञ, पूजा एवं भंडारा से देव ऋण से मुक्ति मिलती है। जबकि सद्ग्रंथों के नियमित अध्ययन से ऋषि ऋण से व्यक्ति उऋण होता है। तीनों ऋणों से उऋण होनेवाला ही पुत्र कहलाने का हकदार है। उन्होंने कहा कि तीनों ऋण से मुक्ति पाने वाला परम धाम को सहज ही प्राप्त कर लेता है। स्वामी जी ने कहा कि कलियुग की आयु 4 लाख 32 हजार वर्ष, द्वापर की आयु 8 लाख 64 हजार, त्रेता की 12 लाख 96 हजार और सतयुग की आयु 17 लाख 28 हजार वर्ष है। कलियुग में अभी 6 हजार वर्ष ही बीता है। उन्होंने कहा कि संत और ईश्वर से कुछ भी छुपाना नहीं चाहिए बल्कि आर्तभाव से स्पष्ट करनी चाहिए। विभीषण ने अपने को राक्षस कुल में जन्मा दशानन का भाई बताया और प्रभु ने उन्हें सहर्ष स्वीकार किया।

उपायुक्त ने दुग्ध संग्रहण एवं शीतल केंद्र का लिया जायजा

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार

उपायुक्त भोर सिंह यादव ने चंदवा प्रखंड अंतर्गत स्थित बनहरदी दुग्ध उत्पादक प्राथमिक सहयोग समिति लिमिटेड में दुग्ध संग्रहण एवं शीतलक केंद्र का निरीक्षण कर हो रहे कार्यों का जायजा लिया गया। इस दौरान उपायुक्त ने दुग्ध की गुणवता की जांच कर विधि व्यवस्था से अवगत हुए। उपायुक्त ने दुग्ध संघ से जुड़े किसानों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने किसानों को किए जाने वाले भुगतान तथा नियमित रूप से प्राप्त होने वाले दुग्ध की मात्रा के बारे में विस्तार से जानकारी लेते हुए

आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उपायुक्त को दुग्ध की खरीद बिक्री में जेएमएफ प्रबंधन की भूमिका के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया गया कि बनहरदी दूध संग्रह केंद्र में जेएमएफ किसान द्वार दूध की खरीददारी करती है एवं महीने में 3 बार दूध का भुगतान किसान खाते में करती है। 1 से 10 तक का कुल दूध का भुगतान 15 तारीख तक। 11 से 20 तक का भुगतान 25 तारीख तक एवम 21 से 30 तक का भुगतान 5 तारीख तक किसानों के खाते में जाती है।

इस दौरान उपायुक्त ने संबोधित करते हुए कहा कि पशुपालक दुधारू पशुओं को विटामिन मिनरल सहित समुचित पोषण का ख्याल करें, तो कम खर्च में अधिक दूध का उत्पादन कर सकते हैं। पशुपालक अच्छी नस्ल की गाय एवं भैंस की प्रजाति पर ध्यान दें।

पशु पालक दूध का अधिक उत्पादन के लिए पशुओं की संख्या बढ़ाने से ज्यादा पशुओं के पोषण पर ध्यान दें। गाय के अच्छे स्वास्थ्य के लिए गाय को हरा चारा खिलाए। आगे उन्होंने कहा कि दुधारू पशुओं के पोषण के लिए समुचित विटामिन कैलसियम एवं मिनरल दें। साथ ही गव्य विकास विभाग के द्वारा विभिन्न योजनाएं संचालित है आप सब उसका लाभ लें। उपायुक्त ने जिला पशुपालन पदाधिकारी सह जिला गव्य विकास पदाधिकारी को पशुओं का नियमित टीकाकरण कराने एवं पशुओं का इन्शुरेन्स कराने का निर्देश दिया। जिला सहकारिता पदाधिकारी ने ग्रामीणों से दुग्ध उत्पादक प्राथमिक सहयोग समिति से जुड़ने का आग्रह किया। जिला गव्य विकास पदाधिकारी ने गव्य विकास विभाग के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे जानकारी दिया ' उन्होंने बताया कि सहकारी समिति से जुड़े दुग्ध उत्पादकों को 75 % अनुदान पर 5 गाय एवं 10 गाय देने की योजना है। इसके अलावा के पशुपालकों के लिए डीप बोरिंग की भी योजना है। आगे उन्होंने कहा कि गाय के अच्छे स्वास्थ्य एवं ज्यादा दुग्ध उत्पादन के लिए गाय को हरा चारा खिलाना चाहिए।

विल्सन का नवोदय विद्यालय में हुआ चयन

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार

चिल्ड्रेन पाराडाइज आवासीय विद्यालय के छात्र विल्सन कुमार का चयन नवोदय विद्यालय में हुआ है। आवासीय विद्यालय के शिक्षक ललन कुमार ने बताया कि विल्सन अति सुदूरवर्ती क्षेत्र मनिका प्रखंड के बरवइया पंचायत का रहने वाला है, विल्सन चिल्ड्रेन पाराडाइज आवासीय विद्यालय में रह कर तैयारी कर रहा था। नवोदय विद्यालय के परिणाम घोषित होने के पश्चात विल्सन का चयन नवोदय विद्यालय में हुआ है। विल्सन का

नवोदय विद्यालय में चयन होने से विद्यालय में हर्ष का माहौल है एवं शिक्षकों शिक्षिकाओं ने विल्सन के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

भू-माफियाओं और अंचल कर्मियों का कारनामा

फर्जी दस्तावेज से बेच दी जमीन

आदिवासी की जमीन का फजीर्वाड़ा कर गैर आदिवासी को बेच डाला।

दाखिल खारिज कर मालगुजारी रसीद भी निर्गत कर दिया गया।

मामला चंदवा के वर्तमान मुखिया रंजीत उरांव के पूर्वज के नाम खतियानी जमीन का है।

नवीन मेल संवाददाता। चंदवा

अंचल क्षेत्र में प्रतिदिन एक से बढ़कर एक जमीन से संबंधित गड़बड़ी का मामला प्रकाश में आ रहा है। भू-माफिया और कार्यालय कर्मी दस्तावेजों के साथ छेड़छाड़ कर कहीं रकबा को घटा बढ़ा दे रहे हैं तो कहीं आदिवासी जमीन को ही गैर आदिवासी बना कर गैर आदिवासियों के नाम दाखिल खारिज कर उनके नाम रसीद भी जारी कर दिया जा रहा है। इसी तरह का एक मामला प्रकाश में में आया है। चंदवा पूर्वी के वर्तमान मुखिया के पूर्वज रतिया उरांव, भुटुवा उरांव, टुम्पा उरांव वगैरह के नाम से मुख्य सड़क एनएच 75 पर साई नर्सिंग होम के सामने खतियानी आदिवासी भूमि खाता 223 प्लाट 2025,2026 को भू-माफिया और कार्यालय कर्मियों के गठजोड़ से जमीन को गैर आदिवासी बना कर सन 1993 के आस पास ही गैर आदिवासी को बिना परमिशन के केवाला करवा दिया गया है। इतना ही नहीं बजाप्ते दाखिल खारिज कर मालगुजारी रसीद भी निर्गत कर दिया गया है। मामला तब प्रकाश में आया जब केवाला धारक उक्त जमीन पर मापी करवाने के साथ जमीन पर दखल करने का प्रयास किया। उसी समय किसी व्यक्ति ने मूल रैयत को जमीन मापी किए जाने की सूचना कर दी। सूचना पर पहुंचे खतियान धारक रैयत के पहुंचते ही बहस के बाद गैर आदिवासी वहां से भागते बना।

क्या कहते हैं वर्तमान मुखिया सह रैयत रंजीत उरांव

यहां भू-माफियाओं और अधिकारियों कर्मचारियों की मिलीभगत से हमारे पूर्वजों की पुश्तैनी जमीन को गैर वाजिब तरीके से सामान्य जमीन बना कर गैर आदिवासीयों को बेच दिया गया है। हमारे किसी भी पूर्वज ने उक्त प्लॉट पर जमीन नहीं बेचा हैं। बेचेंगे भी तो आदिवासी के पास ही ,गैर आदिवासी के नाम केवाला और दाखिल खारिज होना ही अपराध है इसकी कानूनी तरीके से जांच पड़ताल करवाने की मांग करूंगा। दोषी पाए जाने वाले लोग सलाखो के पीछे होंगे। उपरोक्त मामले के बाबत अंचलाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी विजय कुमार ने कहा है कि यह मामला मेरे संज्ञान में नहीं है,जांच के बाद ही कुछ कहा जा सकता है।

जगदम्बा सरस्वती मां की 58वां पुण्यस्मृति दिवस मनाई

लातेहार। प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरी विश्व विद्यालय धर्मपुर (पम्पूकल) में 58वां जगदम्बा सरस्वती मां की पुण्य स्मृति दिवस मनाई गई। सेवा केंद्र संचालित बी. के. अमरमणी बहन ने अपने मामा की जीवनी पर प्रकाश डाली । उन्होंने कहा कि मम्मा बहुत ही निरहंकारी थी । उनका मानना था कि जो कर्म हम करेंगे।

मनिका के नामुदाग पंचायत में भाजपा ने चलाया जनसंपर्क अभियान

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार।

मनिका प्रखंड स्थित नामुदाग पंचायत में दिन शनिवार को भाजपा जिला अध्यक्ष सह पूर्व विधायक हरिकृष्ण सिंह विभिन्न विभिन्न गांवो में महाजनसंपर्क अभियान के तहत हर घर जाकर कार्यकताओं से मिले और जनसंघ काल से अभी तक भाजपा को सींच रहे वैसे अभिभावको को मुख्य रूप से लातेहार भाजपा जिला अध्यक्ष सह मनिका विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक हरीकृष्ण सिंह के द्वारा सेठ प्रसाद यादव एवं राजेश्वर प्रसाद यादव को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। मौके पर मंडल ओबीसी जिला सोशल मीडिया प्रभारी अमरदीप कुमार,मंडल महामंत्री मंदीप कुमार,एसटी मोर्चा जिला महामंत्री संदीप उरांव,एसटी मोर्चा के मंडल अध्यक्ष बिरजू सिंह, नंदन कुमार ,कुंदन कुमार विकास साहू, सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त

भाजपा मंडल अध्यक्ष ने की मृतक रोबिन उरांव के परिजनों को आर्थिक मदद

बालूमाथ। थाना अंतर्गत भगिया पंचायत के पंडरिया ग्राम में विंद्र उरांव उर्फ रोबिन उरांव का पंडरिया डैम में डूबने से मृत्यु हो गए थी। जिसके मृतक के घर मरंगलोईया में पहुंच उसके दशकर्म के दिन भाजपा मंडल अध्यक्ष लक्ष्मण कुशवाहा ने सहयोग के रूप में 50 किलो चावल एवं 1500 नगद राशि दे कर पीड़ित परिवार को सहयोग की। मौके पर लक्ष्मण कुशवाहा ने कहा कि मानवता की सेवा करना ही उनका एक मात्र लक्ष्य है। कहा लोगों की सेवा करने से सुकून मिलता है । मौके पर उपस्थित भाजपा मंडल अध्यक्ष लक्ष्मण प्रसाद कुशवाहा,अनूप वर्मा, सुरेश महतो, ईश्वरी माता ,अमानुल्ला सतार मिया, जगन्नाथ जाधव नरेश जाधव चोटिया उरांव, सुरेंद्र उरांव, सुखदेव यादव,, सुरेंद्र उरांव, दिनेश प्रसाद कैलाश राणा ,जागे उरांव, लक्ष्मीकांत महतो, सत्तार अंसारी कयूम अंसारी राजेश महतो समेत सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहे।

मनिका प्रखंड में अज्ञात बाइक के धक्के से एक व्यक्ति हुआ घायल

लातेहार। मनिका प्रखंड क्षेत्र के सिंजो निवासी मनोज प्रसाद गुप्ता अज्ञात बाइक के धक्के से विगत शुक्रवार की रात्रि लगभग 11:00 बजे गंभीर रूप से घायल हो गए थे। घटना की सूचना मिलते ही अमर पूजा समिति के सदस्य ईश्वरी प्रसाद, श्याम प्रसाद, विकास कुमार ,मनोज यादव ,गोलू सरदार ,अखिलेश गिरी ,समाजसेवी रमेश पासवान समेत अन्य लोगों ने घटनास्थल पर पहुंचे और घायल व्यक्ति को प्राथमिक उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मनिका लाए जहां पर चिकित्सक डॉ उमेश कुमार और सत्येंद्र कुमार के द्वारा घायल युवक को इलाज की गई वही बेहतर इलाज के लिए घायल युवक को लातेहार सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया , अमर पूजा समिति के सदस्यों व समाजसेवी रमेश पासवान ने आपस में चंदा कर घायल मनोज प्रसाद गुप्ता को इलाज के लिए पैसा दिए आपको बताते चलें कि घायल व्यक्ति का पैर फैक्चर हो गया है।

बिजली के चपेट में आने से मवेशी की मौत

टंडवा (चतरा): टंडवा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत मिश्रौल गांव के टिटलिला जंगल में शनिवार को 11 हजार विद्युत प्रवाहित तार के चपेट में आने से मो. जलाल के एक मवेशी की मौत घटना स्थल पर हीं हो गई। घटना की जानकारी देते हुए पीड़ित ने बताया कि जंगल में घास चरने के दौरान खंभे के नीचे झूलते विद्युत प्रवाहित अर्थिंग तार के चपेट में आने से उक्त घटना घटी है। वहीं ग्रामीणों की मानें तो पिछले कई महीनों से वहां तार झूल रहा है। वहीं पीड़ित ग्रामीण व मुखिया सुबेश राम ने संबंधित विभाग से समुचित मुआवजे की मांग की है।

अंचल का वनाधिकार समिति से अनापत्ति प्रस्ताव लेने का प्रयास विफल

चतरा। शनिवार को जिले के टंडवा अंचल अंतर्गत सीसीएल की आम्रपाली कोल परियोजना क्षेत्र में रेलवे साइडिंग निर्माण हेतु वनाधिकार समिति से अनापत्ति प्रस्ताव लेने का तीसरा प्रयास भी विफल हो गया। मिली जानकारी के अनुसार अंचल कार्यालय द्वारा जारी आदेश के आलोक में बैठक कराने पहुंचे राजस्व कर्मियों के पास कोई भी ग्रामीण व जनप्रतिनिधि नहीं पहुंचे। जिससे उन्हें बिना बैठक कराए बैरंग लौटना पड़ा। लोगों की मानें तो सीसीएल प्रबंधन व अंचल प्रशासन ग्रामीणों की शंकाओं को दूर करने में अबतक पूरी तरह से विफल रहने के कारण उन्हें लगातार विरोध का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों द्वारा पूर्व में निर्गत पत्रांक 614 को निरस्त करते हुए पत्र जारी करने, वनाधिकार समिति की सूची उपलब्ध कराने व कथित तौर पिछले बैठक में फर्जी हस्ताक्षर व मुहर का प्रयोग कर प्रस्ताव पारित करने वालों पर कठोर कार्रवाई करने की मांग की गई हैं।

बरही में रेलवे ट्रैक पर मिला विक्षिप्त का शव

बरही । उज्जैन रेलवे ट्रैक से एक विक्षिप्त का लाश बरामद हुआ है. जानकारी देते हुए इंस्पेक्टर रोहित कुमार सिंह ने बताया कि घटना शनिवार की दोपहर की है. शव ग्रामीणों के द्वारा देखी गई. जिसकी सूचना पर वह दल बल के साथ पहुंकर शव को कब्जे में लेकर हजारीबाग पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया. शव की पहचान नहीं हो सकी है, मृतक की उम्र 50 वर्ष के करीब है. शव शीत गृह में सुरक्षित रखा गया है.

नेतरहाट विद्यालय में द्वितीय सोपान स्काउट गाइड के प्रशिक्षण का हुआ समापन

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार

नेतरहाट आवासीय विद्यालय नेतरहाट में स्टाउट एवं गाइड के द्वितीय सोपान प्रशिक्षण शिविर का शनिवार को समापन हो गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में नेतरहाट आवासीय विद्यालय के प्राचार्य डा प्रसाद पासवान ने शिरकत की एवं प्रशिक्षण ले रहे बच्चों को प्रशिक्षण में सिखाए गए बातों को कार्यशैली में उतारने की बात कही। डा पासवान ने कहा कि कार्य में दक्षता लाने के लिए प्रशिक्षण जरूरी है। उन्होनें कहा कि प्रशिक्षण का मुख्य उदेश्य बच्चों को सार्वांगिन विकास है। प्रशिक्षण में बच्चों को प्रार्थना,गीत,इतिहास,रस्सी की गांठ,टेन्ट पिचिंग,गजट समेत अन्य महत्वपूर्ण बिंदूओं के बारें में बारिकी से बता कर प्रशिक्षित किया गया। मौके पर शिविर प्रधान मोहम्द शाकिर अंसारी, जिला संगठन आयुक्त खूंटी जिला सहयोगी हरेन्द्र कुमार प्रजापति,रविरंजन, अभिशेख सिन्हा,रवि प्रकाश सिंह, स्काउट प्रशिक्षक ओम प्रकाश, शिशुपाल महतो,राधा कुमारी समेत प्रशिक्षण ले रहे बच्चें मौजूद थे।

बकरीद पर्व को लेकर टंडवा में हुई शांति समिति की बैठक

नवीन मेल संवाददाता। चतरा

शनिवार को टंडवा व मयूरहंड थाना परिसर में बकरीद पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित की गइ। टंडवा थाने में आयोजित बैठक की अध्यक्षता बीडीओ रंथु महतो व संचालन पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी विजय कुमार सिंह ने किया। बैठक में शामिल दोनों समुदाय के प्रबुद्ध लोगों व जनप्रतिनिधियों द्वारा आपसी प्रेम और सौहार्दपूर्ण तरीके से बकरीद पर्व मनाने की बात कही गई। बताया गया कि 29 जून को मुस्लिम धर्मावलंबियों द्वारा सुबह सात बजे ईदगाह व मस्जिदों में नमाज अदा की जाएगी। इसके पश्चात लोग अपने घरों में कुबार्नी देंगे। वहीं इस दौरान प्रखंड क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनी रहे इसको लेकर विचार-विमर्श किया गया। इंस्पेक्टर श्री सिंह ने बताया कि उपद्रवियों व असामाजिक तत्वों पर पुलिस की पैनी नजर रहेगी। उन्होंने आमलोगों से किसी भी तरह के संवेदनशील सूचना अविलंब थाना में देने का आग्रह किया। मौके पर सीओ विजय कुमार दास, बीस

सूत्री अध्यक्ष सुभाष यादव, मुखिया संघ के जिलाध्यक्ष अरविंद सिंह, जिप सदस्या देवन्ति देवी, दासो देवी, उपेन्द्र पांडेय, विकास पाण्डेय, रफुल अंसारी, मो. सनाउल्लाह, रौशन अंसारी आदि मौजूद थे। वहीं मयूरहंड थाना परिसर में अयोजित बैठक की अध्यक्षता बीडीओ साकेत कुमार सिन्हा तथा संचालन थाना प्रभारी राम वृक्ष ने किया। कहा कुबार्नी के बाद अवशेष को जहां तहां नही फेके और शांति पूर्वक त्यौहार मनाएं। बीडीओ ने कहा आपसी सौहाद्र से शांतिपूर्वक पर्व मनाएं। कहा शांति समिति की बैठक में एक दूसरे की समस्या का समाधान होता है। प्रखंड प्रशासन की शुभकामना आप सबों के साथ रहेगी। दूसरे प्रदेश में हो रही सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने वाले भ्रामक पोस्ट से परहेज करें।

बैठक में मुख्य रूप से पुलिस अवर निरीक्षक अनिरुद्ध सिंह, श्री राम पंडित, मुकेश कुमार, सहायक अवर निरीक्षक शशि कांत ठाकुर, विधायक प्रतिनिधि अनिल कुमार सिंह, सुधीर सिंह, अजय सिन्हा, पंचायत समिति सदस्य रामटहल गुप्ता, सलीम गुरुजी, मुबारक अंसारी, मोइन अंसारी, मोहम्मद इस्माइल अंसारी, मोहम्मद मुख्तार,हदीश अंसारी, आबिद अंसारी आदि मौजूद थे।

भाजपा प्रदेश प्रभारी ने मयूरहंड व सिमरिया में चलाया जनसंपर्क अभियान

मयूरहंड/सिमरिया(चतरा)। राज्य सभा सांसद सह भाजपा के प्रदेश प्रभारी लक्ष्मी कांत वाजपेई ने शनिवार को मयूरहंड व सिमरिया प्रखंड में जनसंपर्क अभियान चलाया। मयूरहंड प्रखंड पहुंच कर जनसंपर्क चलाया। श्री वाजपेई ने केंद्र में मोदी सरकार के नव वर्ष पुरा होने पर देश के विकास के लिए किए गए कार्यों को जन जन तक पार्टी नेताओं पहुंचाने की बात कही। इस दौरान मयूरहंड, परोरिया व कुम्हारी गांव में नए सदस्य बनाकर सभी को अंग वस्त्र पहनकर स्वागत करते हुए राज्य सभा सांसद ने नंबर पर मिसकॉल कर सदस्यता दिलाया। अभियान में विधायक किसुन कुमार दास, पूर्व विधायक जयप्रकाश भोक्ता, मंडल अध्यक्ष

विक्रम कुमार सिंह, सांसद प्रतिनिधि पिंटू सिंह, संजय कुमार सिंह, उज्ज्वल दास, मृत्युंजय कुमार सिंह, राजेश कुमार सिंह उर्फ बबलू सिंह, बाबूवाजी उर्फ विजय कुमार सिंह, अयोध्या पांडेय आदि शामिल थे। वहीं प्रदेश प्रभारी लक्ष्मी कांत वाजपेई ने सिमरिया प्रखंड पहुंच कर सिमरिया बस्ती एवं चौक पर जनसंपर्क अभियान चलाकर केंद्र में मोदी सरकार के नव वर्ष में किए गए कार्यों की जानकारी आम लोगों को देते हुए नए लोगों को पार्टी के नंबर पर मिसकॉल कर सदस्यता दिलाते हुए सभी को अंग वस्त्र पहना कर स्वागत किया। इस दौरान सिमरिया विधायक के साथ पूर्व विधायक जनार्दन पासवान, मंडल अध्यक्ष दयानिधि सिंह, विनोद बिहारी पासवान, मारुति नंदन, उपेंद्र सिंह, अर्जुन पांडेय सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता शामिल थे ।

पत्नी के हत्यारोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार, भेजा जेल

नवीन मेल संवाददाता। चतरा

सदर थाना क्षेत्र के पाराडीह गांव की ननकी देवी नामक महिला की हत्या लाठी-डंडे से पीट-पीटकर कर दी गई थी। जिसकी गुत्थी पुलिस ने सुलझाते हुए हत्यारोपी उसके पति को गिरफ्तार कर शनिवार को जेल भेज दिया। सदर थाना प्रभारी मनोहर करमाली ने बताया कि इस कांड में पत्नी का हत्यारा उसका पति चरकु भुइयां ही निकला। उन्होंने बताया कि गैर मर्द के साथ उसके पत्नी का नाजायज संबंध था। इसी शक में आरोपी पति ने पत्नी को घर में ही पीट पीटकर कर साक्ष्य को छुपाने के उद्देश्य से आरुदाना जंगल में फेंक दिया था। घटना के बाद से वह फरार चल रहा था। पुलिस को गुप्त सूचना मिली की आरोपी चरकू बस पकड़कर बाहर भागने वाला है। सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए न्यू पेट्रोल पंप स्थित एक यात्री बस से गिरफ्तार किया गया। पुलिस गिरफ्त में आए हत्यारे पति चरकू ने बताया कि हत्या के बाद वह शव को अपने कंधे पर लादकर जंगल में ले जाकर फेंक दिया था। पुछ-ताछ के बाद आरोपी को जेल भेज दिया गया। वहीं आरोपी के निशानदेही पर पुलिस ने हत्या में पयोग किए गए खून लगे डंडे को भी बरामद कर लिया है। अभियान में एसडीपीओ अविनाश कुमार, पुलिस निरीक्षक सह सदर थाना, पुलिस अवर निरीक्षक मनोज पाल के अलावे अन्य पुलिस कर्मी शामिल थे।

प्रधानमंत्री 15 सूत्री कार्यक्रम के तहत विभिन्न प्रस्तावों पर हुई चर्चा

कुडू व किस्को की योजनाओं को पारित किया गया

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा
उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री 15 सूत्री कार्यक्रम के तहत शनिवार को प्रधानमंत्री जन विकास कार्यक्रम में प्रखण्ड किस्को एवं कुडू की ओर प्राप्त प्रस्तावों के पारित कराने हेतु एक आवश्यक बैठक आयोजित हुई। बैठक में सर्वप्रथम किस्को प्रखण्ड की ओर तीन योजनाओं के प्रस्ताव पर विचारोपरांत सर्वसम्मति से पारित किया गया। इनमें किस्को प्रखण्ड मुख्यालय में अल्पसंख्यक छात्राओं के लिए 50 बेड का छात्रावास निर्माण, किस्को प्रखण्ड के ग्राम नवाडीह स्थित मदरसा में अतिरिक्त कमरा एवं चहारदिवारी का निर्माण और प्रखण्ड मुख्यालय में कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेंटर अधिष्ठापन की योजनाएं शामिल हैं।

डीसी ने की आइटीडीए अंतर्गत साईकिल वितरण योजना की बैठक

लोहरदगा। उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण की अध्यक्षता में शनिवार को समेकित जनजाति विकास अभिकरण अंतर्गत साईकिल वितरण योजना की बैठक हुई और सर्वसम्मति से साईकिल वितरण हेतु नामांकित छात्रों की संख्या को स्वीकृति प्रदान की गई। इसमें वित्तीय वर्ष 2021-22 में सभी सरकारी विद्यालयों के वर्ग - 08 में अध्ययनरत कुल 5379 और वर्ष 2022-23 में सभी सरकारी कुडू प्रखण्ड की ओर से प्रस्तावित चार योजनाओं को सर्वसम्मति से पारित किया गया। इनमें प्रखण्ड मुख्यालय में हैण्डलूम उत्पादन ईकाई एवं प्रशिक्षण केंद्र का अधिष्ठापन, कबाड़ का कारखाना और अगरबत्ती, साबुन, सर्फ, मोमबत्ती का कुटीर उद्योग और दो सौ बेड का आवासीय मदरसा निर्माण कार्य की योजना शामिल है। बैठक में सांसद प्रतिनिधि चंद्रशेखर प्रसाद, उप विकास आयुक्त समीरा एस, आईटीडीए परियोजना निदेशक अरविंद कुमार लाल, जिला कल्याण पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी, जिला पंचायती राज पदाधिकारी, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी किस्को एवं कुडू समेत अन्य सदस्यगण उपस्थित थे।

एसपी ने किया चैनपुर थाने का वार्षिक निरीक्षण, दिए कई निर्देश

नवीन मेल संवाददाता।चैनपुर
चैनपुर थाना का जिले के पुलिस कप्तान डॉ एहतेशाम वकारीब ने शनिवार को वार्षिक निरीक्षण किया। पुलिस अधीक्षक ने अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सर्किल इंस्पेक्टर सहित अनुमंडल क्षेत्र के सभी थाना के थाना प्रभारियों की उपस्थिति में थाना अध्यक्ष आशुतोष कुमार सिंह सहित अन्य पुलिस पदाधिकारियों से विभिन्न कांडों के विषय में जानकारी ली तथा विधि व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिया। इससे पूर्व थाना प्रभारी एवं पुलिस बल के द्वारा एसपी को गॉड ऑफ ऑनर दिया गया, एसपी ने पुलिस बल के सभी जवानों का यूनिफार्म सहित कई पहलुओं में बारी-बारी से निरीक्षण किया, निरीक्षण के दौरान एसपी ने थाना के विभिन्न मामलों की गहनता से जांच की निरीक्षण के उपरांत एसपी ने कहा कि सभी थानों में संतोष पूर्ण कार्य हुआ है थाना परिसर की साफ-सफाई एवं पेट्रोलिंग में भी बढ़ोतरी मिली है उन्होंने आगामी त्यौहार बकरीद व सावन के मद्देनजर तैयारियों का जायजा लिया एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए साथ ही उग्रवादी एवं घटना में शामिल लोगों को लेकर छापामारी का भी निर्देश दिया।

सड़क दुर्घटना में बाइक सवार पति-पत्नी घायल

सेन्हा-लोहरदगा: सेन्हा अन्तर्गत ठाकुरबाड़ी के समीप सड़क दुर्घटना में बाइक सवार पति पत्नी घायल हो गये जिसे ग्रामीणो के के मदद से पुलिस द्वारा इलाज के लिये अस्पताल में कराया गया भर्ती। सेन्हा थाना क्षेत्र के लोहरदगा गुमला मुख्य पथ पर सेन्हा ठाकुरबाड़ी के समीप बाइक जे एच 08 ई 9434 अनियंत्रित हो गिर गया जिससे सवार पति पत्नी घायल हो गया। जिसे ग्रामीण व पुलिस के मदद से सेन्हा समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के उपरांत बेहतर इलाज हेतु महिला को सदर अस्पताल लोहरदगा रेफर किया गया। घायल पति पत्नी का पहचान कुडू थाना अंतर्गत जिंगी निवासी 55 वर्षीय अर्जुन साहू तथा पत्नी 50 वर्षीय प्रमिला देवी के रूप में किया गया। अर्जुन साहू ने बताया कि गुमला से अपने घर जिंगी जा रहे थे इसी बीच सेन्हा में बाइक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे बने नाली के ऊँचा घेरा में कुछ दूर से रगड़ाते हुए अनियंत्रित हो बाइक गिर गया। जिससे प्रमिला देवी के सिर एवं बांया हाथ मे गम्भीर चोटें आई है।

संक्षिप्त

युवा सद्भावना मंच ने किया प्रखंड में कार्यक्रमों का आयोजन

कुडू। युवा सद्भावना मंच कुडू के तत्वधान में शनिवार 24 जून को प्रखण्ड के उडुमुडू पंचायत के बारीडीह स्थित मदरसा मुफीदुल इस्लाम एवं पंडरा पंचायत के माराडीह स्थित गांधी मेमोरियल प्लस 2 उच्चय विधालय में कार्यक्रम का आयोजन कर अध्ययनरत छात्रों के बीच सद्भावना का संदेश दिया। इस दौरान मदरसे के बच्चों ने जाति, संप्रदाय, धर्म अथवा भाषा का भेदभाव किए बिना एकता और सद्भावना के लिए कार्य करने की प्रतिज्ञा ली।
मौके पर आपसी भाईचारे पर नज्म सुनाकर लोगों का मन मोह लिया। वहीं एमजीएम प्लस 2 विद्यालय में बुक क्लब एक्टिविटी के तहत छात्र - छात्राओं ने शिक्षा के महत्व विषय पर नाट्य मंचन प्रस्तुत कर शिक्षा के प्रति जागरूक किया और शिक्षा के बिना मानव जीवन अधूरा है, इसलिए सभी को शिक्षित होने का संदेश दिया।
मौके पर कुडू बीडीओ मनोरंजन कुमार, बीस सूत्री अध्यक्ष हाजी सदरूल अंसारी, हाशिम अंसारी सहित शिक्षक और छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

खड़ी बाइक में तेज रफ़्तार बाइक ने मारी टक्कर, दो घायल, रेफर

कुडू : तेज रफ्तार से आ रही बाइक अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे खड़ी दूसरी बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में खड़ी बाइक पर बैठे दो लोग घायल हो गए। जबकि टक्कर मारने वाला बाइक लेकर फरार हो गया। घटना शुक्रवार की देर रात करीब 9 बजे की है। जानकारी के अनुसार कड़ाक गांव निवासी लखन उरांव 26 पिता विष्णुदयाल उरांव और सूरज कुमार यादव 23 पिता स्व नरेंद्र यादव सड़क के किनारे अपनी बाइक पर बैठे थे। तभी तेज रफ़्तार से आरही एक बाइक ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी जिससे दोनों सड़क पर गिर कर गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों द्वारा दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुडू लाया गया जहां स्थिति गम्भीर देख चिकित्सकों ने रिम्स रेफर कर दिया।

जहरीले सांप के दंश से शिक्षक घायल

भंडरा / लोहरदगा । भंडरा के तिलसिरी स्कूल में कार्यरत शिक्षक मंगरा उरांव शनिवार को सुबह एक जहरीले सांप के दंश से घायल हो गये। गंभीर अवस्था में उन्हें सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां चिकित्सकों ने उनकी स्थिति सामान्य बताया है। जानकारी के मुताबिक सुबह में वे लोहरदगा स्थित घर के बाहर बाथरुम जा रहे थे। स्कूल जाने की जल्दबाजी में उन्हें सांप दिखाई नहीं दिया और न ही सर्पदंश का एहसास हुआ। सर्पदंश के करीब दस मिनट बाद पैर में झनझनाहट महसूस हुआ। पैर में सांप काटे जाने का निशान देखे जाने के बाद उन्हें सर्पदंश का पता चला। इसके तत्काल बाद उन्हें सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया।

शराब के नशे में धुत होकर दूसरी बाइक में मारी टक्कर, चार लोग घायल

सेन्हा: बक्सीडीपा के समीप जंगल मे एन एच 143 ए पथ पर दो बाइक के टक्कर में चार लोग घायल हो गये। इलाज के लिये अस्पताल में कराया गया भर्ती। सेन्हा थाना क्षेत्र के बक्सीडीपा जंगल के समीप देर शाम दो बाइक के टक्कर में चार लोग घायल हो गये सभी घायल को इलाज हेतु अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के उपरांत बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल लोहरदगा रेफर किया। घायल की पहचान घाघरा थाना क्षेत्र के गम्हरिया निवासी राजेन्द्र साहू के पुत्र निकेश साहू, बुधमन उराँव के पुत्र छटू उराँव किस्को थाना क्षेत्र के जोरी सहेदा निवासी नीरज साहू तथा सेन्हा निवासी अहद अंसारी के पुत्र जाउल अंसारी के रूप में किया गया। जानकारी के अनुसार निकेश साहू तथा छटू उराँव का प्राथमिक उपचार सेन्हा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में होने के उपरांत सदर अस्पताल लोहरदगा रेफर किया गया। जबकि जाउल अंसारी एवं नीरज साहू को निजी अस्पताल में इलाज कराया गया। घटना की सूचना पर गस्ती दल घटना स्थल पहुंच क्षतिग्रस्त बाइक को जप्त कर घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। बताया जाता है कि गम्हरी एवं किस्को निवासी बाइक जे एच08 डी 8736 से शराब के नशे में धुत होकर लोहरदगा की ओर से गम्हरिया जा रहा था। जाउल अंसारी के बाइक में पीछे से धक्का मार दिया।

लुटेरों को घटना के कुछ घंटे बाद ही पुलिस ने दबोचा

तीन गिरफ्तार, पैसे व देशी कट्टा बरामद

नवीन मेल संवाददाता। कुडू
आदिवासी छात्र संघ कुडू के अध्यक्ष अवधेश उरांव के साथ लूटपाट करने वाले तीन लुटेरों को कुडू पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। इनके पास से लुटे गए पर्स और पांच हजार रु नकद, एक देसी कट्टा और ग्लैमर बाइक बरामद कर लिया है। फिलहाल पुलिस तीनों से पूछताछ कर रही है। मिली जानकारी के अनुसार गिरफ्तार लुटेरों ने वारदात में अपनी संलिप्ता स्वीकारी है। सभी मार्ग में वाहन चालकों के साथ लूटपाट करने वाले गिरोह के सदस्य बताये जा रहे हैं। जानकारी के अनुसार सभी सब्जी वाहनों से लूटपाट की नीयत से वहां जमे थे। इसी बीच अवधेश उरांव के वाहन को देख सब्जी गाड़ी समझ बैठे और घटना को

छात्र संघ अध्यक्ष अवधेश उरांव के साथ भी की है लूटपाट ।

अंजाम दे दिया। अवधेश उरांव ने पुलिस अपने आवेदन में बताया है कि शुक्रवार की रात करीब 7 : 30 बजे अपनी हुंडाइ आई 10 कार से अपने दोस्त की शादी समारोह में शामिल होने जा रहे थे। अंजान रास्ता होने के कारण नाम नगर के एक युवक को बुलाया था जो रास्ता दिखाता हुए बाइक से आगे आगे चल रहा था तभी जोजरो पतरा के समीप ग्लैमर बाइक में सवार हथियार से लैस तीन लोग पहुंचे और खुद को उग्रवादी बताते हुए गाड़ी का लाइट बंद करने बोला और कनपट्टी पर बंदूक रखकर गोली मारने की धमकी देते हुए पैकेट में रखे पर्स जिसमें 5 हजार रु थे लूट लिया और धमकी दी कि किसी को बताया तो सभी का घर जला देंगे।
जानकारी के अनुसार रास्ता दिखाने पहुंचे युवक ने एक लुटेरे की पहचान कैरो हाई स्कूल के अपने सहपाठी के रूप में की थी।

कौशल विकास केंद्र निष्ठा के विरुद्ध शिकायतों की फेहरिस्त

लोहरदगा। मुख्यमंत्री सारथी योजना, साक्षम झारखंड कौशल विकास योजना से संचालित कौशल प्रशिक्षण केंद्र निष्ठा विवादों के घेरे में आ गया है। सेन्हा प्रखंड में संचालित निष्ठा प्रशिक्षण केंद्र की छात्राओं और गार्ड की शिकायत के बाद अब सेंटर के दो ट्रेनर मेघा रानी डे और दीपिका मन्ना ने लोहरदगा उपायुक्त को लिखित आवेदन देकर अपने बकाया मानदेय के भुगतान की मांग किया है। वही प्रशिक्षण केंद्र का इंटरनल माहौल खराब होने की शिकायत की है। पूर्व प्रशिक्षक मेघा रानी ने अपने लिखित आवेदन में बताया कि सेंटर में पुरुष स्टाफ के रहने और इंटरनल माहौल खराब होने की वजह से अपना इस्तीफा दे दिया। वहीं प्रशिक्षक दीपिका मन्ना ने लोहरदगा डीसी को व्हाट्सएप के माध्यम से शिकायत दर्ज किया है।

बकरीद और घूरती रथ को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

नवीन मेल संवाददाता। कैरो
त्योहार ईद उल अजहा व घूरती रथ को लेकर शनिवार को थाना परिसर में अंचलधिकारी कमलेश उरांव, बी डी ओ पवन कुमार महतो, थाना प्रभारी संखनाद उरांव के संयुक्त अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक हुई। मौके पर आपस में मिल जुल कर शांति पूर्वक ढंग से त्योहार मनाने का निर्णय लिया गया। मौके पर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी पवन कुमार महतो ने कहा कि पर्व त्योहार से आपसी प्रेम और सौहार्द को बढ़ावा मिलता है। थाना प्रभारी संखनाथ उरांव ने कहा कि किसी प्रकार के अफवाह पर ध्यान देने की जरूरत नही है। अफवाह फैलाने वाले को बख्शा नही जाएगा। उनपर नियम संगत करवाई की जाएगी।उप प्रमुख मधुलिका रानी ने कहा बकरीद व घूरती रथ को देखते हुए क्षेत्र शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए पुलिस प्रसाशन लगातार गस्ती करे, किसी प्रकार का कोई अनहोनी होने पर प्रसाशन को खबर करे कानून को कभी भी अपने हाथ मे न लें।मौके पर प्रखण्ड बिस सूत्री उपाध्यक्ष बुधवा उराँव, नाजिर आलम खान, विशेश्वर प्रसाद दीन, सुरजमोहन साहू, बजरंग उराँव, अनिल पांडेय, महताब आलम, जमील अख्तर, मो सजाद, बलराम साहू, परवीन साहू, अख्तर अंसारी, इम्तियाज अंसारी, महबूब अंसारी, समीरुदीन अंसारी, परमेश्वर भगत, बिपिन सिंह, मोजहिर अंसारी आदि उपस्थित थे।

बीडीओ ने योजनाओं को पूरा करने का दिया निर्देश

सेन्हा-लोहरदगा। प्रखंड कार्यालय स्थित सभागार में पंचायत सचिव और रोजगार सेवकों के साथ बीडीओ की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित हुआ। आयोजित समीक्षा बैठक में प्रखंड क्षेत्र में संचालित विकास योजनाओं का समीक्षा किया गया। वहीं प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक कुमार चोपड़ा द्वारा मनरेगा, दीदीबाड़ी, प्रधानमंत्री आवास सहित अन्य योजना का समीक्षा करते हुए अपूर्ण योजनाओं को 15 दिन के अन्दर पूरा करने निर्देश दिया। साथ ही बिरसा हरित ग्राम योजना के अन्तर्गत आमबगवानी का लक्ष्य पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। मौके पर बीपीओ निलेन्द्र कुमार, जेई संजीत कुमार, तनु कुमारी, पंचायत सचिव महिपाल उरां व, आनन्द सिंह, भैया भगत, रोजगार सेवक, सहित अन्य उपस्थित थे।

बीडीओ ने की हर घर नल योजना पर बैठक

नवीन मेल संवाददाता। सेन्हा-लोहरदगा
सेन्हा एवं तोड़ार पंचायत में मुख्यमंत्री जल नल योजना का विस्तार को लेकर आयोजित समीक्षा बैठक सम्पन्न बीडीओ ने प्रत्येक पंचायत में शुद्ध पेयजल की होगी व्यवस्था पर डाला प्रकाश। सेन्हा प्रखंड के पंचायत सेन्हा एवं तोड़ार पंचायत के मुखिया जल सहिया के साथ प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक कुमार चोपड़ा घर घर जल नल योजना का विस्तार करने को लेकर बैठक शनिवार को सम्पन्न हुआ। बैठक में बीडीओ अशोक कुमार चोपड़ा ने कहा की सेन्हा एवं बरही में पुर्व से पेयजल आपूर्ति हो रहा था लेकिन अब बंद है इस गांवो में भी घर घर जल नल योजना की व्यवस्था किया जायगा इसके लिए नया जलमीनार बनाने पाइप लाइन लगाने को लेकर चर्चा हुआ। साथ ही बीडीओ अशोक कुमार चोपड़ा ने जल सहिया एवं मुखियाओं को पुर्व में संचालित पेयजल का कनेक्शन लेने वाले की सूची बैंक खाता और रोकड़ पंजी को दिखाने को कहा गया। साथ ही मुखिया तथा जल सहिया से जायजा लेते हुए कहा की जलमीनार कहाँ कहाँ आवश्यकता है उस स्थल का पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कनीय अभियंता से मिलकर स्थल चयन कर प्रखंड कार्यलय को अवगत कराए। उन्होंने कं प्रत्येक पंचायत में घर घर नल लगाने का सर्वे करने का निर्देश दिया।

कार्यक्रम 9 वर्षो के कार्यों को लेकर महाजनसंपर्क अभियान हुई तेज

2024 के चुनाव की तैयारी में जुटी बीजेपी

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा
जिले में भारतीय जनता पार्टी की लोहरदगा लोकसभा महाजनसंपर्क अभियान हुई तेज मुख्यालय से लेकर बूथ स्तर पर बीजेपी के नेता सांसद और कार्यकर्ता लोगो से मिल 9 वर्षो में किए गए केंद्र सरकार के कार्यों का उपलब्धि गांव टोलों तक पहुंचा रहे है। 2024 में फिर से बीजेपी की सरकार बनाने के लिए भारतीय जनता पार्टी के नेता कार्यकर्ता पूरी तरह से जुट गए हैं महाजनसंपर्क अभियान के माध्यम से बीजेपी ने 2024 के चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है और महाजनसंपर्क अभियान के माध्यम से पूरे देश में 13 प्रकार के कार्यक्रम सभी लोकसभा क्षेत्रों में किए जायेंगे जो लोगो को मोदी सरकार की विकास यात्रा को

बताएगी। लोहरदगा में भी महाजनसंपर्क अभियान के माध्यम से झारखंड बीजेपी के कई बड़े नेताओं का जमावड़ा लगा। जिसमें सांसद सुदर्शन भगत, राज्यसभा सांसद सह एसटी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष समीर उरांव, बीजेपी संगठन मंत्री कर्मवीर सिंह, बीजेपी प्रदेश उपाध्यक्ष गंगोत्री कुजूर, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दिनेश उरांव जो 2024 में केंद्र में फिर एक बार बीजेपी सरकार बनाने की लोगो से अपील कर रहे हैं। वही लोहरदगा लोकसभा सांसद सुदर्शन भगत भी लोकसभा क्षेत्र में लगातार महाजनसंपर्क अभियान के माध्यम से कार्यक्रम आयोजित कर मोदी सरकार के 9 वर्षो में किए गए कार्यों का उपलब्धि लोगों तक पहुंचा रहे है।

डीएवी लोहरदगा की छात्रा बोकारो में सम्मानित

लोहरदग्गा। बीआईडी निवासी शिक्षक बिरेंद्र कुमार सिंह की सुपुत्री स्मृति सिंह एमबीडीएवी पब्लिक स्कूल लोहरदगा से कक्षा दसवीं में स्कूल की जिला टॉपर रही है एवं स्टेट में रैंक थर्ड रहा।इस सफलता पर डॉ रामकृष्ण मिशन पब्लिक कंपलेक्स बोकारो के द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया है। उनकी अनुपस्थिति में विद्यालय की शिक्षिका ज्योति पाण्डेय ने प्रमाण पत्र एवं मोमेंटो ग्रहण किया।पढ़ाई के प्रति शुरू से ही लगनशील रही स्मृति सिंह वर्तमान में राजस्थान के कोटा में रहकर मेडिकल की तैयारी कर रही है। संस्था द्वारा सम्मानित किए जाने पर शिक्षक नेता शैलेन्द्र सुमन, प्रदीप कुमार हिंद, राम कुमार वर्मा, सुदामा साहू, अशोक सिंह, सुदामा सिंह आदि ने प्रसन्नता व्यक्ति करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना किया।

NEWS इन ब्रीफ

ह्वाइट हाउस के डिनर में सिर्फ तीन भारतीय कारोबारी आमंत्रित

नई दिल्ली। ह्वाइट हाउस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सम्मान में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा आयोजित राजकीय रात्रिभोज में केवल तीन भारतीय व्यवसायियों मुकेश अंबानी, आनंद महिंद्रा और निखिल कामथ को निमंत्रण भेजा गया था। डेडलाइन की रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए ह्वाइट हाउस राजकीय डिनर की अतिथि सूची में कई मनोरंजन और मीडिया हस्तियां शामिल हैं, जिनमें नेटफ्लिक्स की बेला बजारिया, यूनिवर्सल की डोना लैंगली, निर्देशक एम. नाइट श्यामलन, वासरमैन मीडिया ग्रुप के के.सी. वासरमैन और जेम्स मडरेक शामिल हैं। इसके अलावा सूची में ओपनएआई के सीईओ सैम अल्टमैन, एप्पल के सीईओ टिम कुक और गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई का भी नाम है।

पंजाब नेशनल बैंक से 100 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी का मामला

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) से संबद्ध 100.30 करोड़ रुपये की कथित धोखाधड़ी के संबंध में आईएलएंडएफएस एनर्जी डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड के खिलाफ मामला दर्ज कर तीन शहरों में उसके परिसरों पर छापे मारे। अधिकारियों ने शुक्रवार को बताया, सीबीआई ने आपराधिक षड्यंत्र, धोखाधड़ी और बैंक से प्राप्त ऋणों के उपयोग में धन के हेरफेर और अन्य अनियमितताओं के लिए भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के प्रावधानों के तहत कंपनी और उसके निदेशकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

भारत को वैश्विक डिजिटल इनोवेशन हब के रूप में मजबूत करेगा यूएस : नैसकॉम

एजेंसी। नई दिल्ली

विकासशील देशों में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) के विकास और तैनाती को सक्षम करने के लिए अमेरिका और भारत के बीच साझेदारी भारत को एक वैश्विक डिजिटल इनोवेशन हब के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करने का अवसर प्रदान करेगी। यह अन्य देशों के लिए अनुकरणीय मॉडल है। यह बात नैसकॉम की ओर से कही गई है। संस्था की ओर से कहा गया कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी समावेशी विकास, प्रतिस्पर्धी बाजारों को बढ़ावा देने और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा के लिए डीपीआई के कार्यान्वयन के लिए वैश्विक नेतृत्व प्रदान करने के लिए मिलकर काम करने का इरादा रखते हैं। नैसकॉम ने एक बयान में कहा, यह साझेदारी भारत के सफल कार्यान्वयन का लाभ उठाते हुए विकासशील देशों में डीपीआई के विकास और तैनाती के माध्यम से खुली और समावेशी डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। अमेरिका और भारत गोपनीयता, डेटा सुरक्षा और बौद्धिक संपदा की रक्षा के लिए उचित सुरक्षा उपायों सहित मजबूत डीपीआई के विकास और तैनाती को आगे बढ़ाने के लिए एक साथ साझेदारी करने और प्रयासों को संरेखित करने का पता लगाएंगे। भारतीय आईटी उद्योग के शीर्ष निकाय ने कहा कि दोनों देश जिम्मेदार एआई की दिशा में काम करेंगे, इसका लक्ष्य एआई शिक्षा को आगे बढ़ाना, व्यावसायिक अवसरों को बढ़ावा देना और भेदभाव और पूर्वाग्रह से संबंधित चिंताओं का समाधान करना है। नैसकॉम एआई के नेतृत्व वाली तकनीकी प्रगति का लाभ उठाने और उसे आगे बढ़ाने, सभी क्षेत्रों में नवाचार और विकास को बढ़ावा देने के लिए पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के साथ मिलकर काम कर रहा है। इसमें कहा गया है, अत्यधिक कुशल पेशेवरों की प्रचुरता, संपन्न स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और दूरदर्शी मानसिकता के साथ, भारत एआई प्रगति में अग्रणी बन गया है। जनरेटिव एआई के जिम्मेदार उपयोग पर नैसकॉम के व्यापक दिशानिर्देश एआई के क्षेत्र में नैतिक और जिम्मेदार प्रथाओं को बढ़ावा देने भारत की प्रतिबद्धता का उदाहरण हैं।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 596 अरब डॉलर के पार

नई दिल्ली। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 16 जून को समाप्त सप्ताह में 2.35 अरब डॉलर बढ़कर 596.098 अरब डॉलर पर पहुंच गया। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के शुक्रवार को जारी आंकड़ों में यह बात सामने आई है। इससे पहले के सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार 1.318 अरब डॉलर घट गया था। आंकड़ों के अनुसार, 16 जून को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति भी 2.578 अरब डॉलर बढ़कर 527.651 अरब डॉलर पर पहुंच गई। वहीं, 9 जून को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति में 1.128 अरब डॉलर की गिरावट रही थी।

कच्चा तेल 74 डॉलर प्रति बैरल के करीब

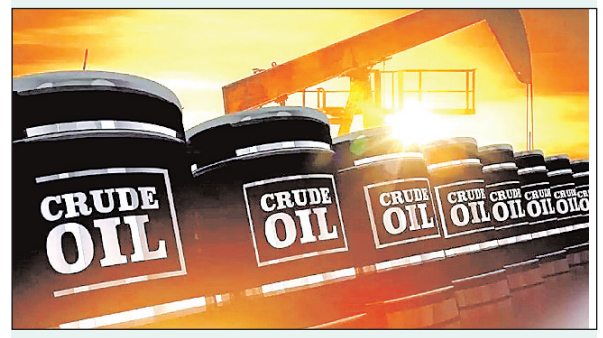

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में उतार-चढ़ाव जारी है। ब्रेंट क्रूड का भाव 74 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड 70 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक शनिवार को दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये, डीजल 89.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये, डीजल 94.27 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये, डीजल 92.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के अंतिम दिन ब्रेंट क्रूड 73.85 डॉलर प्रति बैरल और वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड भी 69.16 डॉलर प्रति बैरल पर स्थिर है।

भारत में 15 अरब डॉलर का और निवेश करेगी अमेजनः सीईओ

वाशिंगटन/नई दिल्ली। दिग्गज अमेरिकी ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन भारत में 15 अरब डॉलर के निवेश की योजना बना रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अमेरिकी दौरे के बाद कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एंडी जेसी ने यह बात कही है। अमेजन के सीईओ ने कहा कि कंपनी की योजना भारत में 15 अरब डॉलर का अतिरिक्त निवेश करने की है, जिससे कंपनी का भारत में कुल निवेश 26 अरब डॉलर हो जाएगा। जेसी ने कहा कि कंपनी भारत में पहले ही 11 अरब डॉलर का निवेश कर चुकी है। एंडी जेसी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के साथ मेरी अच्छी और सार्थक बातचीत हुई। मुझे लगता है कि हमारे कई लक्ष्य समान हैं। अमेजन भारत में सबसे बड़े निवेशकों में से एक है। हमने अब तक 11 अरब डॉलर का निवेश किया है और 15 अरब डॉलर का और निवेश करने का इरादा है, जिससे कुल राशि 26 अरब डॉलर हो जाएगी। इसलिए हम साझेदारी के भविष्य को लेकर बहुत उत्सुक हैं।

3 करोड़ के पैकेज के साथ एलपीयू ने बनाया प्लेसमेंट का एक और रिकॉर्ड

नई दिल्ली। लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (एलपीयू) की 2018 की कक्षा के छात्र यासिर एम. ने 3 करोड़ रुपए हासिल कर इतिहास रच दिया है। वह एआई/एमएल परियोजनाओं पर काम करेंगे, जो उद्योग में अत्यधिक प्रतिष्ठित क्षेत्र है। एलपीयू से ग्रेजुएशन करने के बाद उन्होंने कोई और डिग्री हासिल नहीं की। वह अपनी सफलता का श्रेय एलपीयू में मिले मजबूत फंडामेंटल्स को देते हैं। यह उपलब्धि एलपीयू द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा और प्रशिक्षण की गुणवत्ता का प्रमाण है। यासिर की सफलता कोई अकेली सफलता नहीं है, क्योंकि एलपीयू के हजारों पूर्व छात्र भी अच्छे पैकेज पर काम कर रहे हैं। दुनिया भर की अन्य फॉर्च्यून 500 कंपनियों जैसी कंपनियों में 1 करोड़ और उससे अधिक का पैकेज पर एलपीयू के पूर्व छात्र कार्यरत हैं।

एयरलाइन को फिर से उड़ान भरने के लिए चाहिए 425 करोड़ रुपये

एजेंसी। नई दिल्ली

गो फर्स्ट के समाधान पेशेवर शैलेंद्र अजमेरा ने एयरलाइंस फाइनेंसरों से अंतरिम वित्त में 425 करोड़ रुपये की मांग की है, ताकि एक पुनरुद्धार योजना बनाई जा सके और एयरलाइन का परिचालन फिर से शुरू करने में मदद मिल सके। बता दें कि गो फर्स्ट के दिवालिया मामले में शैलेंद्र अजमेरा को समाधान पेशेवर (आरपी) के रूप में नियुक्त किया गया है। संकट में फंसी विमानन कंपनी के कर्जदाताओं की समिति (सीओसी) ने यह फैसला किया है। ऋणदाताओं ने उन्हें गो फर्स्ट के लिए आरपी (समाधान पेशेवर) बनाने के लिए एनसीएलटी से मंजूरी ली है। सूत्रों ने हवाले से मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि भविष्य में विमानों के लिए दुरुस्त इंजनों की उपलब्धता और टिकट रद्द होने जैसी कुछ आकस्मिकताओं के आधार पर वित्तपोषण की जरूरत और बढ़ सकती है। बताया गया है कि सप्ताह की शुरूआत में हुई एक बैठक में गो फर्स्ट के लेनदारों की समिति के समक्ष वित्त पोषण से जुड़ा यह प्रस्ताव रखा गया। बता दें कि गो फर्स्ट के कर्जदाताओं की समिति में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा, आईडीबीआई बैंक और ड्यूश बैंक शामिल हैं। अजमेरा जो कर्जदाताओं की समति की ओर से समर्थित है ने अब तक इस मामले में आधिकारिक तौर पर कोई टिप्पणी नहीं है। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया समेत अन्य बैंकों ने भी इस पर फिलहाल कोई टिप्पणी नहीं की है। गो फर्स्ट को देश के विमानन क्षेत्र के नियामक नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) से एयरलाइन का परिचालन फिर से शुरू करने के लिए अपनी मंजूरी लेनी है। पर यह मंजूरी एयरलाइन के लिए वित्तपोषण की उपलब्धता सुनिश्चित होने के बाद ही मिल पाएगी।

विदेश

कोविड का जैविक हथियार के रूप में नहीं हुआ इस्तेमाल

न्यूयॉर्क। कोविड-19 की उत्पत्ति पर अमेरिकी सरकार की नई अवगीकृत खुफिया रिपोर्ट में भी यह बात स्पष्ट नहीं हो सकी है कि दुनिया भर में 76.8 करोड़ से अधिक लोगों को संक्रमित करने वाली और 69 लाख से अधिक मौतों के लिए जिम्मेदार महामारी की शुरूआत एक प्रयोगशाला रिसाव का परिणाम थी या किसी संक्रमित जानवर से वायरस इंसानों तक पहुंच गया। हालांकि सभी का मानना है कि इसका जैविक हथियार के रूप में इस्तेमाल नहीं किया गया। महामारी के दो साल से अधिक समय बाद, कोविड-19 की उत्पत्ति पर अस्पष्टता बनी हुई है। यह वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिकों और राजनेताओं के साथ एक राजनीतिक और वैज्ञानिक बहस का विषय रहा है कि कोरोनोवायरस का स्रोत एक संक्रमित जानवर या प्रयोगशाला की घटना का परिणाम था। रिपोर्ट में कहा गया है कि महत्वपूर्ण बात यह है कि लगभग सभी खुफिया एजेंसियों का आकलन है।

भारत में गूगल 10 अरब डॉलर का निवेश करेगी : सुंदर पिचाई

वाशिंगटन/नई दिल्ली, 24 जून (हि.स.)। अमेरिकी बहुराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी कंपनी गूगल भारत में डिजिटाइजेशन के लिए 10 अरब डॉलर (करीब 82 हजार करोड़ रुपये) का निवेश करेगी। गूगल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) सुंदर पिचाई ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात के बाद यह जानकारी दी। गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने घोषणा की है कि कंपनी गुजरात के गिफ्ट सिटी में अपना ग्लोबल फिनटेक ऑपरेशन सेंटर खोलेगी। प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात के बाद पिचाई ने कहा कि कंपनी अपने 10 अरब डॉलर के डिजिटलीकरण फंड के माध्यम से भारत में निवेश करना जारी रखेगी। सुंदर पिचाई ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी से मिलना उनके लिए सम्मान की बात है। पिचाई ने डिजिटल इंडिया के लिए प्रधानमंत्री के नजरिये की सराहना की। पिचाई ने कहा कि डिजिटल इंडिया के लिए प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण उनके समय से कहीं आगे है। मैं अब इसे एक ब्लूप्रिंट के रूप में देखता हूं, जिसे अन्य देश करना चाह रहे हैं।वहीं, प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने ट्वीट कर बताया कि प्रधानमंत्री मोदी और सुंदर पिचाई के बीच आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, फिनटेक और रिसर्च एंड डवलपमेंट को बढ़ावा देने के उपायों पर चर्चा हुई।

मोदी ने अमेरिकी व्यवसायियों से की भारत में निवेश की अपील

वाशिंगटन। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी व्यापारिक समुदाय से सीधी अपील में कहा है कि यह समय भारत में निवेश का है, क्योंकि भारती और अमेरिका की सरकारों ने इसके लिए अनुकूल माहौत तैयार किया है। इसके पहले प्रधान मंत्री ने शुक्रवार को व्हाइट हाउस में टेक्नोलॉजी हैंडशेक कार्यक्रम में राष्ट्रपति जो बाइडेन के साथ अमेरिका और भारत के प्रमुख सीईओ से मुलाकात की। इसमें गूगल के सुंदर पिचाई, माइक्रोसॉफ्ट के सत्या नडेला, ओपनएआई के सैम ऑल्ट, एफएमसी कॉर्पोरेशन के मार्क डगलस, रिलायंस के मुकेश अंबानी, महिंद्रा के आनंद महिंद्रा आदि शामिल थे। कार्यक्रम में दोनों देशों की कंपनियों, व्यवसायों, निमार्ताओं और नवप्रवर्तकों को संदेश दिया गया कि यही वह समय है, जब आप भारत में निवेश कर सकते हैं, क्योंकि इसके लिए अमेरिका व भारत की सरकारों ने अनुकूल कार्य किया है।

ऑस्ट्रेलिया सरकार ने भारतीयों के लिए वीजा नियमों में दी ढील

एजेंसी। सिडनी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाल ही में ऑस्ट्रेलिया दौरे में दोनों मुल्कों के बीच कई अहम समझौते हुए जिनमें इमीग्रेशन के मुद्दे पर विशेष रूप से हस्ताक्षर हुए। ऑस्ट्रेलिया इमीग्रेशन ने भारतीय विद्यार्थियों के लिए 1 जुलाई से वीजा नियमों में कई बदलाव किए हैं। जहां अब तक सालाना 1,60,000 नए वीजा प्रदान करने का लक्ष्य था वहीं अब इसे बढ़ाकर 1,90,000 कर दिया गया है। ताजा एग्रीमैंट के अनुसार भारतीय छात्र जो तृतीयक शिक्षा में ग्रैजुएशन की पढ़ाई कर रहे हैं, वे अब शिक्षा पूर्ण करने के बाद बिना किसी वीजा स्पांसरशिप के आस्ट्रेलिया में 8 साल तक का वर्क परमिट हासिल कर सकेंगे। इसके अलावा टैम्परेरी ग्रैजुएट सब क्लास 485 वीजा धारकों के लिए एक से दो साल के अतिरिक्त पोस्ट स्टडी वर्क राइट्स भी मिलेंगे। पार्ट टाइम काम करने वाले अब 40 घंटे की बजाय 48 घंटे प्रति सप्ताह काम कर सकेंगे। इमीग्रेशन के इस नए पायलट प्रोग्राम को मैट्स नाम से संबोधित किया गया है।

योजना

टीटीपी के ऐलान से उड़ी पाक-चीन की नींद

बलूचिस्तान में बनाएगा अपना नया राज्य

एजेंसी। इस्लामाबाद

पाकिस्तान में आंतकी संगठन व तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) ने अपने नए कदम से चीन और पाकिस्तान की नींद उड़ा दी है। टीटीपी ने ऐलान किया है कि वह बलूचिस्तान के दक्षिण-पश्चिमी प्रांत में एक समानांतर प्रांत) बनाने की अपनी योजना पर आगे बढ़ रहा है। पिछले हफ्ते मिली चेतावनी से चीन के बीआरआई-सीपीईसी प्रोजेक्ट पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। अगर टीटीपी अपनी योजना को पूरा करता है तो न केवल पाकिस्तान सरकार का सिरदर्द बढ़ेगा बल्कि इससे बीजिंग में भी चिंता बढ़ने की संभावना है क्योंकि बलूचिस्तान बंदरगाह शहर ग्वादर का घर है। टीटीपी की नया प्रांत बनाने की उसकी योजना चीन और पाकिस्तान की योजनाओं को और नुकसान पहुंचाएगी और इससे शी जिनपिंग के नाराज होने की अधिक संभावना है। जिनपिंग ने कई मौकों पर बलूच विद्रोहियों द्वारा चीनी नागरिकों को निशाना बनाए जाने के बाद पाकिस्तान को अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सख्ती से कहा है। पिछले साल कराची विश्वविद्यालय पर हमले में तीन चीनी शिक्षाविदों की मौत हो गई थी। इस मामले ने खासा तूल पकड़ा था। साथ ही चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की पसंदीदा परियोजना, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) का भी केंद्र है। निक्केई एशिया ने एक रिपोर्ट में कहा कि पाकिस्तान तालिबान के ऐसे कदम चीन और पाकिस्तान के लिए एक बड़ी समस्या बन जाएंगे। इफ्क के तहत अरबों डॉलर की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को बहाल करते समय मुश्किलें आएंगी। चीनी इंजीनियरों को बलूच अलगाववादियों के हमलों का सामना करना पड़ा है और अब पाकिस्तान तालिबान के एक नए खतरे के रूप में उभरने से उन्हें अपनी सुरक्षा का डर सता रहा है। आर्थिक कारणों से पाकिस्तान की सुरक्षा एजेंसियां परियोजनाओं में शामिल नहीं होने वाले चीनी नागरिकों और व्यवसाय चलाने वालों को सुरक्षा प्रदान करने में नाकाम है। 'कलात-मकरान' प्रांत स्थापित करने की योजना रिपोर्ट में कहा गया है कि टीटीपी अपना खुद का 'कलात-मकरान' प्रांत स्थापित करने की योजना बना रहा है और उस क्षेत्र में एक समानांतर सरकार बनाएगा। यदि यह सरकार बनती है, तो यह 760 किलोमीटर की तटरेखा सहित 40% से अधिक बलूचिस्तान-क्षेत्र को कवर करेगी।

चीन ने सूडान से अपने 1,508 नागरिकों को निकाला है

बीजिंग। चीनी विदेश मंत्रालय के कांसुलर मामले विभाग की निदेशक वु शी ने हाल में बताया कि इस अप्रैल में सूडान में सशस्त्र मुठभेड़ शुरू होने के बाद विदेश मंत्रालय आदि विभागों ने आपात अभियान चलाकर सुरक्षित रूप से सूडान से अपने 1508 नागरिकों को निकाला। वु शी ने लिनच्या नंबर 7 नामक सालोन पर नये युग में चीन के कांसुलर कार्य का परिचय देते हुए यह बात कही। वु शी ने बताया कि चीनी नागरिकों के अलावा चीनी पक्ष ने अपनी क्षमता के अंदर सक्रियता से अन्य देशों के नागरिकों की सहायता की और 200 से अधिक पाक नागरिकों समेत अन्य आठ देशों के नागरिकों को निकालने में मदद की। वु शी के अनुसार नये युग के 10 साल में विदेश मंत्रालय ने लगभग 20 बार विदेशों में फंसे चीनी नागरिकों को आपात रूप से निकालने की कार्रवाइयां की हैं। वु शी ने इयह भी बताया कि चीन ने अब 152 देशों के साथ विभिन्न किस्मों के पासपोर्ट के लिए वीजा की छूट संधि पर हस्ताक्षर किये हैं।

ब्लिंकन के बीजिंग दौरे बाद पलटा अमेरिका,रिपोर्ट में कहा

चीन की वुहान लैब से नहीं लीक हुआ कोरोना

एजेंसी। वाशिंगटन

विदेश मंत्री एंटी ब्लिंकन के चीन दौरे के बाद अमेरिकी अधिकारियों ने एक खुफिया रिपोर्ट जारी करके कोविड-19 के चीन की एक प्रयोगशाला से लीक होने के कुछ बिंदुओं को खारिज कर दिया है । रिपोर्ट में दोहराया गया है कि अमेरिकी खुफिया एजेंसियों की राय इसको लेकर विभाजित है कि महामारी शुरूआत कैसे हुई। रिपोर्ट शुक्रवार को अमेरिकी कांग्रेस (संसद) के कहने पर जारी की गई। कांग्रेस ने मार्च में एक विधेयक पारित करके वुहान विषाणु विज्ञान संस्थान से संबंधित खुफिया रिपोर्ट को खुफिया दस्तावेजों को सार्वजनिक करने के लिए अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी को 90 दिनों का वक्त दिया था। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के प्रशासन के तहत काम करने वाले खुफिया अधिकारियों पर सांसद कोरोना वायरस की उत्पत्ति को लेकर अधिक जानकारी जारी करने के लिए दबाव बनाते रहे हैं। हालांकि अधिकारियों की दलील रही है कि स्वतंत्र समीक्षा में चीन द्वारा रोड़ा अटकाने की वजह से यह पता लगाना शायद नामुमकिन हो गया है कि महामारी की शुरूआत कैसे हुई थी। नयी रिपोर्ट ने रिपब्लिकन पार्टी से जुड़े कुछ लोगों को नाराज कर दिया है। उनकी दलील है कि प्रशासन गलत तरीके से गुप्त सूचना और अनुसंधानकर्ताओं को रोक रहा है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शासनकाल के दौरान अमेरिका में राष्ट्रीय गुप्तचर निदेशक रहे जॉन रैटक्लिफ ने बाइडन प्रशासन पर लगातार उलझन में रहने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि विज्ञान, गुप्तचर और सामान्यबोध वायरस के प्रयोगशाला से लीक होने के सिद्धांत का ही समर्थन करता है। इस साल के शुरू में ऊर्जा विभाग की खुफिया शाखा ने रिपोर्ट जारी करके प्रयोगशाला संबंधी घटना की दलील दी थी। हालांकि शुक्रवार को जारी रिपोर्ट कहती है कि खुफिया समुदाय को इस संबंध में और कोई जानकारी नहीं मिली है। चार एजेंसियों का अभी भी मानना है कि वायरस पशु से मनुष्य में फैला जबकि ऊर्जा विभाग और संघीय जांच एजेंसी (एफबीआई) का मानना है कि वायरस प्रयोगशाला से लीक हुआ। सीआईए और अन्य खुफिया एजेंसी ने इस बारे में कोई आकलन नहीं किया है।

एक नजर इधर भी

भारत के समृद्धशालियों व प्रतिभाओं का पलायन क्यों?

धनाढ्य परिवारों का भारत से पलायन कर विदेशों में बसने का सिलसिला चिन्ताजनक है। ऐसे क्या कारण है कि लोगों को देश की बजाय विदेश की धरती रहने, जीने, व्यापार करने, शिक्षा एवं रोजगार के लिये अधिक सुविधाजनक लगती है, नये बनते भारत के लिये यह चिन्तन-मंथन का कारण बनना चाहिए। हेनले प्राइवेट वेल्थ माइग्रेशन रिपोर्ट 2023 की एक रिपोर्ट के अनुसार, अनुमानित 6,500 हाई- नेट-वर्थ इंडिविजुअल्स (एचएनआई) के 2023 में भारत से बाहर जाने की संभावना है, पिछले वर्ष की तुलना में यह करोड़पतियों के देश छोड़कर जाने की 7500 की संख्या भले ही कुछ सुधरी है, लेकिन नये बनते, सशक्त होते एवं आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर भारत के लिये यह चिन्तन का विषय होना ही चाहिए कि किस तरह भारत की समृद्धि एवं भारत की प्रतिभाएं भारत में ही रहे। रिपोर्ट के अनुसार, उच्च निवल मूल्य वाली व्यक्तिगत आबादी के 2031 तक 80 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि का अनुमान है, जो इस अवधि के दौरान भारत को दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते धन बाजारों में से एक के रूप में स्थापित करता है। यह वृद्धि मुख्य रूप से देश के भीतर संपन्न वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों द्वारा संचालित होगी। इसमें समृद्ध व्यक्तियों के भारत लौटने की प्रवृत्ति को भी देखा जा रहा है, और जैसे-जैसे जीवन स्तर में सुधार जारी है, यह अधिक संख्या में धनवान व्यक्तियों के भारत वापस आने का अनुमान लगाता है। लेकिन प्रश्न है कि भारत के करोड़पति आखिर नये बनते भारत एवं उसकी चिकित्सा, शिक्षा, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक उज्ज्वलता के बावजूद क्यों विदेश जा रहे हैं? वैसे तो यह हर किसी का व्यक्तिगत अधिकार और चाहत हो सकती है कि वह कहां बसना और कैसी जीवनशैली चाहता है? लेकिन हाई नेटवर्थ वाले (अति समृद्ध) हमारे देशवासियों के देश छोड़ कर कहीं और बसने की तैयारी की ताजा रिपोर्ट बहुत कुछ कहती है। दुनियाभर में धन और निवेश प्रवासन के रुझान को ट्रैक करने वाली कंपनी की सालाना रिपोर्ट में अति समृद्ध भारतीयों का अपना सब-कुछ समेट कर हमेशा के लिए भारत से जुदा हो जाने का अनुमान अनेक प्रश्न खड़े करता है, सरकार को इन प्रश्नों पर गौर करने की जरूरत है। संतोष इस बात पर किया जा सकता है कि ऐसा कदम उठाने वाले इन अति समृद्धशालियों की संख्या पिछले साल की तुलना में लगभग एक हजार कम है। लेकिन यह संख्या समूचे विश्व में सर्वाधिक है। भारत के दृष्टिकोण से इस तथ्य का विश्लेषण ज्यादा जरूरी हो जाता है। जानना यह भी जरूरी है कि बचपन से जवानी तक का एक-एक पल देश में गुजारने और यहीं अमीर बनने का सफर तय करने के बाद देश से मोह भंग होने के कारण आखिर क्या हो सकते हैं? उम्मीद यह की जाती है कि देश में रहकर समृद्धि हासिल करने वाले समय आने पर देश को लौटाएंगे भी। सवाल यही है कि देश को लौटाने और फायदा देने का वक्त आता है तब एकाएक विदेश में जाकर बसने की ललक कैसे और क्यों पैदा हो रही है? अपने देश के प्रति जिम्मेदारी निभाने के समय इस तरह की पलायनवादी सोच का उभरना व्यक्तिगत स्वार्थ, सुविधा एवं संकीर्णता को दर्शाता है। बड़ा सवाल यह भी उठना स्वाभाविक है कि आखिर क्या कमी है हमारे यहां? यह बात सही है कि गांव से कस्बे, कस्बे से शहर और शहरों से महानगरों में जाकर बसने की मानवीय प्रवृत्ति होती है। इसे विकास से भी जोड़ा जा सकता है। लेकिन जब यह दौड़ बहुत ज्यादा होने लगे और लोग अपनी जड़ें ही छोड़ने को आकुल दिखें तो सोचना जरूरी हो जाता है। मुम्बई, दिल्ली, बेंगलूरु जैसे महानगर दुनिया के दूसरे महानगरों को टक्कर देने वाले हैं। फिर भी अगर ये भारतीय विदेशी महानगरों को ही चुन रहे हैं, तो तमाम पहलुओं पर विचार भी करना होगा। यह इसलिए भी जरूरी है कि यह दौड़ भारतीय महानगरों से विदेशी महानगरों की तरफ ही है।

■ **ललित गर्ग**

आधुनिक इतिहास की सबसे भयावह त्रासदी

भारत में संविधान का शासन है। संविधान निर्माताओं ने न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका में खूबसूरत अधिकार विभाजन किये हैं। लेकिन आपातकाल आधुनिक इतिहास में संविधान को तहस-नहस करने की भयावह त्रासदी है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने आज से 48 वर्ष पूर्व (25 जून 1975) पूरे देश को कैदखाना बना दिया था। संविधान (अनुच्छेद 352) में वाह्य आक्रमणों और देश के भीतर गंभीर आतंरिक अशांति के आधार पर आपातकाल घोषित करने की व्यवस्था थी। लेकिन तब देश में कोई आतंरिक अशांति नहीं थी। प्रधानमंत्री स्वयं आतंरिक अशांति से पीड़ित थीं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 12 जून 1975 को उनका संसदीय चुनाव अवैध घोषित कर दिया था। न्यायालय के अनुसार वे अनुचित साधनों द्वारा चुनाव जीती थीं। रायबरेली (उत्तर प्रदेश) की उनकी संसदीय सीट रिक्त घोषित कर दी गई थी। सत्ता पक्ष का एक धड़ा और संपूर्ण विपक्ष त्यागपत्र मांग रहा था। उन्होंने पद से न हटने का निश्चय किया। आपातकालीन प्राविधान का दुरुपयोग किया और आपातकाल थोप दिया। संविधान के रास्ते तानाशाही थोपने का ऐसा ही कृत्य एडोल्फ हिटलर ने 28 फरवरी 1933 को जर्मनी में किया था। हिटलर जर्मनी के चांसलर (सत्ता प्रमुख) थे। आपातकाल पर जर्मनी की संसद में मतदान हुआ। संसद का बहुमत हिटलर के पक्ष में था। 444 मत आपातकाल के पक्ष में पड़े। विपक्ष में 94 वोट पड़े। 109 लोगों ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया। इसी तरह भारत में भी सत्ता पक्ष प्रधानमंत्री के पक्ष में था। जान पड़ता है कि श्रीमती गांधी हिटलर से प्रेरित थीं। यहां पूरा विपक्ष जेल में डाल दिया गया था। जर्मनी की तर्ज पर यहां कांग्रेस संसदीय दल और पार्टी ने इस तानाशाही का समर्थन किया। कांग्रेस अध्यक्ष ने इंदिरा को इंडिया बताया और इंडिया को इंदिरा। स्वाधीनता आंदोलन के महान नेता जयप्रकाश नारायण को भी गिरफ्तार किया गया। अटल बिहारी वाजपेयी सहित सभी राष्ट्रवादी नेता भी जेल में थे। मानवता कुचली गई। पुलिस अंग्रेजी शासन की पुलिस की भूमिका में थी। विचार अभिव्यक्ति का गला घोट दिया गया। प्रतिष्ठित पत्रकार पीड़ित किये गये। प्रधानमंत्री न्यायालयों की शक्ति पर आक्रामक थीं। श्रीमती गांधी ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी। लेकिन उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की प्रतीक्षा नहीं की। संविधान में हास्यास्पद संशोधन हुआ। प्रधानमंत्री के संसदीय चुनाव को न्यायायिक निर्वचन से मुक्त कराने का संशोधन कराया गया और इस संविधान संशोधन को पिछली तारीखों से लागू कराया गया। आपातकाल का बयालिसवां संशोधन ध्यान देने योग्य है। संविधान में संसदीय अधिनियम पर भी न्यायायिक पुनर्विलोकन की व्यवस्था है। लेकिन आपातकाल में संविधान के उल्लंघन के आधार पर चुनौती देने के लिए संघ और राज्यों के कानूनों में भेद किया गया। यह व्यवस्था की गई कि सर्वोच्च न्यायपीठ अनुच्छेद 32 के अधीन अपनी अधिकारिता में किसी राज्य के कानून को तब तक असंवैधानिक घोषित नहीं कर सकता जब तक ऐसी कार्यवाहियों में केन्द्रीय विधि भी प्रश्नवाचक न हो। व्यवस्था की गई कि नीति निदेशक तत्वों को लागू करने के लिए अधिनियमित कानूनों को मौलिक अधिकारों के आधार पर चुनौती नहीं दी जायेगी। इसी तरह उच्च न्यायालयों को केन्द्रीय विधि की असंवैधानिकता के विरुद्ध सुनवाई से रोक दिया गया। किसी कानून को असंवैधानिक घोषित करने के लिए न्यायमूर्तियों के विशेष बहुमत की अपेक्षा के प्राविधान किये गये। ऐसे सारे संशोधन न्यायपालिका का गला घोंटने वाले थे। न्यायालय के पास संविधान संशोधनों को भी संविधान की मूल भावना के विपरीत होने अथवा अन्य कारणों से असंवैधानिक घोषित करने की शक्ति है। आपातकाल में संविधान संशोधन के अनुच्छेद 368 का भी संशोधन किया गया। व्यवस्था की गई कि संविधान संशोधन विधि के नाम से घोषित विधि को किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ताओं को अकारण जेल भेजा गया। लाखों कार्यकर्ता जेल में थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विशेष निशाने पर था। न्याय का नैसर्गिक सिद्धांत कुचला गया। किसी भी व्यक्ति को किसी भी आरोप में जेल भेजने के बाद अदालत उसका पक्ष सुनती है। लेकिन आपातकाल में कुख्यात मेंटेनेंस ऑफ इंटर्नल सिक्योरिटी एक्ट (मीसा) में नैसर्गिक कानून का यह सूत्र नहीं था। मीसा में जिला प्रशासन द्वारा व्यक्ति को उठाकर जेल भेज दिया जाता था। न्यायालय में उसका मुकदमा नहीं चलता था। ऐसा कानून दुनिया के किसी भी सभ्य देश में नहीं है। लेकिन भारत में पुलिस राज था। पुलिस अनावश्यक रूप से पीटती थी। हजारों सामाजिक कार्यकर्ताओं के अंग भंग किये गये। संविधान संशोधनों की झड़ी लग गई। 53 अनुच्छेद एक साथ बदले गये। सातवीं अनुसूची बदली गई। प्रेस का मुंह कुचल दिया गया था। सब तरफ उत्पीड़न व सरकार प्रायोजित हिंसा का चीत्कार था। मौलिक अधिकार भारत की संवैधानिक व्यवस्था के प्राण हैं। वे स्थापित सरकार के अत्याचारों से रक्षा करने के उपकरण हैं। राज व्यवस्था की निरंकुशता से संरक्षण देने के लिए मौलिक अधिकार अधिनियमित किये गये थे। श्रीमती इंदिरा गांधी मौलिक अधिकारों में भी काट छांट कर रहीं थीं। संविधान (भाग 4) में उल्लिखित राज्य के नीति निदेशक तत्वों को क्रियान्वित करने के बहाने बनाई गई विधियों को न्यायायिक निर्वचन से अलग रख दिया गया था। सरकारी अत्याचारों से देश उबल रहा था। मुझे मीसा बंदी के रूप में उत्पीड़न का अनुभव है। उस समय लागू डिफेन्स ऑफ इंडिया रूल (डीआईआर) का भी अनुभव है।

रायबरेली की उनकी संसदीय सीट रिक्त घोषित कर दी गई थी। सत्ता पक्ष का एक धड़ा और संपूर्ण विपक्ष त्यागपत्र मांग रहा था। उन्होंने पद से न हटने का निश्चय किया। आपातकालीन प्राविधान का दुरुपयोग किया और आपातकाल थोप दिया। संविधान के रास्ते तानाशाही थोपने का ऐसा ही कृत्य एडोल्फ हिटलर ने 28 फरवरी 1933 को जर्मनी में किया था।

इन दिनों

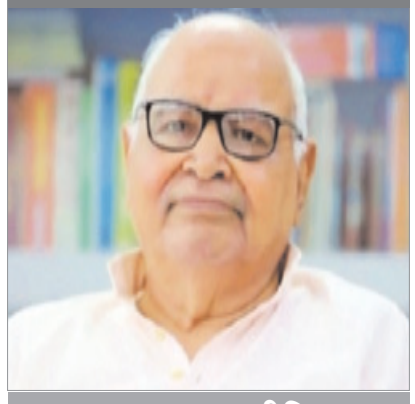

हृदयनारायण दीक्षित

लोकतंत्र पर जबरदस्त आघात

सत्ता की ताकत का दुरुपयोग कैसे किया जाता है, इसका उदाहरण कांग्रेस सरकार द्वारा 1975 में देश पर तानाशाही पूर्वक लगाया गया आपातकाल है। जिसमें अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार ही समाप्त कर दिया था। इसे एक प्रकार से देश की आजादी को छीनने का दुस्साहसिक प्रयास भी माना जा सकता है। क्योंकि इंदिरा शासन द्वारा देश पर थोपे गए आपातकाल में सरकार के विरोध में आवाज उठाने को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया था। यहां तक कि सरकार ने विपक्ष की राजनीति करने वालों के साथ ही उन समाजसेवियों और राष्ट्रीय विचार के प्रति समर्पित उन संस्थाओं के व्यक्तियों को जेल में ठूंस दिया था, जो सरकार की कमियों के विरोध में लोकतांत्रिक तरीके से आवाज उठा रहे थे। सरकार के इस कदम को पूरी तरह से अलोकतांत्रिक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इंदिरा गांधी की सरकार ने अपनी सरकार के खिलाफ उठने वाली हर उस आवाज को दबाने का प्रयास किया, जो लोकतांत्रिक रूप से भी सही थी। वैसे देखा जाए तो कांग्रेस शासन का यही चरित्र रहा है कि उनके खिलाफ उठने वाली आवाज को किसी भी प्रकार से शांत किया जाय। आज भी कांग्रेस ठीक इसी पद्धति से काम करती हुई दिखाई दे रही है। कांग्रेस में लोकतांत्रिक सिद्धांतों की बलि दी जाती रही है। इसे कांग्रेस का स्वभाव ही माना जा सकता है कि उसने देश को मजबूत करने वाली आवाज को मुखर नहीं होने दिया। इसके विपरीत देश के विरोध में उठने वाली आवाज को बिना सोचे समझे अभिव्यक्ति की आजादी कहकर समर्थन किया। सीधे शब्दों में निरूपित किया जाए तो यही कहा जा सकता है कि कांग्रेस को अपने विरोध में कही गई कोई बात जरा भी पसंद नहीं है। इसी कारण नेशनल हेराल्ड में जब जांच की बात आती है तो कांग्रेस के नेता एकजुट होकर ऐसा प्रदर्शन करते हैं, जैसे वही सही हैं और बाकी सभी गलत। कांग्रेस पार्टी ने एक नहीं कई बार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर राष्ट्र विरोधी ताकतों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन देने काम किया है, लेकिन जो कांग्रेस गाहे बगाहे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की वकालत करती रही है, उसने ही 25 और 26 जून 1975 की रात को आपातकाल लगाने के बाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का पूरी तरह गला घोंट दिया था। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर किस प्रकार कुठाराघात किया जाता है, इस तथ्य को जानने के लिए कांग्रेस के नेताओं को आपातकाल के काले अध्याय का अध्ययन करना चाहिए। आपातकाल के नाम पर कांग्रेस ने अंग्रेजों से भी भयंकर यातनाएं देते हुए देश भक्तों पर कहर बरपाया। जिसके स्मरण मात्र से दिल में सिरहन दौड़ जाती है। जिन लोगों ने इस काली रात का साक्षात्कार किया, उनके अनुभव सुनने मात्र से ही लगता है कि इन्होंने आपातकाल को किस कदर भोगा होगा। आपातकाल लगाने के पीछे के कारणों पर दृष्टिपात किया जाए तो यही तथ्य सामने आते हैं कि उस समय की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पूरी तरह से तानाशाह शासक की भूमिका में दिखाई दीं। उन्होंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश को ठेंगा बताते हुए अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया, यह प्रकार से सत्ता का दुरुपयोग ही था। वह निर्णय क्या था? इसकी जड़ में 1971 में हुए लोकसभा चुनाव था, जिसमें उन्होंने अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी राजनारायण को पराजित किया था, लेकिन चुनाव परिणाम आने के चार साल बाद राज नारायण ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में चुनाव परिणाम को चुनौती दी। 12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जगमोहन लाल सिन्हा ने इंदिरा गांधी का चुनाव निरस्त कर उन पर छह साल तक चुनाव न लड़ने का प्रतिबंध लगा दिया और उनके मुकाबले हारे और श्रीमती गांधी के चिर प्रतिद्वंद्वी राजनारायण सिंह को चुनाव में विजयी घोषित कर दिया था। राजनारायण सिंह की दलील थी कि इंदिरा गांधी ने चुनाव में सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया, तय सीमा से अधिक पैसा खर्च किया और मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए गलत तरीकों का इस्तेमाल किया। न्यायालय ने इन आरोपों को सही ठहराया था। इसके बावजूद श्रीमती गांधी ने प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र देने से इनकार कर दिया और देश में आपातकाल घोषित कर दिया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय के साथ ही गुजरात में चिमनभाई पटेल के विरुद्ध विपक्षी जनता मोर्चे को भारी विजय मिली। इस दोहरी चोट से इंदिरा गांधी बौखला गईं। इन्दिरा गांधी ने न्यायालय के इस निर्णय को मानने से इनकार करते हुए सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने की घोषणा की और 26 जून को आपातकाल लागू करने की घोषणा कर दी गई। इंदिरा गांधी का यह कदम न्यायालय के आदेश का अपमान करने वाला ही था। आपातकाल के नाम पर केवल उन्हीं लोगों को जेल में जबरदस्ती बंद किया था, जो सरकार के विरोधी थे। देश भर में इंदिरा शासन के विरुद्ध जबरदस्त आंदोलन खड़ा किया। आपातकाल में शासन, प्रशासन ने लोकनायक जयप्रकाश के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन में हिस्सा लेने वाले हर उस व्यक्ति को प्रताड़ना दी, जो लोकतांत्रिक तरीके सरकार के विरोध में आवाज उठा रहे थे। विपक्षी राजनेताओं ने देश में केन्द्र सरकार के विरोध में ऐसा वातावरण बनाया कि इंदिरा गांधी को अपना सिंहासन हिलता हुआ दिखाई दिया। जॉर्ज फर्नांडीज को लोहे की जंजीरों से बांधकर यातनाएं दी गईं। देश के जितने भी बड़े नेता थे, सभी के सभी सलाखों के पीछे डाल दिए गए। एक तरह से जेलें राजनीतिक पाठशाला बन गईं। जिन लोगों ने यह दृश्य देखा, उनका यही कहना था कि ऐसा दृश्य तो अंग्रेजों के शासनकाल में भी नहीं दिखा।

■ **सुरेश हिंदुस्थानी**

है न विचित्र बात !

प्राण का तकिया कलाम व गेटअप

अपने किरदारों को यादगार तथा फिल्म इंडस्ट्री में लंबे समय तक अपनी मांग और लोकप्रियता बनाए रखने के लिए प्राण ने अपने मेकअप (रूप सज्जा), गेटअप (वस्त्र सज्जा) और बोलने के ढंग (लहजे) पर विशेष मेहनत तो की ही, यह भी ध्यान रखा कि इनमें दोहराव न हो। इन सब की प्रेरणा वे अपने आसपास के लोगों से लेते या पत्र-पत्रिकाओं में छपी तस्वीरों और उसके विवरण से। बोलने के खास लहजे या 'तकिया कलाम' की बात करें तो फिल्म 'पत्थर के सनम (1960) में उनके द्वारा इस्तेमाल किया गया तकिया कलाम था- क्यों? ठीक है ना ठीक ?' यह तकिया कलाम उन्होंने लाहौर में फिल्में करते समय रूप के शौरी के मामाजी से लिया था जो उनके स्टूडियो की देखभाल किया करते थे। फिल्म दस लाख (1966) में उन्होंने अपनी हर बात को दुबारा गलत अंग्रेजी में बोलकर हास्य का पुट भरा तो फिल्म 'कश्मीर की कली' (1964) में 'स' को श बोलकर -'शताले, शताले शम्पा कभी तो मेरा शमय भी आएगा' ने भी दर्शकों को खूब हंसाया। फिल्म कसौटी (1974) में की गई नेपाली गोरखे की भूमिका में नेपाली लहजे में बोला गया तकिया कलाम हम बोलेगा तो बोलेंगे कि बोलता है भी काफी लोकप्रिय हुआ था। अपनी खलनायकी को खूंखार और डरावना बनाने के लिए उन्होंने कई फिल्मों में सिगरेट या बीड़ी पीने तथा पान खाने के अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल किया। फिल्म मयादां (1971) में उन्होंने जलती हुई सिगरेट को जीभ द्वारा मुंह के अंदर ले जाकर जीभ या होठ जलाए बिना दोबारा उसी तरह होठों पर लाने का करिश्मा किया (आमिर बान ने इस तरीके की नकल फिल्म गुलाम में की)। फिल्म 'दिल तेरा दीवाना' (1962) फिल्म में वह अपने मुंह में दबाई बीड़ी को बोलते समय जीभ के निचले होठ से एक सिरे से दूसरे सिरे तक घुमाते रहते थे। अपनी बेटी के डांस टीचर जो कि विकलांग थे और खास तरीके से चलते थे की नकल उन्होंने 'हीर-रांझा' (1970) में लंगड़े की भूमिका करते हुए की। फिल्म 'चोर के घर चोर (1978) में एक पागल के किरदार के लिए उन्होंने उस पागल का गेटअप लिया जिसे वे बांद्रा में अक्सर देखा करते थे और जो मिलिट्री की पोशाक और उस पर मेडल लगाकर सीटी बजाता रहता था। उनके विग और गेटअप हमेशा कुछ अलग होते थे और दर्शकों को बेहद पसंद आते थे। विश्व प्रसिद्ध हस्तियों के प्रति विशेष आकर्षण के चलते उन्होंने खानदान (1966) फिल्म में हिटलर की तरह छोटी मूछें और बाल रखे। अमर अकबर एंथोनी में उनकी दाड़ी और कपड़े अब्राहम लिंकन जैसे थे। फिल्म जुगनू (1973) में प्रोफेसर की भूमिका के लिए उन्होंने शेख मुजीबुरहमान जैसा मेकअप और गेटअप किया था। यानी उन्हीं के जैसी कुर्ता, विग, मोटे फ्रेम का चश्मा और मूंछें। बाद की फिल्मों निगाहें (1989) में उन्होंने सैम पित्रोदा की तरह दाड़ी और फिल्म जोशीले (1973) में शशि कपूर के ससुर ज्योफ्री केंडल की तरह दाढ़ी रखी। वेशभूषा की सत्यता के लिए प्राण जिस धर्म का किरदार निभा रहे होते तो उसी समुदाय के किसी भी व्यक्ति से सहयोग लेने में नहीं हिचकते थे। फिल्म 'कसौटी' में उन्होंने एक नेपाली गोरखे की भूमिका के लिए अपने मित्र से गोरखाओं जैसे कपड़े तो मंगाए ही साथ ही उनके द्वारा साथ रखी जाने वाली खुखरी तक मंगाई और उसे शूटिंग में भी ले गए। फिल्म आंसू बन गये फूल (1969) में उन्होंने मोहल्ले के दादा का मराठी किरदार निभाया था। इसके लिए उन्होंने अपने मराठी इलेक्ट्रिशियन से कुछ चुने हुए मराठी शब्द याद कर अपने संवादों में शामिल किए। **चलते-चलते :** जिस देश में गंगा बहती है (1960) फिल्म में प्राण ने एक क्रूर डाकू 'राका' की उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी।

■ **अजय कुमार शर्मा**

बराक ओबामा भारत को सुरक्षा की सीख न दें

देखा जाये तो पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के इस साक्षात्कार की टाइमिंग को लेकर तो सवाल उठे ही हैं साथ ही इसके जरिये वह टूलकिट भी सामने आ गयी है जिसके जरिये मोदी को अल्पसंख्यकों से जुड़े मुद्दे को लेकर निशाने पर लेने का प्रयास किया जाता है। अमेरिका के राजकीय दौरे पर गये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वागत में जब राष्ट्रपति जो बाइडन तथा उनका पूरा प्रशासन पलक पांवड़े बिछा रहा था उसी समय पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सीएनएन को दिये एक साक्षात्कार के जरिये सनसनी फैला दी। इस साक्षात्कार में उन्होंने भारत के मुसलमानों की स्थिति पर चिंता जताई। साक्षात्कार में ओबामा ने कहा कि अगर मैं प्रधानमंत्री मोदी से बातचीत करता तो मैं उनसे कहता कि अगर वह अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा नहीं करेंगे, तो भारत के टूटने की संभावना बनी रहेगी। ओबामा ने राष्ट्रपति जो बाइडन को भी सलाह दी कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात के दौरान उनसे भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर बात करें। देखा जाये तो ओबामा के इस साक्षात्कार की टाइमिंग को लेकर तो सवाल उठे ही हैं साथ ही इसके जरिये वह टूलकिट भी सामने आ गयी है जिसके जरिये मोदी को अल्पसंख्यकों से जुड़े मुद्दे को लेकर निशाने पर लेने का प्रयास किया जाता है। विदेशी मीडिया का इस संबंध में खूब सहारा लिया जाता है। बीबीसी गुजरात दंगों के 20 साल बाद उस पर डॉक्यूमेंट्री बनाती है। अमेरिकी अखबार वाल स्ट्रीट जनरल की पत्रकार सबरीना सिद्दीकी को भारत में हो रहे विकास या मजबूत होती भारतीय अर्थव्यवस्था के संबंध में प्रश्न पूछने की बजाय सिर्फ अल्पसंख्यकों की चिंता सताती है। आप जरा सभी घटनाओं को जोड़ कर देखेंगे तो आपको सारी कड़ियां जुड़ी हुई नजर आयेंगी। भारतीय प्रधानमंत्री की घेराबंदी करने के लिए धर्म का धंधा करने वाले टूलकिट से जुड़े लोगों ने मोदी के अमेरिका आगमन से पहले कुछ भारत विरोधी अमेरिकी सांसदों से एक पत्र अमेरिकी राष्ट्रपति को लिखवाया और उनसे मानवाधिकारों और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का मुद्दा उठाने का आग्रह किया। भारत विरोधी कुछ अमेरिकी सांसदों ने मोदी के स्वागत समारोह और अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र में मोदी के संबोधन का बहिष्कार भी किया। यह लोग मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान ट्वीट और अन्य सोशल मीडिया मंचों पर पोस्ट भी करते रहे ताकि मोदी विरोधी अभियान को गति मिलती रहे। इसके अलावा, एक ओर उमर खालिद को रिहा करने की मांग संबंधी पोस्टर अमेरिका में लहराये गये तो दूसरी ओर खालिस्तान समर्थकों ने भी भारत विरोधी नारे लगाये। इस बीच, सबके सुर से सुर मिलाते हुए बराक ओबामा ने सीएनएन को साक्षात्कार देकर माहौल गमार्ने का प्रयास कर अपना भी योगदान दे दिया। देखा जाये तो बराक हुसैन ओबामा के मन में मोदी विरोधी भावना आज से नहीं बल्कि शुरू से ही है। ओबामा को 2014 में यह कतई नहीं भाया था कि आम चुनावों में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की इतनी प्रचंड विजय हुई कि गुजरात के मुख्यमंत्री पद से सीधे मोदी भारत के प्रधानमंत्री बन गये। मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद ओबामा प्रशासन इस बात के लिए मजबूर हो गया था कि वह भारत के प्रधानमंत्री को अमेरिका यात्रा का वीजा प्रदान करे। यही नहीं, 2015 में गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में जब ओबामा भारत आये तो अपने एक संबोधन में मोदी सरकार को मानवाधिकारों और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर उपदेश देना नहीं भूले थे। अमेरिका में जब डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति बने तो मोदी से उनकी गहरी दोस्ती ओबामा को कतई पसंद नहीं आती थी इसलिए 2020 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में ओबामा ने जो बाइडन के लिए जमकर प्रचार भी किया। जो बाइडन को अमेरिका स्थित मुस्लिम संगठनों का पूरा समर्थन दिलाने में भी ओबामा की बड़ी भूमिका रही थी। ओबामा को उम्मीद थी कि बाइडन के कार्यकाल में मोदी विरोधी अभियान आगे बढ़ेगा लेकिन बाइडन तो मोदी से दोस्ती के मामले में ट्रंप से भी आगे बढ़ गये। ओबामा देखते रहे गये कि उनके कार्यकाल में उपराष्ट्रपति रहे बाइडन कैसे मोदी से लगातार मुलाकातें कर रहे हैं और वैश्विक नेता के रूप में मोदी को मान्यता दे रहे हैं। इसलिए जब मोदी को अमेरिका की पहली राजकीय यात्रा का निमंत्रण मिला तो ओबामा की खीझ स्वाभाविक थी। जहां तक ओबामा की ओर से अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का मुद्दा बार-बार उठाये जाने और भारत को नसीहत देने की बात है तो इस बारे में कहा जा सकता है कि ओबामा को पहले यह सीख अपने देश को देनी चाहिए। देखा जाये तो बराक हुसैन ओबामा बहुत बड़े ढोंगी हैं। उनके कार्यकाल पर नजर डालेंगे तो पायेंगे कि अपने पूर्ववर्ती जॉर्ज डब्ल्यू बुश के मुकाबले अपने कार्यकाल में ओबामा ने दस गुना ज्यादा एअर स्ट्राइक करवायीं। बुश के कार्यकाल में कुल 57 हवाई हमले हुए थे जबकि ओबामा के कार्यकाल में 563 हवाई हमले हुए। जो हवाई हमले हुए वह सभी मुस्लिम देशों पर हुए जिनमें पाकिस्तान, सोमालिया, यमन, अफगानिस्तान और सीरिया आदि शामिल हैं। ओबामा के आदेश पर हुए हवाई हमलों में सिर्फ आतंकवादी ही नहीं मारे गये बल्कि हजारों की संख्या में आम नागरिक भी हताहत हुए। इसके अलावा, जिस अमेरिका में सबसे ज्यादा नस्लवाद या रंग के आधार पर भेदभाव की घटनाएं सामने आती हैं वह दूसरों को सीख देने से पहले यदि अपने अंतर्मन में झांके तो बेहतर रहेगा। सीएनएन पर ओबामा का पूरा साक्षात्कार पढ़ेंगे तो यह भी पता चलेगा कि उन्होंने बुझे मन से प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका में अगवानी की थी। अपने साक्षात्कार में ओबामा ने कहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति के समक्ष कई बार यह मजबूरी होती है कि हम जिन्हें पसंद नहीं करते उनका भी स्वागत करना पड़ता है और उनसे बात करनी पड़ती है। बहरहाल, ओबामा के साक्षात्कार को पढ़ कर लगता है कि उन्हें अब भी यह भ्रम है कि वह अमेरिका के राष्ट्रपति हैं और विश्व के मामलों में उनकी कोई भूमिका है। देखा जाये तो ओबामा अपने कार्यकाल में दुनिया को तमाम समस्याएं ही देकर गये हैं जिनकी भरपाई अमेरिका सहित अन्य देश कर रहे हैं। मानवाधिकार प्रेमी का मुखौटा लगाये इस शख्स के कार्यकाल में गलत नीतियों की वजह से जितने आम नागरिक मारे गये उसके लिए इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा।

■ **नीरज कुमार दुबे**

विदेशी मीडिया का इस संबंध में खूब सहारा लिया जाता है। बीबीसी गुजरात दंगों के 20 साल बाद उस पर डॉक्यूमेंट्री बनाती है। अमेरिकी अखबार वाल स्ट्रीट जनरल की पत्रकार सबरीना सिद्दीकी को भारत में हो रहे विकास या मजबूत होती भारतीय अर्थव्यवस्था के संबंध में प्रश्न पूछने की बजाय सिर्फ अल्पसंख्यकों की चिंता सताती है।

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. की ओर से इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. C/O शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. RNI. 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 । प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, स्थानीय संपादक : ओम प्रकाश अमरेन्द्र*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 07759972937, 06562-240042/ 222539, फैक्स नम्बर : 06562-241176/231257, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-83001, फोन नं.- 0651-2283384/ फैक्स : 0651-2283386, दिल्ली कार्यालय : 25-एलएफ, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली-1, गढ़वा कार्यालय : मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लातेहार कार्यालय : रमेश सेनेटरी, मेन रोड, लातेहार -829206, फोन : 9128656020, 7763034341, लोहरदगा कार्यालय : रिलायंस पेट्रोल पंप के बगल में, आशा कॉम्प्लेक्स लोहरदगा- फोन : 7903891779, 8271983099, ई-मेल : rnm_hb@yahoo.co.in, rnm.hvb@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

छुट्टियों के दिन ट्रेन में कंफर्म सीट के लिए मारा मारी

गर्मियों में छुट्टियां मनाने के लिए लोगों का घूमने जाने का सिलसिला शुरू हो गया है। गर्मियों की छुट्टी में परिजनों एवं बच्चों को किसी दूसरे शहर में घुमाने जाना है, लेकिन उन्हें ट्रेन में कंफर्म सीट नहीं मिल पायी। इस पर उन्होंने बस की मदद ली तो उसमें भी काफी भीड़ थी। गर्मी में भीड़ को देख उन्होंने घूमने का कार्यक्रम ही टाल दिया और वापस घर चले गए। यह तो एक मात्र उदाहरण है। ऐसा ही दूसरे यात्रियों के साथ देखने को मिल रहा है और वे छुट्टियों का आंनद लेने के लिए बाहर नहीं जा पा रहे हैं अथवा उन्हें ट्रेवल्स एजेंसियों के जरिए बस, कार आदि महंगे किराये पर सफर तय करने को मजबूर होना पड़ रहा है। गर्मी की छुट्टियों में हर किसी को कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। चाहे वह वयस्क हो या बच्चे। बच्चों को अपने परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताने का मौका मिलता है साथ ही उन्हें समझने और उनके साथ मस्ती करने का मौका मिलता है। गर्मी की छुट्टियों का मुख्य उद्देश्य छात्रों को गर्मी के मौसम में असहनीय गर्मी से कुछ राहत देना है। गर्मी के मौसम में पलामू सहित पूरे भारत में वातावरण अत्यधिक गर्म हो जाता है, जो विद्यार्थियों को हानि पहुंचा सकता है। इसलिए गर्मी की छुट्टियां उनके लिए पढ़ाई और गर्मी से राहत पाने का एक बहुत अच्छा विकल्प है। गर्मियों की छुट्टियां आमतौर पर छात्रों के जीवन का सबसे सुखद समय होता है। यह उनके लिए बहुत मायने रखता है क्योंकि उन्हें अपने दैनिक स्कूल की दिनचर्या से आराम करने के लिए कुछ समय मिलता है। गर्मी की छुट्टियों के साथ-साथ इसका उद्देश्य छात्रों को साल भर की पढ़ाई और अंतिम परीक्षा के बाद एक लंबा ब्रेक देना भी है। वार्षिक परीक्षा समाप्त होने के बाद, छात्र थका हुआ महसूस करते हैं और अध्ययन में रुचि खो देते हैं, इसलिए, उन्हें अध्ययन के एक लंबे वर्ष के बाद अपने स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए आराम की आवश्यकता होती है। अधिकांश बच्चे और छात्र गर्मी की छुट्टियों की प्रतीक्षा करते हैं क्योंकि यह एक संतोषजनक अवसर होता है जब वे आराम से अपनी दिनचर्या में बदलाव कर सकते हैं और अपने परिवार और दोस्तों के साथ ऑनलाइन टिकट व्यवस्था करने के लिए रेलवे स्टेशन पर तत्काल कोटे की तलाश में पहुंच रहे हैं। यह टिकट एक दिन पहले ही निर्धारित होता है। खिड़की खुलने के एक घंटे के अंदर टिकट मिल गया तो ठीक वरना नहीं मिल पाता। जून में अकसर ही ट्रेनों में यह स्थिति रहती है। यात्रियों की सुविधा के लिए। कालका मेल, जम्मूतवी एक्सप्रेस, गंगासुतलेज एक्सप्रेस, कर्नाटका एक्सप्रेस व अन्य ट्रेनों में जून माह को 2-एस में वेटिंग 44, स्लीपर में 104, थर्ड एसी में 58 व सेकेंड एसी में 29 है। यह स्थिति छह, सात, आठ, नौ, दस, 11, 28 जून तक है। गर्मी की छुट्टी में ट्रेनों में आरक्षित सीटों के लिए मारामारी के हालात हैं। 28 जून तक लंबी दूरी की अधिकांश ट्रेनों में सीट नहीं होने के साथ वेटिंग लगभग 175 तक चली गई है। गर्मियों की छुट्टियों के साथ ही ट्रेनों में आरक्षित सीटों के लिए जद्दोजहद शुरू हो गई है। 28 जून तक ज्यादातर ट्रेनों में सीट नहीं मिल पा रही हैं। कई ट्रेनों में तो वेटिंग 108 से लेकर 175 तक जा रही है। इससे ट्रेनों और बसों में भीड़ बढ़ गई है। इस दौरान सफर करने वाले यात्रियों को कंफर्म सीट न मिलने से बेहद दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। मजबूरी में उन्हें सामान्य कोच में भारी भीड़ के बीच सफर तय करना पड़ रहा है अथवा दूसरे वाहनों में सफर करने को

मजबूर होना पड़ रहा है। स्कूल-कॉलेजों में गर्मी की छुट्टी हो जाने के बाद परिजन घर से घूमने जाने लगे हैं। कोरोना संक्रमण के चलते पिछले दो सालों से लोग गर्मियों की छुट्टियों का आनंद उठाने के लिए कहीं घूमने-फिरने नहीं जा पा रहे हैं। अधिकांश लोग शिमला जैसी पहाड़ी एवं ठंडे स्थानों पर घूमने जाना चाहते हैं। दूसरी पसंद माता वैष्णों देवी के दर्शन के लिए जम्मू-कटरा आदि जाने की है, लेकिन ट्रेनों में काफी भीड़ होने के चलते उन्हें सीट नहीं मिल पा रही है। टिकट आरक्षित कराने के लिए लोग परेशान हैं। तत्काल में भी उन्हें रिजर्वेशन नहीं मिल पा रहा है। वेटिंग सूची भी काफी लंबी है। ऐसे में लोग मन मारकर अपना घूमने का कार्यक्रम टाल रहे हैं।

❖ वेद प्रकाश

ट्रेन टिकट में ऑनलाइन माध्यम में बदलाव

गर्मी की छुट्टियां में रेलवे स्टेशनों पर भी भारी भीड़ जुटती है। ट्रेनों में कंफर्म सीट का टिकट को मिलना मुश्किल हो जाता है। टिकट प्रणाली ऑनलाइन माध्यम में बदल गई है, अब किसी भी स्थान पर ऑनलाइन द्वारा आसानी से टिकट बुक किया जा सकता है। रेलवे में SL क्लास का मतलब स्लीपर क्लास होता है और ये भारतीय ट्रेन में सबसे लोकप्रिय केटेगरी में से एक है। इस वर्ग में ज्यादातर लोग यात्रा करते हैं। ज्यादातर मामलों में स्लीपर क्लास में 72 से 78 सीटें होती हैं और सीट कॉन्फि गरेशन 3 + 3 + 2 जैसा होता है। इसका मतलब है कि डिब्बे के दोनों ओर तीन सीटें हैं और डिब्बे के गलियारे वाली साइड दो सीटें हैं। ये केटेगरी यात्रियों के बजट में भी होती है। 1ए क्लास को ही फर्स्ट क्लास एसी का नाम दिया गया है। इसे शताब्दी एक्सप्रेस में एग्जीक्यूटिव क्लास या ईसी के नाम से भी जाना जाता है। यह टिकट का सबसे प्रीमियम वर्ग है। जिसे आप बुक कर सकते हैं और इस टिकट का किराया अक्सर फ्लाइट टिकट की तुलना में ज्यादा होता है। यहां के कोच केबिन में बंटे होते हैं और ज्यादातर केबिन में 4 सीटें होती हैं। ध्यान रखने वाली बात ये है कि अगर आप 1 ए में सीट बुक कर रहे हैं तो यात्रा शुरू होने से पहले टीटीई आपको सीटें देगा। इस कोच में सीटें काफी आरामदायक होती हैं। यहां तक कि इस कोच में खाना भी काफी वैरायटी में मिलता है। 2A, AC 2 Tier का दूसरा नाम है या आप इसे निकनेम नाम भी बोल सकते हैं, जो AC 3 Tier और AC 1 Tier के बीच में आती है। इस क्लास की सीटें भी काफी आरामदायक होती हैं और दोनों तरफ दो-दो सीटें होती हैं। गलियारे की तरफ भी दो सीटें

होती हैं। इसमें भी टिकट थोड़ी महंगी होती है, लेकिन आरामदायक सफर आपको बिल्कुल भी अफसोस नहीं होंगे देगा। यह 3 टियर एसी के लिए है और यह स्लीपर क्लास में एसी कोच में उपलब्ध सबसे किफायती टिकट है। यहां सीटों की संख्या कोच के हिसाब से बदलती रहती है, जहां एक बोगी में न्यूनतम सीटें 64 और अधिकतम 72 सीटें हो सकती हैं। हमारी लिस्ट में अगली केटेगरी सेकेंड सिटिंग है और ये सिटिंग क्लास में उपलब्ध सबसे सस्ती टिकट है। सीटें काफी आरामदायक नहीं होती हैं, लेकिन अगर आप कम दूरी की यात्रा कर रहे हैं, तो आप ये सीट को चुन सकते हैं। इस रो में 6 सीटें हैं सीटें एक-दूसरे के आमने-सामने रहती हैं। 2एस में सीटों की कुल संख्या 108 सीट प्रति बोगी है। ट्रेनों की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी, आगमन और प्रस्थान का समय, अब स्टेशनों पर बड़ी स्क्रीन पर आसानी से उपलब्ध है। स्टेशनों पर टिकट मशीनें लगा दी गई हैं। डिजिटलाइजेशन की ओर बढ़ रहे रेलवे स्टेशनों की सेवाओं में उन्नति में दिखाई दे रही है। रेलवे स्टेशन यात्रा मानदंड के संबंध में यात्रियों को विभिन्न सुविधायें देने वाला एक स्थान हैं। पहले की स्थिति से वर्तमान की स्थितियों और सेवाओं में बहुत कुछ सुधार हुआ है। यात्रियों की सुविधाजनक यात्रा और इस प्रकार डिजिटलाइजेशन की ओर बढ़ने के लिए भारतीय रेलवे विभिन्न तकनीकों को समायोजित करने के लिए अपने स्तर पर पूरी कोशिश कर रहा है। तकनीकी प्रगति द्वारा सेवाओं में निरंतर सुधार, यात्रियों की यात्रा को सुरक्षित, सुविधाजनक और पर्यावरण के अनुकूल बना रहा है रेलवे स्टेशन बहुत अधिक भीड़ वाले स्थान होते हैं। यहां का परिदृश्य काफी अलग होता है। लोग यहां पर दिन-रात चलते रहते हैं। कई अपने गंतव्यों की तरफ यात्रा कर रहे होते हैं तो उनमे से कुछ अपने गंतव्य पर पहुंच रहे होते हैं। सामान भी एक स्थान से दुसरे स्थान तक लाया ले जाया जाता है, माल लोड या अनलोड किया जाता है। कुल मिलाकर यह एक महत्वपूर्ण स्थान है जो कई बुनियादी जरूरतों और गतिविधियों की पूर्ति करता है। रेलवे स्टेशन पर कितनी और किस स्तर की सुविधाएं हैं यह उसके स्थान पर निर्भर करती हैं। यदि यह एक छोटा स्टेशन है, तो यहां पर आपको कुछ बुनियादी सुविधाएं जैसे कि छोटी चाय की दुकान, बेंच, वॉशरूम और टिकट काउंटर ही मिलते हैं। लेकिन बड़ा रेलवे स्टेशन कई तरह की सुविधाएं प्रदान करता है जैसे शौचालय, एटीएम मशीन, रेस्तरां, विभिन्न खाद्य स्टाल, और भी बहुत कुछ। बड़े रेलवे स्टेशन कम संख्या में हैं। रेलवे स्टेशनों के अस्तित्व से लोग लाभान्वित होते हैं। हर दिन लाखों लोग यात्रा करते हैं। रेलवे स्टेशन लोगों को अपनी निर्धारित ट्रेन की प्रतीक्षा करने के लिए एक स्थान प्रदान करते हैं। कैशलेस लेन-देन को बढ़ावा देते हुए, प्रत्येक और हर तरह की फूड ऑर्डरिंग सेवाएं ऑनलाइन लागू होती हैं। अधिकांश स्टेशन जैव-शौचालयों से सुसज्जित हैं। ट्रेन भारतीय रेलवे के लिए एक बड़ी उपलब्धि रही है रेलवे स्टेशन सीसीटीवी कैमरों, वाई-फाई और साथ ही विभिन्न सुरक्षा उपायों जैसी सुविधाओं से सुसज्जित हैं। वर्तमान स्थिति में आने पर, जब पूरी दुनिया कोरोना महामारी से प्रभावित हुई, तब यात्रियों के लिए रेलवे स्टेशनों पर सुविधाओं में सुधार किया गया। डिजिटल रूप से अलग-अलग ऑटोमैटिक सैनिटाइजेशन मशीनें लगाई गई, परीक्षण सुविधाएं, मास्क और अन्य सुरक्षा सेवाएं सुनिश्चित की गई हैं।

❖ ओपी

रेल में सफर करना सुलभ

गर्मी छुट्टी में ट्रेन से यात्रा करना अविश्वसनीय रूप से दर्शनीय हो सकता है। रेलवे स्टेशन एक ऐसी जगह है जहां विभिन्न ट्रेनें आती हैं और प्रस्थान करती हैं और कुछ ऐसा ही यात्रियों और सामानों के साथ भी होता है। किसी यात्री की यात्रा एक रेलवे स्टेशन से शुरू होती है और रेलवे स्टेशन पर ही समाप्त भी होती है, इस प्रकार यह स्टेशन ट्रेनों के साथ यात्रा करने के लिए अनिवार्य हो जाता है। यहां कई ट्रैक होते हैं जो विभिन्न ट्रेनों के लिए अलग-अलग मार्ग हैं। स्टेशन पटरियों के साथ थोड़ी ऊंचाई पर बना होता है। यह स्थान तमाम तरह की सुविधाओं से सुसज्जित होता है। ट्रेन यात्रा बस हवाई और कारकी तुलना में एक बेहतर, अधिक आराम का अनुभव करवाती है। ट्रेन की यात्रा बहुत ही शानदार होती है क्योंकि यह आपको वास्तविक प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेने का मौका देती है। आज की तारीख में, गांव व देशभर में लगभग 1000 से भी अधिक रेलवे स्टेशनों को पूरी तरह से विद्युतीकृत किया गया है। यह सब सौर ऊर्जा का उपयोग करके किया जाता है। यह स्थिरता की दिशा में एक सफल कदम है और निश्चित रूप से सतत विकास लक्ष्य को पूरा करने में मदद करेगा। इसके इस्तेमाल से कार्बन उत्सर्जन भी कम हो जाएगा।लंबे पथ और रात भर मुसाफरी के लिए ट्रेन सबसे सुरक्षित परिवहन में से एक है। गर्मी के छुट्टियों में छोटे बच्चों के साथ रेल में सफर करना अधिक सुलभ हो जाता है। रेलयात्रा के कई सारे लाभ है। ट्रेन की मुसाफरी सबसे सस्ती और आरामदायक होती है। प्रतिकूल मौसम की स्थिति का रेलयात्रा पर कम प्रभाव पड़ता है। रेल यात्रा सुरक्षित होती है।क्योंकि चोरी या डकैती की संभावना कम होती है।छोटे बच्चों और सीनियर सिटीजन के लिए ट्रेन में कई व्यस्था है।जैसे भोजन और चाय के

स्टॉल, शौचालय, टिकट काउंटर, आदि। ट्रेन का इन्तजार कर रहे यात्रियों के लिए या वहां पहुंचने वाले लोगों के लिए यह एक फायदेमंद सुविधा साबित होती है। बहुत से यात्री अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए यहां से अपनी संबंधित ट्रेनों में सवार होते हैं। कुल मिलाकर यह जगह चारों ओर चहल-पहल से भरा हुआ होता है।किताबें पढ़कर, खेल खेलकर, संगीत को सुनते हुए आप अपना समय सफर के दौरान आराम से काट सकते हो। ट्रेन में चढ़ने वाले विक्रेता बच्चों के अनुकूल स्नैक्स बेचते हैं। नमकीन मूंगफली, चॉकलेट और काजू बच्चों के लिए खुशी का एक बड़ा स्रोत हैं। यहां का परिदृश्य भी काफी मनभावन होता है। यहां पर विभिन्न क्षेत्रों के लोग देखे जा सकते हैं। कई रेलवे स्टेशनों पर विभिन्न श्रेणियों के लिए एक प्रतीक्षालय भी है। लोग अपने भारी भरकम सामान के साथ, प्लेटफार्म की ओर बढ़ते रहते हैं। आपराधिक गतिविधियों की जांच के लिए रेलवे पुलिस के साथ सुरक्षा सेवाएं भी मौजूद होती हैं।

❖ गुड्डू कुमार

यात्रा हमें जीवन के कई सबक सिखाती है

गर्मी छुट्टियों में यात्रियों की भीड़ भाड़ खूब नजर आ रहे हैं। एक रेल यात्रा निश्चित रूप से एक शानदार खुशी का अवसर देता है। इसके अलावा, रेल की यात्रा व्यक्तियों को तीव्र उत्साह की भावना से भर देती है। यात्रा की दूरी लंबी होने पर यात्रा का यह तरीका सबसे अच्छा है। एक रेल यात्रा एक ऐसी आभा बनाती है जिसे अन्य प्रकार की यात्रा के साथ अनुभव नहीं किया जा सकता है। रेलवेज हमेशा से देश की आर्थिक प्रगति में अहम भूमिका निभाती हैं। हमारे देश की अधिकतम आय इसी क्षेत्र से आती है। हर देश के प्रगति का पथ निर्धारित करती है, रेलवे। अन्य साधनों से बेहद सस्ती और आरामदायक होने से हर तबके के लोग इससे यात्रा करना बेहतर समझते है। हमारी देश की गरीब जनता का इसके बिना काम ही नहीं चल सकता। ट्रेन का सफर कई मायनों में अनोखा होता है। ट्रेन की यात्रा हमें जीवन के कई सबक सिखाती है। सफर के द्वारा हुए अनुभव और सीखे गए सबक जिंदगी के लिए काफी मूल्यवान हैं। यह हमें प्रकृति के करीब लाती है। व्यस्त प्लेटफॉर्म और खूबसूरत नजारें हमें ऐसी यादें देती हैं जिन्हें हम हमेशा संजो कर रखेंगे। सभी लोगों को अपनी जिंदगी में एक बार रेलयात्रा जरूर करनी चाहिए। क्योंकि गमीयों के छुट्टियों में रेल यात्रा के दौरान हम बाहरी वातावरण का भी अनुभव कर सकते हैं और आनंद पूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से पहुंच सकते हैं। मैं अपने माता-पिता के साथ दिल्ली घूमने गया था पहले हम टैक्सी लेकर रेलवे स्टेशन गए। हमने टिकट खरीदे और प्लेटफॉर्म पर ट्रेन का इंतजार करने लगे। ट्रेन प्लेटफॉर्म पर समय अनुकूल आ चुकी और हम करीब रात को दिल्ली के लिए निकल गए। हम भाग्यशाली थे कि हमें अच्छी सीटें मिलीं। हमने रास्ते में टी.टी.सी. आया और हमारे टिकट चेक किए। हमने रात का भोजन ट्रेन में ही किया। ट्रेन का भोजन काफी स्वादिष्ट था और हमने इस स्वादिष्ट भोजन का लुफ्त उठाया। रात में सोने के लिए हमें ट्रेन की तरफ से चादर ,तकिया और कंबल भी दिया गया। हम दूसरे दिन दोपहर के दिल्ली पहुंचे। हमने सफर के दौरान काफी मजे किये। रास्ते में हमें पहाड़ियां,जंगल और नदियों का भी आंनद उठाया। सफर के दौरान हम लोगों से मिले, किताबें पढ़ी और बैठकर कई खेल भी खेले। सच में रेलयात्रा का मेरा अनुभव काफी शानदार रहा।ट्रेन यात्रा हम सभी लोगों के लिए अन्य परिवहन साधनों की अपेक्षा अधिक सस्ता होता है और हमें आराम का अनुभव कराता है। रेल में यात्रा करते समय हम कई व्यक्तियों से मिलते हैं जिससे हमारी दोस्ती भी हो जाती है तथा यात्रा के दौरान हमारे परिचय के कई लोग मिलते हैं जिससे बातें करते हुए हम आसानी से अपने तय किए गए दूरी तक पहुंच जाते हैं। हमें रेल यात्रा के दौरान चोरों, जेब कतरों, लुटेरों आदि से सावधान रहना चाहिए। हमें रेल यात्रा के दौरान अपने हाथ या फोन को बाहर नहीं निकालना चाहिए। हमें अपने टिकट को हमेशा अपने साथ रखना चाहिए।रेल के सफर में कई तरह के अवसर मिलते हैं। इसके अलावा, रेल एक मिलनसार वातावरण प्रदान करती है। रेल की यात्रा में, यात्रियों के बीच बातचीत लगभग हमेशा होती रहती है। हम सभी को सावधानियां बरतते हुए रेल यात्रा का आनंद लेना चाहिए।

❖ बजरंगी कुमार

पहली ट्रेन यात्रा बाबा अजमेर शरीफ की

मैंने बस से तो कई बार यात्रा की है लेकिन रेलगाड़ी से एक बार भी यात्रा नहीं की है। मनुष्य की जिज्ञासा कभी भी एक ही स्थान पर और एक ही उद्देश्य तक सीमित नहीं रहती है।
गर्मी के समय में मेरे पिता जी ने अजमेर शरीफ दरगाह जाने का कार्यक्रम बनाया। इस सुनहरे अवसर पर हम सभी ने रेलगाड़ी द्वारा अजमेर जाने की योजना बनाई थी। यह ट्रेन से यात्रा करने का मेरा पहला अनुभव करने जा रही थी। लेकिन काफी खूबसूरत था। जैसे ही गार्ड ने सीटी बजाई, ट्रेन स्टेशन से दूर होती चली गई। यह कहा जा सकता है कि रेलवे स्टेशन उन जगहों पर महत्वपूर्ण हैं जहां दैनिक आधार पर विभिन्न गतिविधियां की जाती हैं। लोग इन स्टेशनों के कारण यात्रा के दौरान खुद को मैं बहुत आनंदित था कि मैं अपनी पहली यात्रा को पूर्ण करने जा रहा था। अजमेर शरीफ जाने के लिए हम सभी लोगों में तैयारी के लिए भाग-दौड़ शुरू हो गयी थी। हमारी माता जी ने हमारे पहनने और खाने के लिए बहुत सा सामान रख लिया था। मां पिताजी से अधिक हम अपनी पहली यात्रा पर उत्सुक होते हैं। लोगों को दूर की यात्रा में बस की जगह रेल अधिक आनंद देती है। बस में सोने, इधर-उधर धुमने-फिरने की सुविधा नहीं होती है लेकिन रेल में सभी सुविधाएं होती हैं। किसी भी यात्रा का अपना अलग सुख होता है। यात्रा करना बहुत लोगों को पसंद होता है। स्थल यातायात में रेलगाड़ी का बहुत महत्व होता है। हमारे पलामू में सारे देशों को रेल लाईनों से जोड़ा गया है। मेरी पहली यात्रा 2016 में पूरी हुई थी। उस समय मैं पांचवी कक्षा में पढ़ता था। मैं अपने परिवार के साथ गर्मी की

छुट्टियों में बाबा अजमेर शरीफ दरगाह गया था। यात्रा तो बहुत लोग करते हैं लेकिन पहली यात्रा का अनुभव बहुत खास होता है। रेल यात्रा करते समय हमारे दोस्त भी बन जाते हैं जो हमसे दूर रहते हैं क्योंकि यात्रा करने के लिए बहुत से लोग बहुत दूर-दूर से यात्रा करने के लिए आते हैं। रेलवे प्लेटफार्म से हम खाने-पीने और रोमांचक वस्तुएं खरीद सकते हैं। प्लेटफार्म पर हम मेले जैसा अनुभव करते हैं। हम पूरे तीन लोग थे मेरे माता-पिता और मैं था। पहली यात्रा के समय बहुत आनंदित था। हम सभी जरूरतमंद सामान लेकर ऑटो द्वारा रेलगाड़ी के स्टेशन पहुंचे थे। हमारी पहली यात्रा की शुरूआत स्टेशन से हुई थी। हम लोगों ने अपनी टिकट स्टेशन से खरीदी। स्टेशन से हम जो चाहें खरीद सकते हैं। उस दिन हम लोग बहुत जल्दी स्टेशन पर पहुंच गये थे। डाल्टेनगंज प्लेटफार्म पर बैठने के लिए बेंचों की सुविधा थी जिस पर हम सभी आरामपूर्वक बैठ गये। बाबा अजमेर शरीफ दरगाह जाने वाली गाड़ी को रात को आना था लेकिन एक ध्वनी प्रसारण की मदद से हमें यह पता चला कि अजमेर जाने वाली रेलगाड़ी आज 2 घंटा देर से आएगी। हम लोग प्लेटफार्म पर इधर-उधर घूमने लगे और खेल खेलना शुरू कर दिया। हम लोग प्रतीक्षा करने के लिए समाचार पत्र और पत्रिकाओं का अध्धयन भी किया। मैंने रेलगाड़ी में पढ़ने के लिए एक पत्रिका खरीदी वह बहुत ही ज्ञानवर्धक पत्रिका थी जिसमें सभी जानकारी की बातें छपी हुईं थीं। रेलगाड़ी झुक-झुक करती हुई अपने प्लेटफार्म पर पहुंची। फिर हम ट्रेन पर सवार हो गए। फिर हम सभी ने अपनी-अपनी सीटों पर सूती चादर बिछाई और उस पर लेट गये। पिता जी ने पहले से ही दो तकियों को खरीद लिया था। जिन्हें मैंने मुंह से हवा भरकर फुलाया था। जब मैंने अपनी आंखों को बंद किया तो रेलगाड़ी के चलने की लयात्मक ध्वनी को सुनकर मुझे बहुत आनंद मिल रहा था। कुछ देर बाद हमें नींद आ गयी।
हम सभी लोग अपनी पहली यात्रा करते समय बहुत खुश थे। मैं अपनी निर्धारित जगह पर बैठकर रेलगाड़ी से बाहर के दृश्य का आनंद ले रहा था। खिड़की से बाहर सभी तरह के दृश्य सामने आ रहे थे और वो अपने दर्शन देकर पीछे दूर जाकर छिप जाते थे। उन दृश्यों को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वे मेरे साथ आंख-मिचोली खेल रहे हों। मुझे अपनी पहली रेल यात्रा में बहुत आनंद आ रहा है। मुझे बाहर के दृश्य अत्यंत ही मोह लेने वाले लग रहे हैं। रेलगाड़ी से बाहर हरियाली से भरे खेतों का और महल तथा अट्टालिकाओं से भरे शहर का दृश्य बहुत ही मनमोहक लग रहा था। हम एक पल खेतों से गुजर रहे होते हैं तो एक पल शहर से गुजर रहे होते हैं। इतने कम समय में इतनी विविधता मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। हमारी रेलगाड़ी बड़े-बड़े शहरों, नगरों, खेतों, नदियों, और जंगलों को पार करती हुई तीसरे दिन सुबह बाबा अजमेर शरीफ दरगाह पहुंची थी।

❖ कुमारी रिया

संकलन : ओम प्रकाश प्रजापति

KASHYAP'S DENTAL CLINIC
Dr. Vaibhav Kashyap
Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist &
Implantologist Certified Orthodontist, MIDA
" Smiles & More"
छात्र-छात्राओं के लिए
50% की छूट
Facilities
❖ आरसीटी
❖ पायरिया का ईलाज
❖ टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
❖ स्माईल डिजाइन
❖ इनविजिवल क्लिप
❖ दंत रोपण
❖ फिक्स दाँत लगाना
❖ अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER
SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

NEWS इन ब्रीफ

फोगाट हत्याकांड मामले में सुधीर सागवान को मिली जमानत

पणजी। गोवा की एक अदालत ने हरियाणा की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता सोनाली फोगाट की हत्या के मामले में मुख्य आरोपी सुधीर सागवान को जमानत दे दी है। पिछले साल अगस्त में फोगाट (43) अपने दो सहयोगियों के साथ पार्टी करने के बाद अंजुना गांव में मृत मिली थी। दोनों पर आरोप है कि उन्होंने फोगाट को प्रतिबंधित मादक पदार्थ खिला दिया था। जिला एवं सत्र अदालत ने सागवान को शुक्रवार को जमानत दे दी और उसे एक लाख रुपये का मुचलका पेश करने का निर्देश दिया है। सांगवान के वकील ने कहा कि अदालत ने उनके मुवक्किल को राज्य नहीं छोड़कर जाने और हर शुक्रवार को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के समक्ष पेश होने को कहा है। गोवा पुलिस ने सागवान और उसके साथी सुखविंदर सिंह को इस मामले के संबंध में पिछले साल गिरफ्तार किया था।

महबूबा मुफ्ती ने पटना साहिब में मत्था टेका

पटना (बिहार)। जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती शनिवार को पटना साहिब पहुंचीं। उन्होंने तख्त श्री हरमंदिर गुरुद्वारा में मत्था टेका और आशीर्वाद लिया। गुरुद्वारा के प्रबंधन कमेटी के सदस्यों ने अंग वस्त्र एवं सिरोपा देकर उन्हें सम्मानित किया। महबूबा मुफ्ती ने आधे घंटे तक गुरुद्वारा धूमा और यहां किए जा रहे सामाजिक कार्यों की प्रशंसा की। मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा कि भारतवर्ष एक ऐसा देश है, जहां सभी समुदाय हिंदू, मुसलमान, सिख ईसाई सभी एक साथ मिलकर रहते हैं और एक दूसरे के पर्व त्योहार में साथ मिलकर खुशियां मनाते हैं।

बीएसएफ ने भारत-पाक सीमा पर बरामद की दो किलो हेरोइन

बीकानेर। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों ने राजस्थान के बीकानेर सेक्टर से लगी भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर रावला में दो किलोग्राम हेरोइन बरामद की। इसकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में करीब 10 करोड़ रुपये आंकी गई है। बीएसएफ सूत्रों के अनुसार शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात यहां तैनात जवानों को पाकिस्तान की ओर से आ रहे ड्रोन की आवाज सुनाई दी। तत्काल प्रभाव से जवानों ने ड्रोन की दिशा में फायरिंग कर इलाके की सर्चिंग शुरू की। इस दौरान दो पैकेटों में हेरोइन बरामद की गई।

15 दल मिले पर दिल किसी का नहीं मिला : अनुराग ठाकुर

एजेंसी। चंडीगढ़

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने देश में महागठबंधन की सभी संभावनाओं को खारिज करते हुए कहा है कि पटना में 15 दल एक साथ तो आए, लेकिन दिल किसी के नहीं मिल पाए। जो लोग खुद एक-दूसरे के खिलाफ हैं वह देश को स्थिर सरकार नहीं दे सकते। अनुराग ठाकुर मोदी सरकार के नौ साल पूरे होने के अवसर पर शनिवार को पानीपत में करनाल लोकसभा स्तर की रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विपक्षी गठबंधन पूरी तरह से निजी स्वार्थों से भरा हुआ है। जो लोग निजी स्वार्थों को आगे रखकर काम कर रहे हों, वह देश का भला कैसे कर सकते हैं। अनुराग ठाकुर ने कहा कि देश की जनता वर्ष 2024 में एक

बार फिर से नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए तैयार है। हरियाणा की पूर्व हुड्डा सरकार पर कटाक्ष करते हुए अनुराग ठाकुर ने कहा कि कांग्रेसी जीजा को हरियाणा की पूर्व सरकार ने सबसे अधिक लाभ दिया है। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में यह देश विश्व शक्ति के रूप में उभरा है। उन्होंने मोदी सरकार में हुए विकास कार्यों तथा केंद्र की योजनाओं से हरियाणा को मिले लाभ के बारे में रिपोर्ट कार्ड पेश करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने विदेश में भी देश का मान बढ़ाया है जबकि कांग्रेस ने सदा नीचा दिखाने की कोशिश की है।इस अवसर पर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ओम प्रकाश धनखड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में मौजूदा सरकार ने कई योजनाएं लागू की हैं। जिसका लाभ लोगों को मिल रहा है। इस अवसर पर करनाल के सांसद संजय भाटिया, जिला अध्यक्ष अर्चना गुप्ता, राज्य सभा सांसद कृष्णलाल पंवार, प्रदेश महामंत्री वेदपाल एडवोकेट, संदीप जोशी करनाल संसदीय क्षेत्र के सभी विधायक एवं नेता मौजूद थे।

2024 के चुनाव में चेहरा नहीं, जनता के मुद्दे हावी रहेंगे : तेजस्वी यादव

एजेंसी। पटना

बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने शनिवार को कहा कि 2024 का लोकसभा चुनाव किसी एक व्यक्ति के चेहरे पर नहीं बल्कि आम लोगों के मुद्दों पर लड़ा जाएगा। तेजस्वी यादव ने बिहार की समृद्ध विरासत की सराहना करते हुए कहा कि बिहार लोकतंत्र की जन्मभूमि है और यहां कई आंदोलन शुरू हुए।

तेजस्वी यादव ने आगे कहा कि बिहार लोकतंत्र की जन्मस्थली है, जहां बड़े-बड़े आंदोलन हुए हैं। आपातकाल के दौरान देश को दिशा दिखाने का बीड़ा बिहार ने उठाया था। आज जब देश ऐसे ही हालात

से जूझ रहा है तो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के शीर्ष नेताओं का पटना में विपक्ष की बैठक के लिए एक साथ आना बड़ी बात थी। हम यहां अपने लिए इकट्ठा नहीं हुए हैं, बल्कि आम आदमी के हितों के लिए लड़ने और फासीवादी ताकतों को हराने के लिए एकजुट हुए हैं। तेजस्वी यादव ने कहा कि हमारा लक्ष्य देश को एकजुट करना है। अगला चुनाव किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं होगा बल्कि यह जनता का चुनाव है।

जब तेजस्वी यादव से पूछा गया कि क्या सीएम अरविंद केजरीवाल इस बैठक से खुश नहीं हैं। इसके जवाब में तेजस्वी यादव ने कहा कि कोई भी असंतुष्ट नहीं है। बता दें कि शुक्रवार को पटना में विपक्षी दलों की बैठक हुई। इस बैठक में समान विचारधार वाले 20 दल एक मंच पर आए। इस बैठक में 2024 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को हराने को लेकर मंथन हुआ।

मणिपुर : 1,095 हथियार, 13,702 गोला-बारूद और 250 बम बरामद

एजेंसी। इंफाल

हिंसा प्रभावित मणिपुर में सुरक्षा बलों की तलाशी अभियान के दौरान अबतक 1,095 हथियार, 13,702 गोला-बारूद और विभिन्न प्रकार के 250 बम बरामद किए गए हैं। मणिपुर पुलिस के केंद्रीय नियंत्रण कक्ष ने यह जानकारी दी। यह हथियार और गोला-बारूद 03 मई की हिंसा के बाद विभिन्न थानों से उपद्रवियों ने लूट लिये थे। एक रिपोर्ट के मुताबिक मणिपुर के विभिन्न पुलिस थानों से उपद्रवियों ने 4,000 से अधिक हथियार लूट लिये थे। पुलिस के अनुसार कुछ स्थानों को छोड़कर अधिकतर जिलों में स्थिति सामान्य है, जहां छिटपुट घटनाओं की खबरें हैं। जिलों में नियमित रूप से जिला सुरक्षा समन्वय समिति की बैठकें आयोजित की जा रही हैं। संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त, फ्लैग मार्च, घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस के अनुसार केंद्रीय बलों की विभिन्न संयुक्त टीमों द्वारा संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष रूप से पहाड़ी और घाटी जिलों के सीमावर्ती क्षेत्रों में जोरदार तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। बिष्णुपुर जिले के तोरबुंग, मामांग, लेइकाई और काकचिंग जिले के जोउ वेंग, टी मुनोमजांग, सुगनू ट्राइबल एवं सेरू पार्ट-3 गांवों में तलाशी अभियान चलाया गया।

जीआर इंफ्रा कंपनी के बनाए जा रहे गंभीरगढ़ में निर्माणाधीन पुल धंसा

एजेंसी। किशनगंज

जिले में ठाकुरगंज प्रखंड अंतर्गत गंभीरगढ़ में निर्माणाधीन पुल, धंस गया। जिसे देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ी परी। मामला ठाकुरगंज प्रखंड अंतर्गत गंभीरगढ़ का है। जहां जीआर इंफ्रा कंस्ट्रक्शन कंपनी द्वारा (1590 करोड़ की लागत से) अररिया गलगलिया सड़क निर्माण कार्य चल रहा था।स्थानीय लोगो ने बताया कि इसी रूट में कंपनी द्वारा कई पुल का निर्माण भी कराया जा रहा है। जो जांच का विषय है। लोगो ने बताया कि मामले का खुलासा उस वक्त हुआ जब निर्माणाधीन पुल का पाया धंसने के पश्चात आसपास के लोगों की भीड़ धंसे हुए पुल को देखने के लिए पहुंची। पुल धंसने से

संबंधित सवालों से कंपनी में काम कर रहे लोगों से जब कंपनी का नाम और वजह पूछने का प्रयास किया गया तो लोग टालमटोल करने लगे और सवाल से भागने लगे।मौजूद एक व्यक्ति ने कुछ भी बताने से मना कर दिया और आपस में ही बात कर रहे थे कि आखिर किस तरीके से धंसे हुए पुल को ऊपर किया जा सकेगा। इसको भ्रष्टाचार न समझा जाए तो और क्या समझा जाए।

निर्माणाधीन पुल धंसने से क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है और कंपनी द्वारा कराए जा रहे कार्य में गुणवत्ता को लेकर के भी कई सवाल खड़े हो रहे हैं। अब देखने वाली दिलचस्प बात यह रहेगी कि आखिर जांच के बाद किन दोषियों पर कार्रवाई होगी।

नहीं थम रही हरक सिंह और हरीश रावत की जुबानी जंग

एजेंसी। देहरादून

कांग्रेस के दो वरिष्ठ नेता हरीश रावत और हरक सिंह रावत के बीच जुबानी जंग जारी है। इस बार हरीश रावत पर हरक सिंह रावत ने हमला बोला है। हरक सिंह रावत ने हरीश रावत को 'कलयुगी राम' और खुद को 'कलयुगी भरत' बता डाला है। दरअसल, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत का स्टिंग प्रकरण एक बार फिर से चचाओं में है। साल 2016 का बहुचर्चित स्टिंग ऑपरेशन मामला एक बार फिर से सामने आने के बाद उत्तराखंड की सियासत में हलचल तेज हो गई है। इस बहुचर्चित स्टिंग प्रकरण में सीबीआई ने हरीश रावत, हरक सिंह रावत, उमेश कुमार और मदन बिष्ट को नोटिस जारी किया है।

सीबीआई ने हाईकोर्ट में चारों के वॉयस सैंपल लेने की अनुमति के लिए प्रार्थना पत्र दिया था। वहीं, जबसे यह पूरा प्रकरण हुआ है तब से आज तक हरीश रावत और हरक सिंह रावत के बीच सब कुछ सामान्य नहीं हो पाया है। समय-समय पर दोनों बड़े नेता एक-दूसरे पर निशाना साधते रहते हैं। कुछ दिन पहले ही हरीश रावत ने खुद को 'राम' और हरक सिंह रावत को 'भरत' बताते हुए कहा था कि 'भरत' ने कभी 'राम' की सरकार गिराने की कोशिश नहीं की।

बीजेपी नौ साल की उपलब्धियों का करेगी बखान, जुलाई में मेगा इवेंट, कहा

लोस क्षेत्रों में कलस्टर बना जनसंपर्क अभियान चलाएगी

एजेंसी। जयपुर

बीजेपी ने 2024 के लोकसभा चुनावों की तैयारी शुरू कर दी है और पार्टी के वरिष्ठ नेता मोदी सरकार की नौ साल की उपलब्धियों पर बात करने के लिए अलग-अलग राज्यों का दौरा कर रहे हैं। राजस्थान भी 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए तैयार हो रहा है। हाल ही में केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और सांसद पूनम महाजन, पिछले नौ वर्षों में नरेंद्र मोदी सरकार की उपलब्धियों को रेखांकित करने के लिए, जयपुर में थे। इसके अलावा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री अमित शाह और राजनाथ सिंह सहित पार्टी और सरकार के शीर्ष अधिकारियों का

एक महीने के भीतर रेगिस्तानी राज्य में दौरा तय किया गया है, जहां वे जनता से जुड़ेंगे और मोदी सरकार की उपलब्धियां गिनाएंगे। पीएम मोदी पिछले आठ महीनों में छह दौरे कर चुके हैं, जिससे पता चलता है कि नेतृत्व राजस्थान को लेकर कितना गंभीर है, जहां दिसंबर 2023 में विधानसभा चुनाव भी होने हैं। पार्टी सूत्रों ने बताया कि लोकसभा चुनाव की तैयारी के साथ-साथ बीजेपी की नजर विधानसभा चुनाव पर भी है और उसकी योजना जातीय समीकरणों को दुरुस्त कर उन क्षेत्रों में अपनी स्थिति सुधारने की है, जहां वह कमजोर है। अगर पीएम मोदी के राजस्थान दौरों की समीक्षा की जाए तो वह लगभग हर डेढ़ महीने में राज्य का दौरा कर रहे हैं और जनसभाओं को संबोधित कर रहे हैं। वे पहली बार 2022 में 30 सितंबर को आबू रोड आए थे। लेकिन, रात दस बजे के बाद लाउडस्पीकर पर प्रतिबंध के कारण उन्होंने बिना माइक से अपना भाषण दिया। आबू रोड के बाद वे 1 नवंबर को बांसवाड़ा जिले के मानगढ़ धाम आए और एक जनसभा को संबोधित किया। इसके बाद इसी साल 28 जनवरी को उन्होंने आसींद में देवनारायण मंदिर के दर्शन किए। यह गुर्जरों को लुभाने की कोशिश थी। इसके बाद 12 फरवरी को पीएम मोदी ने दौसा के धनावड़ में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के उद्घाटन समारोह में एक जनसभा को संबोधित किया था।

FILMY हलचल

कंगना रनौत की फिल्म 'इमरजेंसी' की रिलीज डेट आई सामने

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत की आने वाली फिल्म इमरजेंसी 24 नवंबर को रिलीज होगी। कंगना रनौत ने अपने निर्देशन में बनी फिल्म 'इमरजेंसी' की रिलीज डेट की घोषणा की है। यह फिल्म 24 नवंबर 2023 को रिलीज की जाएगी। कंगना रनौत ने बताया, इमरजेंसी हमारे इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण और डार्केस्ट चैप्टर में से एक है जिसे युवा भारत को जानना जरूरी है। यह एक महत्वपूर्ण कहानी है ,और मैं इस रचनात्मक यात्रा को एक साथ शुरू करने के लिए, प्रतिभाशाली अभिनेता, स्वर्गीय सतीश कौशिक जी, अनुपम जी, श्रेयश, महिमा और मिलिंद की शुक्रगुजार हूं । मैं भारत के इतिहास के इस उल्लेखनीय प्रसंग को बड़े पर्दे पर लाने के लिए उत्साहित हूं। जयहिंद! मणिकर्णिका फिल्म्स प्रस्तुत इमरजेंसी, जिसका निर्देशन और निर्माण कंगना रनौत ने किया है।

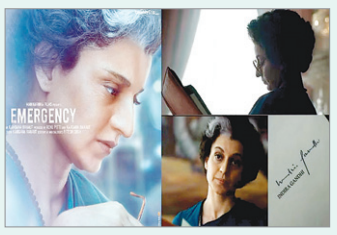

शादी के बंधन में बंधे एक्टर कबीर दुहन सिंह

आखिरकर शादी के बंधन में बंध गए एक्टर कबीर दुहन सिंह। क्रीम शेरवानी में दूल्हे बन कबीर अपने जीवन की नई पारी की शुरूआत के लिए काफी खुश नजर आ रहे हैं। लाल रंग के जोड़े में कबीर की हमसफर सीमा भी बेहद खूबसूरत लग रही हैं। फरीदाबाद के एक नामी होटल में परिवारवालों और दोस्तों के बीच हुई इस शादी में हरियाणा की काफी नामीगिरामी हस्तियां शामिल थी। कबीर और उनकी पत्नी सीमा ने मीडिया के सामने अपने फैंस का आभार व्यक्त किया। कबीर ने कहा कि, मैं बहुत खुशी महसूस कर रहा हूं।

प्रदीप सिंह की फिल्म 'देवरानी जेठानी' का हुआ धमाकेदार ट्रेलर आउट

भोजपुरी सिने प्रेमियों के लिए एक शानदार फिल्म 'देवरानी जेठानी' का ट्रेलर आउट हो गया है। यह ट्रेलर बी फॉर यू भोजपुरी के ऑफिशियल यूट्यूब चैनल से रिलीज किया गया है जो बेहद आकर्षक और मनोरंजक है। इस फिल्म में केंद्रीय भूमिका दिग्गज अभिनेत्री रिंकू घोष और काजल राघवानी निभा रही हैं, फिल्म में गौरव झा और देव सिंह भी मुख्य भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं। फिल्म के निमार्ता प्रदीप सिंह और प्रतीक सिंह है और निर्देशक अजय कुमार झा हैं। बी फॉर यू मोशन पिक्चर्स और वर्ल्ड वाइड फिल्म प्रोडक्शन कृत फिल्म 'देवरानी जेठानी' के ट्रेलर की बात करें तो इसमें रिंकू घोष जेठानी की भूमिका में नजर आ रही हैं जबकि काजल राघवानी देवरानी बनी है। फिल्म महिला प्रधान है। इसकी कहानी घर-परिवार और संस्कार से जुड़ी हुई है। 3:30 मिनट की इस फिल्म के ट्रेलर की शुरूआत रिंकू घोष से होती है जो शादी कर अपने पति देव सिंह के घर आती है। देव सिंह इस फिल्म में रिंकू सिंह के पति के किरदार में है जबकि गौरव झा का किरदार उनके देवर का है।

सावधान व्हाट्सएप व टेलीग्राम जैसे सोशल मैसेजिंग एप से लोगों को बना रहे शिकार

नौकरी देने का वादा कर लूट रहे साइबर ठग

आरएनएम। नई दिल्ली

साइबर ठगों के भी अच्छे दिन आ गये हैं। बीते माह से तो और भी ज्यादा। साइबर ठगों ने दिल्ली में एक महिला डॉक्टर को 4.47 करोड़ रुपये का चूना लगाया। ये व्हाट्सएप व टेलीग्राम जैसे सोशल मैसेजिंग एप के मार्फत निर्दोष लोगों को निशाना बना रहे हैं। इसी तरह गुरुग्राम के एक युवक को टेलीग्राम चैनल के माध्यम से पार्ट टाइम नौकरी का लालच देकर 25 लाख रुपये ठग लिये। गुरुग्राम के सेक्टर 57 में रहने वाले सुब्रत घोष नामक व्यक्ति युवक को टेलीग्राम एप पर नौकरी का ऑफर मिला था। जब उसने ऑफर में रुचि दिखाई, तो उन्हें एक व्यक्ति का फोन आया। उस व्यक्ति ने सुब्रत घोष से कहा कि उसे हर दिन 'कार्य' मिलेंगे और उसे बस उन लिंक को पांच सितारा रेटिंग देनी होगी जो उसे भेजे जाएंगे।रेटिंग के बदले पैसे

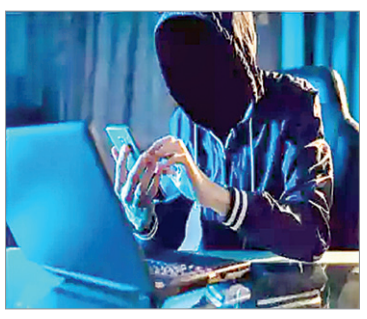

दिये जाएँगे। युवक ने बताया कि फोन करने वाले ने कहा कि हर दिन उसे कुछ टास्क दिए जाएंगे जिसमें फाइव-स्टार रेटिंग देनी होगी, जिसके बदले मुझे पैसे मिलेंगे। कुछ प्रीपेड टास्क भी दिए जाएंगे जिनमें निवेश करना फायदेमंद रहेगा। युवक ने अपनी पुलिस शिकायत में कहा, 10,000 रुपये का निवेश करने और उसके बाद 30 लिंक पर पांच सितारा रेटिंग देने के लिए कहा गया था। जैसा कि ज्यादातर घोटालों में होता है, जब युवक को काम पूरा करने के बाद कुछ पैसे मिले तो उसने साइबर ठगों पर भरोसा कर लिया। फिर साइबर ठगों / स्कैमर्स ने उसे बड़ी रकम निवेश करने के लिए मना लिया, यह कहते हुए कि रिटर्न अधिक होगा। जब घोष ने इस पर संदेह व्यक्त किया, तो घोटालेबाजों ने उन्हें बताया कि उनका अकाउंट फ्रीज कर दिया जाएगा, और उन्हें अब तक कमाई की गई कोई भी राशि नहीं मिलेगी। मैं पैसे नहीं निकाल पाऊंगा। रिपोर्ट के अनुसार युवक ने अपनी शिकायत में कहा, इसी तरह, मैंने 25,29,176 रुपये का निवेश किया था, लेकिन आरोपियों ने मुझे राशि निकालने की अनुमति नहीं दी। उन्होंने यह भी धमकी दी कि यदि मैंने 12 लाख रुपये और जमा नहीं किए, तो मेरा बैंक अकाउंट हैक कर लिया जाएगा। इसके बाद मैं पुलिस के पास गया। इस तरह की तमाम घटनाएं सामने आ रही हैं जिनमें साइबर धोखेबाजों ने झूठे वादे कर लोगों से उनकी मेहनत की कमाई ठग ली। इसलिए ऑनलाइन पैसा निवेश करने से पहले बेहद सावधान रहना चाहिए और जब पैसे की बात आती है ,तो किसी भी अजनबी पर भरोसा करने से पहले उसका बैकग्राउंड अच्छे से जांच करना हमेशा बुद्धिमानी होती है। इस बारे में जहां रहते हैं वहाँ के साइबर पुलिस से भी राय ले लेना चाहिए ताकि आपके साथ कुछ धोखा - धड़ी हो इसके पहले ही आप सावधान हो जाएँ , बच जाएँ। और हां, किसी भी हालत में किसी को अपनी बैंक संबंधी जानकारी और ओटीपी शेयर न करें। अनजान नंबर से आने वाले कॉल, जो फ्री गिफ्ट या ऑफर देने का दावा करते हैं, उनसे तो बहुत ही सावधान रहिए ।

हाई कोर्ट ने याचिकाकर्ता की जुर्माना राशि को घटाया

नवीन मेल संवाददाता। रांची
झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने शनिवार को डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन प्रॉपर्टी प्रोटेक्शन कमेटी के सचिव राजेश ए नंदी की ओर से दायर जनहित याचिका की सुनवाई की। खंडपीठ ने तथ्य छिपाकर जनहित याचिका दाखिल करने पर याचिकाकर्ता राजेश ए नंदी पर लगाए गए एक लाख रुपये की जुर्माना राशि में से 50 हजार रुपये माफ कर दिया है। याचिकाकर्ता की ओर से कोर्ट से आग्रह किया गया था कि वह सेवानिवृत्त शिक्षक है। इसलिए जुमार्ना की राशि घटाई जाए। पिछली सुनवाई में कोर्ट ने याचिकाकर्ता को इस केस से हटा दिया था। साथ ही उस पर एक लाख रुपये का जुमार्ना भी लगाया था। जुमार्ने की राशि याचिकाकर्ता को एडवोकेट एसोसिएशन, झारखंड हाई कोर्ट में जमा करनी थी। याचिकाकर्ता की ओर से याचिका दाखिल कर कहा गया था कि डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ट्रस्ट की प्रॉपर्टी चैरिटेबल कार्यों हॉस्पिटल स्कूल के लिए यूज हो सकती है लेकिन छोटानागपुर डायोसी ट्रस्ट एसोसिएशन के द्वारा इसकी संपत्ति को हजारीबाग में अवैध रूप से बेचा जा रहा है, इसकी जांच कराई जाए। सुनवाई में कोर्ट को बताया गया था कि वर्ष 1930 में डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन एक कंपनी बन गई थी जिसका नाम डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ट्रस्ट एसोसिएशन था। वर्ष 1960 में इसकी ऐसेट एंड लायबिलिट छोटेनागपुर डायोसी ट्रस्ट एसोसिएशन मर्ज कर गया था। याचिकाकर्ता की ओर से एक सिविल सूट भी हजारीबाग सिविल कोर्ट में डाला गया था लेकिन इसकी जानकारी जनहित याचिका में याचिकाकर्ता की ओर से नहीं दी गई थी। इसके बाद कोर्ट ने याचिकाकर्ता पर नाराजगी जताते हुए उस पर एक लाख रुपये जुमार्ना लगाया था।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में होनहारों को मिला सम्मान

रांची। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, धुर्वा के केशव सभागार में शनिवार को मेधावी छात्र अभिनंदन सह अभिभावक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ महेश कुशवाहा और आरक्षी उपाधीक्षक, हटिया राजा मित्रा ने शैक्षणिक सत्र 2022-23 के कक्षा 10वीं एवं 12वीं में 85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों और उनके माता-पिता को सम्मानित किया। अतिथियों ने विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाते हुए जीवन में बेहतर करने के लिए प्रेरित किया। शिशु विकास मंदिर समिति के मंत्री अखिलेश्वर नाथ मिश्र ने कहा कि हमारे मेधावी छात्रों को सम्मानित करने के लिए हमारी संस्था के पुराने छात्र ही अधिकारी के रूप में उपस्थित हैं, यह खुशी की बात है। उन्होंने शिशु मंदिर की देशभर में संचालित योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

विस्थापितों की समस्याओं को लेकर भाकपा का महाधरना 27 को

नवीन मेल संवाददाता। रांची
भाकपा के राज्य सचिव महेन्द्र पाठक ने कहा कि विस्थापितों के समस्याओं के समाधान के लिए राजभवन के समक्ष भाकपा का महाधरना 27 जून को आयोजित किया गया है। पाठक ने शनिवार को पार्टी कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत में कहा कि झारखंड के निर्माण के 23 वर्ष बीत गए लेकिन आज तक राज्य में किसानों हक और अधिकार के लिए विस्थापन नीति नहीं बना, विस्थापन आयोग की गठन भी नहीं हुआ। पुनर्वास नीति भी सरकार नहीं बना पाई। इस वजह से राज्य में किसानों का अधिकार नहीं मिल पा रहा हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में भूमि अधिग्रहण कानून 2013 लागू नहीं है। राज्य में गैरमजरूआ जमीन को लेकर जगह जगह पर लड़ाईयां चल रही है। राज्य में दर्जनों कोल ब्लॉक पावर प्लांट, डैम, सड़क और रेलवे लाइन बनाया जा रहा है। विकास के नाम पर किसानों की बहु फसली जमीन लाठी डंडे के बल पर लूटी जा रही है । चतरा, हजारीबाग ,पलामू ,गढ़वा में कई जगह पर आंदोलन चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाकपा ने सरकार से मांग की है कि राज्य में शीघ्र विस्थापन आयोग का गठन किया जाए और विस्थापन नीति बनाया जाय। गैरमजरूआ जमीन की रसीद काटना अविलंब चालू किया जाए। इन मांगों को लेकर भाकपा 27 जून को राजभवन के समक्ष महाधरना का आयोजन करेगा। इसमें भाकपा, माले, माकपा, राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल यूनाइटेड सहित कई संगठनों के लोग शामिल होंगे।

सिकंदर के जादू ने रांची में मचा रहा धूम

रांची। कचहरी रोड स्थित वेंडर मार्केट के चौथे तल्ले पर बने रॉयल हाइट बैंक्वेट हॉल में जादूगर सिकंदर के शो में खूब भीड़ हो रही है। लोगों को यह शो खूब भा रहा है। शो के दौरान हैरतंगेज कारनामे और म्यूजिक के साथ जादू का खेल बहुत ही सफाई से परोसा जाता है। साथ ही शो के दौरान सामाजिक जागरूकता भी फैलायी जा रही है। शो में जादूगर सिकंदर लड़की को हवा में उड़ा देते हैं तो कभी गोरिल्ला बना देते हैं। इसके अलावा, बंद बॉक्स से कपड़े बदलकर बाहर आ जाते हैं। लोगों को यह काफी रोमांचित करता है। शो के दौरान बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, नशे से दूर रहें का नारा बुलंद किया जाता है।

सदान विकास पार्टी ने राजभवन के समक्ष दिया धरना

'हमें हक से वंचित रखने की हो रही साजिश'

नवीन मेल संवाददाता। रांची
झारखंड राज्य बने 23 साल हो गये। इतने दिनों में राज्य की सभी पार्टियों के विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री और सांसदों ने सदानों को हक और अधिकार से वंचित करने की साजिश की है। ओबीसी आरक्षण लागू किये बिना ही पंचायत चुनाव करा दिया गया। उक्त बातें सदान विकास पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजेंद्र प्रसाद साहू ने तीन सूत्री मांगों को लेकर राजभवन के समक्ष धरने के दौरान कही। राज्य में 77 फीसदी सदान निवास करते हैं। सदान बहुल राज्य है, जहां 56% राज्य में ओबीसी है फिर भी सरकार उनके अधिकार का हनन कर रही है। डॉ राजेंद्र प्रसाद साहू ने कहा कि यदि सरकार और राज्यपाल हमारी मांगों पर विचार नहीं करते हैं तो प्रधान विकास पार्टी 10 दिनों के बाद राज्य में उग्र आंदोलन करेगी। राजभवन के समक्ष धरने के दौरान पार्टी के गुमला जिला अध्यक्ष सुनील कुमार भगत, रामगढ़ जिला अध्यक्ष रामेश्वर महतो, सुनील कुमार भगत, सुदेश कुमार साहू, मोहम्मद जुबेर, मोहम्मद परवेज, प्रशांत कुमार ने सभा को संबोधित किया।

विपक्षी एकता से भाजपा नेता हुए बेचैन : राजद

नवीन मेल संवाददाता। रांची
राजद के महासचिव सह प्रवक्ता डॉ मनोज कुमार ने कहा कि बिहार में विपक्ष दलों के एकजुटता देख भाजपा नेता बेचैन हैं। विशेष रूप से झारखंड के भाजपा नेता काफी असहज और बेचैन हो रहे हैं। झारखंड से भाजपा के जनाधार खिसकते देख भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष काफी बेचैन है। कुमार ने शनिवार को भाजपा नेता दीपक प्रकाश बयान की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि भाजपा के सभी नेता दूध के धुले हैं। सौ चूहे खा कर बिल्ली चली हज को के कहावत को भाजपा नेता चरितार्थ कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं को बोलने से पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए । भाजपा नेता जिस झारखंड की धरती से बोल रहे है यहां भाजपा की जब जब सत्ता रही झारखंड को लूट खंड बनाने का काम किया। झारखंड की जनता को ठगने और धोखा देने का काम किया। कुमार के कहा कि जीरो टॉलरेंस वाली रघुवर दास के सरकार के समय 31 घोटाले हुए । इनमें मोमेंटम झारखंड में 100 करोड़, 400 करोड़ के लौह अयस्क, 18 करोड़ के कंबल घोटाले, 61 करोड़ अल्पसंख्यक छात्रवृति घोटाले, टॉफी टी शर्ट घोटाले सहित अनेक घोटाले उजागर हुए ।

27 को पीएम करेंगे वंदे भारत एक्प्रेस का उद्घाटन

पहले दिन दस विद्यार्थी और दो शिक्षक उठायेंगे लुत्फ

नवीन मेल संवाददाता। रांची
पटना-रांची के बीच चलने वाली वंदेभारत एक्सप्रेस ट्रेन का उद्घाटन 27 जून को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पूर्वाह्न 10:30 करेंगे। यह ट्रेन पटना से हटिया तक चलेगी। इस रूट पर दो बार ट्रायल रन सफल रहा है। पहले दिन 10 स्कूली बच्चों को निःशुल्क रांची से पटना तक का सफर कराया जायेगा। यह विद्यार्थी उद्घाटन के दौरान हरी झंडी दिखाने के समय भी मौजूद रहेंगे। बच्चों का चयन निबंध, पेंटिंग और कविता प्रतियोगिता के आधार पर किया जाएगा। इनमें सातवीं, आठवीं, नौवीं और 10वीं के बच्चे शामिल हो सकेंगे। उद्घाटन के बच्चों की पेंटिंग को भी प्रदर्शित किया जाएगा। दक्षिण पूर्व रेलवे रांची के वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी माणिक शंकर ने स्कूलों को चिट्ठी भेजी है। इसमें कहा गया है कि प्रतियोगिता परीक्षा आयोजित कर बच्चों का चयन किया जाए। विद्यार्थियों के साथ दो शिक्षक भी इस यात्रा के लिए मनोनीत किए जाएंगे। यह शिक्षक बच्चों के साथ पटना तक जाएंगे। सुरक्षा के मद्देनजर टाटीसिलवे, नामकुम, आरा गेट, चुटिया, रांची स्टेशन और अरगोड़ा स्टेशन पर आरपीएफ के 100 से अधिक जवानों को तैनात किया गया है। उद्घाटन कार्यक्रम के लिए रांची स्टेशन पर इंतजाम शुरू हो गए हैं। फिलहाल टेंट लगाए जा रहे हैं। उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल होने के लिए राज्यपाल, मुख्यमंत्री, सांसद, विधायक सहित गणमान्य लोगों को रांची रेल मंडल आमंत्रण पत्र भेजेगा। वंदे भारत ट्रेन हटिया स्टेशन से अपराह्न बाद 3:55 बजे खुलेगी और शाम 4:10 बजे रांची स्टेशन पहुंचेगी।

कराटे प्रशिक्षित अपने आप में आत्मविश्वासी होते हैं : विकास

रांची। कराटे प्रशिक्षित युवा हो या अधेड़ अपने आप में आत्मविश्वासी होते हैं। यह बात पतरातू के कराटे प्रशिक्षक विकास पाठक ने कही। वे शनिवार को भवानी नगर पिर्रा के संत ज्यूस स्कूल और काठीटांड़ स्थित ग्लोबल किड्स स्कूल में कराटे का प्रशिक्षण दे रहे थे। विकास मॉडर्न मार्शल ऑर्ट्स कराटे डो फेडरेशन ऑफ इंडिया सह कराटे फेडरेशन ऑफ शोतोकॉन के तहत स्कूली बच्चों को कराटे का प्रशिक्षण देना शुरू किया है। संत ज्यूस स्कूल की प्राचार्या किरण मिश्रा ने कहा कि कराटे बच्चों के विकास का एक बेहतरीन जरिया है। इसमें बच्चे आत्मरक्षा सीखते ही हैं साथ ही वे अपने आप में इतने सक्षम हो जाते हैं कि जरूरत पड़ने पर हर असामाजिक तत्वों के खिलाफ बिना किसी सहायता के आत्मरक्षा में कराटे का प्रयोग कर सकते हैं। इससे शारीरिक रूप से बच्चे सही रहते हैं और उनमें पूर्ति भी आती है। वह कभी भी अपने को अकेला नहीं महसूर करते हैं, जिससे उन्हें डर लगे।

गोड्डा में कुएं की सफाई के दौरान किशोर की मौत, पांच लोग गंभीर

नवीन मेल संवाददाता। रांची
जिले के महागामा अनुमंडल क्षेत्र के पुनर्वासित गांव बड़ा भोड़ाई के एक कुएं की सफाई करने गए एक किशोर की मौत हो गई जबकि उसे बचाने के क्रम में पांच अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। जानकारी के अनुसार गांव का 10 वर्षीय मसूद अंसारी गंदगी साफ करने के लिए कुएं में उतरा, जहां उसकी हलचल बंद हो गई। उसे बचाने के लिए उसके पिता मकसूद अंसारी भी कुएं में उतर गए। शोर-शराबा सुनकर वहां आसपास के कई लोग जमा हो गए। उन दोनों को बचाने के लिए गांव के 42 वर्षीय इब्राहिम अंसारी, 25 वर्षीय खलीक अंसारी, 25 वर्षीय मुबारक अंसारी, 23 वर्षीय शाहिद अंसारी कुआं के अंदर उतरने लगे लेकिन इन लोगों की हालत भी बिगड़ने लगी और वे कुएं के अंदर ही बेहोश होने लगे। मामले को गंभीर होता देख स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना ललमटिया थाना प्रभारी चंद्रशेखर सिंह को दी। थाना प्रभारी चंद्रशेखर सिंह ने त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर ग्रामीणों के सहयोग से कुएं के अंदर से मूर्छित 5 लोगों को बाहर निकाला और अस्पताल भेजा। इलाज के दौरान मसूद अंसारी की मौत हो गई जबकि इब्राहिम अंसारी, मुबारक अंसारी और 23 वर्षीय शाहिद अंसारी को महागामा अस्पताल रेफर कर दिया गया। थाना प्रभारी चंद्रशेखर सिंह ने बताया कि बालक की मौत कुएं में उत्पन्न हो रहे विषैली गैस के कारण हो गई।पुलिस घटना की जांच-पड़ताल कर रही है।

सड़क दुर्घटना में राजमिस्त्री की मौत

रांची। कर्रा थाना क्षेत्र के बमरजा गांव के पास शुक्रवार की देर रात हुई सड़क दुर्घटना में राजमिस्त्री बिरसा उरांव (36) की मौत हो गई। वह दिवड़ी सिंयाकेल गांव का रहने वाला था। सदर अस्पताल में शनिवार को शव का पोस्टमार्टम कराया गया। मृतक के परिजनों ने बताया कि बिरसा उरांव शुक्रवार को गांव के ही एक मिस्त्री मनिका मुंडा के साथ काम समाप्त कर बाइक से अपने गांव लौट रहा था। बमरजा गांव के पास अज्ञात वाहन मोटरसाइकिल को ठोकर मार दी। इससे दोनों गिर गए और बिरसा की वहीं मौत हो गई। गंभीर रूप से घायल मनिका को स्थानीय लोगों की मदद से कर्रा के स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है।

भेदभाव यूनिफॉर्म सिविल कोड का विरोध करेंगे आदिवासी संगठन

आज रांची में होगी बैठक, आगे की बनेगी रणनीति

नवीन मेल संवाददाता। रांची
इन दिनों समान नागरिक संहिता यानी यूनिफॉर्म सिविल कोड की जोरशोर से चर्चा चल रही है। इसका मतलब है एक ऐसा सेक्यूलर कानून जो देश के सभी नागरिकों के लिए समान रूप से लागू होता है। इसके मुताबिक अलग-अलग पंथ के लिए अलग-अलग सिविल कानून नहीं होना चाहिए। इसपर 22वें विधि आयोग ने आम जनता, सार्वजनिक संस्थानों और मान्यता प्राप्त धार्मिक संगठनों से जुड़े लोगों की राय मांगी है। इसके लिए 14 जुलाई तक का समय दिया गया है। एक पक्ष की दलील है कि इससे लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलेगा। धर्म के आधार पर भेदभाव रूकेगा। कानूनी प्रणाली को सरल बनाने में मदद मिलेगी। वहीं दूसरे पक्ष का मानना है कि इससे धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन होगा। इस बीच यूनिफॉर्म सिविल कोड के विरोध में झारखंड के आदिवासी संगठन गोलबंद होने लगे हैं। 25 जून को करमटोली के पास धुमकुड़िया में एक बैठक बुलायी गयी है। इसमें विस्तार से चर्चा के साथ आगे की रणनीति बनेगी। आदिवासी जनपरिषद के प्रेमशाही मुंडा ने बताया कि यूनिफॉर्म सिविल कोड से आदिवासियों का हक प्रभावित होगा। उनकी दलील है कि केंद्र की मोदी सरकार एक साजिश के तहत इसको लाना चाह रही है। यह इसलिए आदिवासी हित में नहीं है क्योंकि इससे आदिवासियों की जमीन की रक्षा के लिए बना सीएनटी और एसपीटी एक्ट प्रभावित होगा। उन्होंने कहा कि अगर इसको लागू किया गया तो पांचवी अनुसूची का क्या होगा। आदिवासियों के लिए बने पेसा कानून का क्या होगा। उन्होंने इसे आदिवासी विरोधी बताते हुए अपना विरोध जताया है। प्रेमशाही मुंडा ने कहा कि 25 जून को प्रस्तावित बैठक में देवकुमार धान और गीताश्री उरांव समेत कई नेता शिरकत करेंगे। इस बैठक में झारखंड के विधानसभा से पारित सरना आदिवासी धर्म कोड पर अबतक केंद्र की मुहर नहीं लगाए जाने के सवाल पर भी चर्चा होगी। आदिवासी जनपरिषद और अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद की ओर से बुलायी गई बैठक के बाबत प्रेम शाही मुंडा ने कहा कि रविवार की बैठक में स्पष्ट हो जाएगा कि हमलोग क्या करने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के रूख से स्पष्ट है कि हमें सड़क पर उतरकर इसके विरोध में आंदोलन करना होगा। उनसे पूछा गया कि क्या आप भाजपा विरोधी पार्टियों से भी इसके लिए समर्थन मांगेंगे। इसके जवाब में उन्होंने कहा कि हमें समर्थन मांगने की जरूरत नहीं है। अगर कोई पार्टी समर्थन करेगी तो हम उसका स्वागत करेंगे। उन्होंने कहा कि अगर उनकी बातें नहीं मानी गई तो इसका प्रभाव आगामी चुनाव पर भी दिखेगा।

प्रथम महापौर ने बड़ा तालाब की सफाई कार्य का किया निरीक्षण

मेदिनीनगर। मेदिनीनगर नगर निगम की प्रथम महापौर अरुणा शंकर ने अंबेडकर पार्क के बड़ा तालाब की चल रही सफाई का शनिवार को निरीक्षण किया। उन्होंने यहां कार्य को देखा और कहा कि कुछ दिन पूर्व योग युवा पलामू के सदस्य मंजय कुमार, दीपू सर्राफ, एडवोकेट शक्ति, विपिन वर्मा एवं रिंकू सोनी ने मिलकर तालाब की गंदगी से फैल रही बदबू के कारण योगा करने में मुश्किल को देखते हुए योग क्रिया बंद करने के निर्णय से उन्हें अवगत कराया था, जिससे सुनकर मुझे बहुत ही आघात पहुंचा। मैंने तुरंत नगर आयुक्त को जानकारी दी, जिस पर तत्काल उन्होंने संज्ञान लेते हुए निगम के सफाई प्रभारी सतीश की देखरेख में तालाब की सफाई कराना शुरू करा दिया है। जिसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देती हूं। महापौर ने कहा यह बड़ा तालाब शहर का हृदय स्थल है जिसे सुसज्जित एवं सुव्यवस्थित रखना निगम एवं निगम के नागरिकों का भी कर्तव्य है। प्रथम महापौर ने कहा 5 जुलाई से पहले वहां का बाथरूम, पौधों की सफाई, झरना को चालू करने वगैरह जो त्रुटियां हैं को ठीक करने का भी आदेश नगर आयुक्त द्वारा दिया गया है।

पृष्ठ एक का शेष

राज्यपाल ने किया लोक...
उन्होंने कहा कि एक सम्मानजनक जिंदगी के लिए लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए। लोक संवाद में स्वयं सहायता समूह की दीदियों ने भी अनुभव साझा किया। राज्यपाल ने जिले में एक लाख से अधिक महिलाओं के स्वयं सहायता समूह से जुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही कहा कि स्वयं सहायता समूह से जुड़कर महिलाओं का सशक्तिकरण हो रहा है और उनके परिवार का जीवन स्तर भी बेहतर हो रहा है। कार्यक्रम में कस्तूरबा गांधी विद्यालय, स्कूल ऑफ एक्सीलेंस का दर्जा प्राप्त विद्यालय की छात्राओं ने बताया कि इस विद्यालय में बड़ी संख्या में गरीब परिवार के बच्चे पढ़ते हैं। वह सभी भी भविष्य में वह शिक्षक बनकर बच्चियों को शिक्षा प्रदान करने का काम करेंगी। राज्यपाल ने संवाद में मौजूद लोगों की समस्याओं के निराकरण की बात भी कही। उन्होंने जिले के विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टाल का अवलोकन किया। साथ ही उपस्थित लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण भी किया।

चपरासी का बेटा बना 2एण्ड टॉपर...
में मेरा स्थान दूसरे स्थान और जिले में पहला स्थान रहा है।साथ ही कहा कि पांच वर्ष के लंबे इंतजार के बाद हमे नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ। इसके लिए हमलोगो सुप्रीम कोर्ट में काफी लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी थी। हालांकि अब हम सबों को बेहद खुशी है। घरवाले भी इस बात से प्रसन्न है। मेरे दादा गोरख नाथ तिवारी सरकार शिक्षक से रिटायर हुए हैं। मेरे पिता का नाम प्रमोद कुमार तिवारी है। पापा सिविल कोर्ट, पलामू में चपरासी हैं और मां संगीता देवी गृहणी है। मेरी एक छोटी बहन है जो एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहे है।बता दें कि समारोह में कुल 2550 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र मिला। जिसमें पंचायत सचिव के 1633, वित्त विभाग 166, खाद्य आपूर्ति विभाग के 44, राजस्व निबंधन और भूमि सुधार विभाग के 707 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र मिला।

कांस्टेबल पंकज की हत्या...
जिसमें नैना ने हत्या की साजिश रचने और प्रेमी मन्नू पासवान से हत्या कराने की बात कही। इस पर पुलिस ने नैना के प्रेमी मन्नू पासवान और उसके सहयोगी ओमप्रकाश सिन्हा दोनों को सयाल से गिरफ्तार कर लिया। एसपी ने बताया की अभियुक्त मन्नू पासवान की निशानदेही पर पुलिस ने दो देशी पिस्टल, एक देशी रिवाल्वर, पांच जिंदा गोली, पांच खोखा, पल्सर बाइक और तीन मोबाइल बरामद किया है। पुलिस छापेमारी दल में पतरातू एसडीपीओ डॉ विरेंद्र चौधरी, पतरातू इंस्पेक्टर सुशील कुमार, भुरकुंडा ओपी प्रभारी अमित कुमार, बासल थाना प्रभारी अमर शुक्ला, भदानीनगर ओपी प्रभारी राजदीप कुमार, भुरकुंडा ओपी के पुअनि मयंक प्रसाद शामिल थे।

रिकी पोंटिंग ने दूसरे टेस्ट के लिए प्लेइंग इलेवन की भविष्यवाणी की

एजेंसी। दुबई

पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने भविष्यवाणी की है कि अपरिवर्तित ऑस्ट्रेलिया लॉर्डस में दूसरे एशेज टेस्ट में अपने आक्रमण में एक अलग संतुलन के साथ इंग्लैंड की टीम से भिड़ेगा। पैट कमिंस ने एजबस्टन में नए आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप चक्र के पहले टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया को दो विकेट से प्रसिद्ध जीत दिलाई, जिससे मेहमान टीम पांच मैचों की श्रृंखला में 1-0 से आगे हो गयी। आईसीसी ने कहा, दूसरा टेस्ट 28 जून को लॉर्डस में शुरू होगा और पोंटिंग का मानना है कि ऑस्ट्रेलिया अपनी अंतिम एकादश में बदलाव तभी करेगा यदि गेंदबाजी आक्रमण में कुछ खिलाड़ी चोटिल होते हैं।

पोंटिंग ने आईसीसी से कहा, चूंकि इन दोनों मैचों के बीच आठ दिन का ब्रेक है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि वे कोई बदलाव करेंगे। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीमों ने इतिहास में विजेता टीमों और जीत के फॉर्मूले को बदलना पसंद नहीं किया है। मुझे एकमात्र चिंता यह है कि (जोश) हेजलवुड ने मैच के दौरान बहुत अधिक गेंदबाजी नहीं की। मुझे यकीन नहीं है कि क्या वे इस पहले टेस्ट के दौरान उसे प्रशिक्षित करने की कोशिश कर रहे थे, या अगर इसमें थोड़ी सी भी गड़बड़ी है तो यह बिल्कुल सही नहीं है। लेकिन जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ा, मैंने देखा, ऐसा लग रहा था कि ऐसे कुछ मौके हो सकते थे जहां हेजलवुड अधिक गेंदबाजी कर सकते थे और उन्होंने ऐसा करने का विकल्प नहीं चुना। वास्तव में कैमरून ग्रीन के साथ भी बिल्कुल वैसा ही है। मैं इस बात से थोड़ा आश्चर्यचकित था कि इस मैच के दौरान उन्होंने कितनी कम गेंदबाजी की, खासकर दूसरी पारी में। इसलिए मैं किसी बदलाव की उम्मीद नहीं कर रहा हूं, लेकिन उन दोनों ने कितनी कम गेंदबाजी की, इसे देखते हुए मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। हालाँकि, पोंटिंग को उम्मीद है कि लॉर्डस के लिए इंग्लैंड अपनी टीम में एक महत्वपूर्ण बदलाव करेगा।

स्पिनर मोईन अली को लगभग दो साल बाद इंग्लैंड के लिए पहली बार लाल गेंद से खेलते हुए उंगली में चोट लग गई, जिससे दूसरे टेस्ट में उनकी भागीदारी संदेह में है। इंग्लैंड एकादश में मोईन की जगह कौन लेता है यह दूसरे टेस्ट से पहले बड़ी चयन कॉलों में से एक है। दूसरा तरीका यह हो सकता है कि चार तेज गेंदबाज खेलें और जो रूट को अपने स्पिनिंग विकल्प के रूप में इस्तेमाल करें। जो लगातार 13 या 14 ओवर फेंकने में सक्षम था, उन्होंने एक विकेट लिया, अपनी ही गेंदबाजी पर एक और मौका गंवा दिया। तो यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में वे सोच सकें।

पोंटिंग चार तेज गेंदबाज चुनने का विकल्प चुनकर इंग्लैंड की ओर झुक रहे हैं और इसका एक कारण मार्क वुड की अतिरिक्त गति को शामिल करना होगा, विशेष रूप से इंग्लैंड में शॉर्ट-बॉल रणनीति को लागू करने के लिए 'एनफोर्सर' की कमी को देखते हुए।

विशेष ओलंपिक विश्व खेल : भारत पदक शतक के करीब

एजेंसी। बर्लिन

ऐसे दिन जब मौसम ने खराब खेल दिखाया, लगातार बारिश के कारण विशेष ओलंपिक विश्व खेल 2023 में लगभग सभी आउटडोर कार्यक्रम रद्द और स्थगित हो गए, भारत के रोलरस्केटर्स गिनती जारी रखने के लिए पदकों के बीच दौड़ पड़े। शुक्रवार के अंत तक, भारत ने अपने पदकों की संख्या 95 (स्वर्ण : 33; रजतः 37; कांस्यः 25) पहुंचा दी।

रोलर-स्केटिंग क्षेत्र में, भारतीय दल ने नौ पदक (3 स्वर्ण, 5 रजत, 1 कांस्य) जोड़े। स्वर्ण पदक विजेताओं में मोहम्मद निसार (30 मीटर स्लैलम) और आर्यन और अभिजीत, 2 गुना 100 रिले की युगल जोड़ी थे। रोलर स्केटिंग भारतीय दल के लिए सबसे उपयोगी सफलताओं में से एक साबित हुआ है और बाहर भारी बारिश के बावजूद, उन्होंने निराश नहीं किया।

जूडो शुक्रवार को भारत के लिए एक और खुशी का मैदान साबित हुआ। एक दिन पहले, सुहालिया परवीन के रजत ने भारत को खेल में अपना पदक खाता खोलने में मदद की थी। 24 घंटे बाद मैट पर उनके साथ दो और पदक विजेता शामिल हो गए। पुरुष लेवल 2 वर्ग में प्रिंस सोलंकी ने कांस्य पदक जीता, जबकि महिला लेवल 3 वर्ग में मुस्कान ने स्वर्ण पदक जीता। मुस्कान ने विश्व खेल 2023 में जूडो में देश का पहला स्वर्ण लाने के लिए अपने दोनों मुकाबले बड़े पैमाने पर जीते। टेबल टेनिस मैदान भारतीय दल के लिए एक और उपयोगी मैदान साबित हुआ, जहां उस दिन खेल से तीन पदक पक्के हो गए। अंडर 21 डी 3 में एक अखिल भारतीय फाइनल में, विघ्नेश लोकेश्वर नाइक ने गुनोसेन सिंह बेदी को 3-1 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। महिला एकल 30-डी3 में अलीवेलम्मा गुज्जला ने स्वर्ण पदक अपने नाम किया । चार मैचों के दौरान, अलीवेलम्मा ने स्वर्ण पदक जीतने के सफर में सिर्फ एक गेम गंवाया। पॉवरलिफ्टिंग में भारत के खाते में चार और पदक तालिका में जुड़े। 93 किग्रा वर्ग में, अनुराग प्रसाद ने बेंच प्रेस में तीन स्वर्ण (स्क्वाट, डेडलिफ्ट, संयुक्त) और एक रजत जीता। बर्लिन में शुक्रवार के अंत तक, भारत ने अपने पदकों की संख्या 95 (स्वर्णः 33; रजतः 37; कांस्यः 25) तक पहुंचा दी। भारत की महिला यूनिफाइड वॉलीबॉल टीम ने एसओ केन्या को 25-12, 25-16 से हराकर एफए प्रतियोगिता के फाइनल में प्रवेश किया और संयुक्त अरब अमीरात के साथ खिताबी भिड़ंत तय की। पूरे मैच के दौरान भारत ने अपना दबदबा बनाए रखा, लेकिन फिनिश लाइन के सामने थोड़ा सा लड़खड़ा गया।

इंग्लैंड का पारी घोषित करने का फैसला अहंकारपूर्ण : ब्रेट गीव्स

एजेंसी। लंदन

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट गीव्स ने एजबेस्टन में पहले एशेज टेस्ट के पहले दिन 393/8 पर पारी घोषित करने के इंग्लैंड के फैसले को 'बेहद अहंकारी' बताया है और कहा है कि मेजबान टीम का अति-आक्रामक धृष्टकोण इस बहुप्रतीक्षित श्रृंखला में नहीं टिक पायेगा। एशेज में एजबस्टन टेस्ट के पहले दिन इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स के 393/8 पर पारी घोषित करने के फैसले को, जिसमें जो रूट ने नाबाद 118 रन बनाए, कुछ विशेषज्ञों ने मेजबान टीम के दो-विकेट से हारने के पीछे का मुख्य कारण बताया है।

एसईएन रेडियो से गीव्स ने कहा, यह उन्हें (इंग्लैंड) असफल होने के लिए तैयार करता है और मुझे ऐसा लगता है कि भले ही हम हार जाएं, हम सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खेल रहे हैं और हम वैसे भी जीत गए हैं। यह इस तरह काम नहीं करता है। विशेष रूप से एशेज में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ। ग्रीव्स ने कहा, विशेष रूप से अगर इंग्लैंड में जंगली अहंकार की मानसिकता है और यही वह घोषणा थी। यह सोचना बहुत ही अहंकारपूर्ण था कि पहली पारी में बहुत सपाट विकेट पर (8/393) ही काफी है। गीव्स का मानना है कि इंग्लैंड की आश्चर्यजनक घोषणा ने ऑस्ट्रेलिया के मैच जीतने में भूमिका निभाई, आखिरी दिन के खेल में 281 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए कप्तान पैट कमिंस 44 रन बनाकर नाबाद रहे। बिल्कुल, उन्होंने (ऑस्ट्रेलिया ने) इंग्लैंड की हास्यास्पद मूर्खतापूर्ण घोषणा के आधार पर गेम जीता। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इंग्लैंड ने उनकी जीत में भूमिका निभाई। वे अगले दिन वापस आ सकते थे और 50 या 60 रनों के लिए बल्लेबाजी करने की कोशिश कर सकते थे, जिससे ऑस्ट्रेलिया को मैच से बाहर होना पड़ता, केवल एक टीम मैच जीतने में सक्षम होती अगर उन्होंने 450 या 460 रन बनाए होते और वह इंग्लैंड थी। और यह खेल के प्रति उनके धृष्टकोण को लेकर अहंकार के कारण है। 8/393 घोषित, आप टेस्ट मैच क्रिकेट में ऐसा नहीं करते हैं। आप पांच दिवसीय मैच में ऐसा नहीं करते हैं जब जो रूट 118 रन पर नाबाद होते हैं। अब 1-0 से पीछे, इंग्लैंड 28 जून से लॉर्डस में शुरू होने वाले दूसरे एशेज टेस्ट में वापसी करने का लक्ष्य रखेगा। गीव्स, जिन्होंने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में लंबे घरेलू करियर के अलावा एक वनडे और दो टी20 खेले, इससे प्रभावित नहीं थे इंग्लैंड के कोच ब्रेंडन मैकुलम ने खिलाड़ियों से कहा कि एजबस्टन में हार के बावजूद उन्हें उन पर गर्व है। एक लेख था जो मैं पढ़ रहा था जिसमें ब्रेंडन मैकुलम को उनके नुकसान के संदर्भ में उद्धृत किया गया था, वे चेंजरूम में थे और ब्रेंडन ने सबसे पहले बात की और उन्होंने कहा; दोस्तों, मुझे आपके द्वारा किए गए प्रयास पर बेहद गर्व है।

पीटरसन ने मैकुलम के पास जाकर पारी घोषित करने पर जवाब मांगा

एजेंसी। लंदन

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान केविन पीटरसन ने एजबस्टन में पहले एशेज टेस्ट में मेजबान टीम की पहली पारी 393/8 पर घोषित करने की रणनीति पर सवाल उठाया है और कहा है कि वह मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम के पास गए और उनसे उस आश्चर्यजनक रणनीति के पीछे के स्पष्टीकरण की मांग की। । एजबस्टन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले एशेज टेस्ट में इंग्लैंड ने अपनी पहली पारी 393/8 पर घोषित करने का साहसिक निर्णय लिया। इस निर्णय ने कई विशेषज्ञों को आश्चर्यचकित कर दिया, पहले दिन के खेल में कुछ ओवर शेष रहने के बावजूद, उनके प्रमुख बल्लेबाज जो रूट 118 रन बनाकर नाबाद थे, और मेजबान टीम के पास अभी भी दो विकेट बाकी थे।

डेली मेल ने पीटरसन के हवाले से कहा, हम ऐसे समय में हैं जहां टेस्ट क्रिकेट को खुद में बदलाव लाने के लिए कुछ करने की जरूरत है क्योंकि इसमें बहुत प्रतिस्पर्धा है। लेकिन मैं इसका जवाब धीरे-धीरे दे रहा हूं क्योंकि मैं अभी भी 100 प्रतिशत निश्चित नहीं हूं, नहीं, मैंने कभी घोषणा नहीं की होगी। क्योंकि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ, एशेज का पहला दिन, 393, सोच रहा हूं कि सपाट विकेट पर आपने काफी कुछ कर लिया है। " पीटरसन ने नासिर हुसैन से बातचीत में कहा, मुझे सकारात्मकता पसंद है। लेकिन यह सिर्फ एक श्रृंखला है, विशेष रूप से, कि मुझे अभी भी अपना दिमाग लगाने की जरूरत है। मैं वास्तव में शनिवार को मैकुलम के पास गया और कहा, 'कृपया मुझे यह समझाएं क्योंकि मैं इसे नहीं समझता हूं कि मैंने अपने पूरे करियर में ऐसा किया है।

बल्लेबाजी विफलताओं के लिए पुजारा को बलि का बकरा क्यों बनाया : गावस्कर

एजेंसी। नई दिल्ली

भारत के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा है कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ डब्ल्यूटीसी फाइनल में भारत की बल्लेबाजी की विफलता के बाद अनुभवी बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा को गलत तरीके से निशाना बनाया गया और उन्हें वेस्टइंडीज दौरे के लिए टीम से बाहर कर दिया गया। गावस्कर ने स्पोर्ट्स टुडे से कहा, उन्हें क्यों हटा दिया गया है? उन्हें हमारी बल्लेबाजी विफलताओं के लिए बलि का बकरा क्यों बनाया गया है। वह भारतीय क्रिकेट के एक वफादार सेवक रहे हैं। एक वफादार और शांत सेवक। एक वफादार और शांत उपलब्धि हासिल करने वाला। लेकिन क्योंकि उनके लाखों अनुयायी नहीं हैं।

उन्होंने कहा, यह समझ से परे की बात है। उन्हें बाहर करने और फेल होने वाले अन्य लोगों को रखने का मानदंड क्या है? मुझे नहीं पता क्योंकि आजकल, चयन समिति के अध्यक्ष के साथ मीडिया की कोई बातचीत नहीं होती है।

गावस्कर का मानना है कि पुजारा को सिर्फ उनकी उम्र की वजह से भारतीय टेस्ट टीम से बाहर नहीं किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा,वह देशी क्रिकेट खेल रहे हैं। इसलिए, उन्होंने काफी रेड-कॉल क्रिकेट खेला है और वह जानते हैं कि यह किस बारे में है। आज, लोग 39-40 साल की उम्र तक खेल सकते हैं और जब तक आप रन बना रहे हैं, तब तक खेल सकते हैं। मुझे नहीं लगता कि उम्र कोई कारक होनी चाहिए। (अजिंक्य) रहाणे के अलावा, बल्लेबाजी पूरी तरह से विफल रही। पुजारा को कमजोर खिलाड़ी क्यों बनाया गया, यह चयनकर्ताओं को बताना होगा।

शीर्ष वरीय क्रेजिकोवा बर्मिंघम क्लासिक के फाइनल में

एजेंसी। बर्मिंघम (यूके)

शीर्ष वरीयता प्राप्त चेक गणराज्य की बारबोरा क्रेजिकोवा ने शनिवार को यहां चीन की झू लिन पर 6-3, 6-2 से जीत के साथ बर्मिंघम क्लासिक के फाइनल में प्रवेश कर लिया। अपने करियर की पहली भिड़ंत में 12वीं रैंकिंग वाली क्रेजिकोवा को वर्ल्ड नंबर 39 झू को हराने में 1 घंटा 32 मिनट का समय लगा। फरवरी में डब्ल्यूटीए 1000 दुबई में खिताब जीतने के बाद, क्रेजिकोवा ने सीजन के अपने दूसरे फाइनल में प्रवेश किया। इस जीत के साथ, क्रेजिकोवा ने टूर-स्तरीय सेमीफाइनल में अपनी भारी सफलता जारी रखी। चेक ने अब अपने डब्ल्यूटीए टूर करियर में 11 सेमीफाइनल मैचों में से 10 जीते हैं। क्रेजिसिकोवा ने बर्मिंघम में पूरे सप्ताह एक भी सेट नहीं गंवाया है। शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी ने झू के खिलाफ अपना ठोस प्रदर्शन जारी रखा, चार ऐस लगाए और झू की पहली सर्विस लौटाते हुए आधे से अधिक अंक जीते। 2021 रौलां गैरो चैंपियन क्रेजिकोवा को अब नंबर 2 सीड जेलेना ओस्टापेंको और नंबर 4 सीड अनस्तासिया पोटापोवा के बीच दिन के दूसरे सेमीफाइनल के विजेता का इंतजार है। क्रेजिसिकोवा ने कभी भी पोटापोवा का सामना नहीं किया है, और वह ओस्टापेंको के साथ अपनी छह मुकाबलों में से चार हार चुकी है।

सैफ चैंपियनशिप : नेपाल के खिलाफ लय बरकरार रखना चाहेगा भारत

एजेंसी। बेंगलुरु

भारतीय पुरुष राष्ट्रीय फुटबॉल टीम शनिवार को यहां श्री कांतिरवा स्टेडियम में जब नेपाल से भिड़ेगी तो उसका इरादा जीत की लय बरकरार रखने और सैफ चैंपियनशिप के सेमीफाइनल के करीब पहुंचने का होगा। ब्लू टाइगर्स ने बुधवार को अपने पहले ग्रुप-स्टेज मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 4-0 से हराया, इसके बाद टूर्नामेंट के शुरूआती मैच में कुवैत ने नेपाल को 3-1 से हराया। इगोर स्टिमैक की टीम ने एएफसी एशियन कप के लिए बड़ी ऊर्जा के साथ अपनी तैयारी शुरू कर दी है और उनका लक्ष्य नेपाल के खिलाफ एक और प्रभावशाली प्रदर्शन के साथ अपना आत्मविश्वास बढ़ाना होगा। दूसरी ओर, गोरखालिस को फॉर्म में चल रहे मेजबानों के खिलाफ कड़ी मेहनत करनी होगी क्योंकि वे प्रतियोगिता में अपनी पहली जीत हासिल करना चाहते हैं। आमने-सामने के रिकॉर्ड के मामले में दक्षिण एशियाई क्षेत्रों के अपने विरोधियों पर भारत का पलड़ा भारी है। दोनों टीमें पहले 15 बार एक-दूसरे का सामना कर चुकी हैं, जिसमें ब्लू टाइगर्स 10 बार विजयी रहे हैं, जबकि नेपाल केवल एक बार जीतने में कामयाब रहा है। बाकी चार मैच ड्रॉ पर खत्म हुए है। हालिया पांच मुकाबलों में, ब्लू टाइगर्स ने चार बार जीत हासिल की है, जबकि दूसरा गेम ड्रॉ रहा। दोनों टीमों के बीच नवीनतम मुकाबला 2021 में सैफ चैंपियनशिप फाइनल के दौरान हुआ, जहां भारत 3-0 के ठोस स्कोर के साथ विजयी रहा था।

यादगार टी20 विश्व कप जीत में और 2011 विश्व कप के दौरान

धोनी को मुझ पर भरोसा था : युवराज

एजेंसी। नई दिल्ली

युवराज सिंह...एक ऐसा नाम जिसने भारतीय क्रिकेट टीम को 2007 टी20 विश्व कप और 2011 वनडे विश्व कप दिलाने में अहम भूमिका निभाई। बल्ले के साथ-साथ गेंद से भी वह चमके। उन्होंने 10 जून, 2019 को अपने शानदार करियर को अलविदा कह दिया था। युवराज ने 40 टेस्ट, 304 वनडे और 58 टी20आई मैच खेले और 2000 में भारत की अंडर-19 विश्व कप जीत, फिर उसी साल आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी का भी हिस्सा भी रहे। 2007 में भारत की टी20 विश्व कप जीत में और 2011 विश्व कप के दौरान युवराज का योगदान हमेशा क्रिकेट प्रशंसकों की यादों में रहेगा। युवराज, जिन्होंने कैंसर से लड़ाई लड़ी और क्रिकेट के मैदान पर वापसी की, ने हाल ही में एक इंटरव्यू में खुलासा किया कि वह 2019 विश्व कप भी खेलना चाहते थे, लेकिन तब के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने उन्हें बता दिया था कि वो योजनाओं में शामिल नहीं हैं।

इसके अलावा युवराज ने बताया कि 2011 वर्ल्ड कप तक धोनी को उन पर बहुत भरोसा था, लेकिन बाद में चीजें बदल गईं। युवराज सिंह और एमएस धोनी ने भारत के लिए कुछ यादगार साझेदारियां कीं। धोनी ने युवराज की अंशकालिक गेंदबाजी से भी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराया। धोनी के नेतृत्व में युवराज ने 2011 विश्व कप में 15 विकेट लिए थे। 2011 तक भारतीय टीम के अहम सदस्य रहे युवराज को कैंसर से वापसी के बाद उसी प्रदर्शन को दोहराना मुश्किल हो गया।

41 वर्षीय युवराज ने कहा, 2011 विश्व कप तक, एमएस को मुझ पर बहुत भरोसा था और वह मुझसे कहते थे कि 'तुम मेरे मुख्य खिलाड़ी हो'। लेकिन बीमारी से वापस आने के बाद खेल बदल गया और टीम में बहुत सारे बदलाव हुए। जहां तक 2015 विश्व कप का सवाल है, आप वास्तव में किसी चीज पर सटीक इशारा नहीं कर सकते। इसलिए यह एक बहुत ही व्यक्तिगत कॉल है। युवराज ने कहा, रतो मैं समझ गया कि एक कप्तान के रूप में कभी-कभी आप हर चीज को सही नहीं ठहरा सकते क्योंकि दिन के अंत में आपको यह देखना होता है कि देश कैसा प्रदर्शन करता है।

इसके अलावा उन्होंने 2017 में टीम में वापसी की तो तत्कालीन कप्तान विराट कोहली ने उनका समर्थन कैसे किया। युवराज 2019 विश्व कप में खेलना चाहते थे लेकिन उन्हें टीम की ओर से 2017 आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के तुरंत बाद बाहर कर दिया गया। युवराज ने कहा, जब मैंने वापसी की तो विराट कोहली ने मेरा समर्थन किया। अगर उन्होंने मेरा समर्थन नहीं किया होता तो मैं वापसी नहीं कर पाता। लेकिन तब वह धोनी ही थे जिन्होंने मुझे 2019 विश्व कप के बारे में सही तस्वीर दिखाई कि चयनकर्ता आपकी ओर नहीं देख रहे हैं। उसने मुझे असली तस्वीर दिखाई। उसने मुझे स्पष्टता दी। वह जितना कर सकता था उसने उतना किया।